❑ अनुक्रम ❑

अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

वर्ष : 55 ■ अंक 2 ■ 16-30 नवंबर, 2009

❑ पारिवारिक शान्ति का महामंत्र	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
❑ समस्याग्रस्त बाल मनोविज्ञान	*जगवीर सिंह वर्मा*	6
❑ न छीनें बच्चों का बचपन	*द्वारकेश भारद्वाज*	8
❑ बालमन का विस्मय लोक	*पद्मा राजेन्द्र*	9
❑ बच्चों को कैसे बचाएं	*रूपनारायण काबरा*	10
❑ योग्य शिष्य	*महेन्द्र सिंह शेखावत*	11
❑ अन्तिम शिक्षा	*नरेन्द्र देवांगन*	12
❑ मेरी सुशील बिटिया	*प्रो. धर्मपाल मैनी*	13
❑ बच्चों के व्यक्तित्व विकास में खिलौने	*अनिल कुमार*	14
❑ बच्चों में भय	*डॉ. विभा सिंह*	15
❑ लाडनूं अणुव्रत लेखक सम्मेलन	*सत्यनारायण 'सत्य'*	20
❑ बच्चों में संस्कार निर्माण	*अशोक सहजानन्द*	23
❑ निशस्त्रीकरण आवश्यक	*डॉ. सोहनलाल गांधी*	24
❑ आदिवासी क्षेत्र में जीवन विज्ञान के प्रयोग	*भरत भाई शाह*	29
❑ इन बच्चों को इतिहास ने नहीं रखा याद	*रीतेश पुरोहित*	30
❑ बच्चों का चिर-परिचित संसार	*शकुन्तला कालरा*	31

♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

■ ***सदस्यता शुल्क :***

- **एक प्रति :** बारह रु.
- **वार्षिक :** 300 रु.
- **त्रैवार्षिक :** 700 रु.
- **दस वर्षीय :** 2000 रु.

■ ***विज्ञापन सहयोग:***

- **मुख पृष्ठ रंगीन 4 :** 10,000 रु.
- **मुखपृष्ठ रंगीन 2-3 :** 8,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ पूरा :** 3,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ आधा :** 2,000 रु.

■ ***शुल्क भेजने का पता :***

अणुव्रत महासमिति, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)

- **फोन:** 23233345, 23239963
- **फैक्स:** (011) 23239963
- **E-mail :** anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
- **Website :** anuvratinfo.org

■ **स्तंभ**

❑ संपादकीय	2
❑ राष्ट्र चिंतन	16
❑ कविता	9, 17, 18, 19
❑ झाँकी है हिन्दुस्तान की	27
❑ अ. महासमिति कार्यसमिति सूची	32
❑ अणुव्रत आंदोलन	33-39
❑ अध्यक्ष की कलम से	40

www.terapanthinfo.com

तनाव के बोझ तले पलता बचपन

छः वर्ष की कृति अपराह्न एक बजे बाद विद्यालय वाहन से घर लौटती है तो उसका चेहरा तमतमाया और उखड़ा-सा होता है। आते ही जूतों को फेंक, स्कूल बैग को एक तरफ पटक चुपचाप सो जाती है। उस समय उससे बात करना बाल क्रोध को आमंत्रण देना होता है। लगभग 20-30 मिनट विश्राम के उपरांत कृति सहज होती है और तब उसकी मम्मी मान-मनौव्वल करते हुए अपने हाथों से रोटी का एक-एक कोर उसके मुंह में डालती है। अनमने भाव से कृति को दोपहर का भोजन करते देखता हूं तो लगता है कहीं कुछ छूट गया है वरना क्या कारण है कि आज की तेज-तर्रार, बुद्धिमान और जिज्ञासु-वृत्ति वाली बालपीढ़ी जो हमारे से ज्यादा जानकार है। वह इस तरह भोजन के प्रति उदासीन है और धीरे-धीरे चेहरे का तेज खोती जा रही है।

तोते की तरह पाठ रटते बच्चों पर गृहकार्य और पढ़ाई का बोझ इस कदर हावी हो गया है कि वह खौफ में बदल गया है, जिसने उनके चेहरों की प्राकृतिक चमक-दमक और भोलापन छीन उसके स्थान पर तनाव और अवसाद को स्थापित कर दिया है। इस बढ़ते तनाव ने बच्चों की भूख-प्यास भी छीन ली है। समय पर स्कूल जाने और पढ़ाई के चक्कर में बालपीढ़ी धीरे-धीरे भूख खोती जा रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विद्यालय बस पकड़ने या स्कूल समय पर जाने के चक्कर में 35-40 फीसदी बच्चे भूखे पेट स्कूल जाते हैं, तो 40 फीसदी केवल दूध पीकर घर से निकलते हैं और मात्र 20-25 फीसदी बच्चे ही सही तरह से अल्पाहार लेकर स्कूल जा पाते हैं।

प्रतिदिन एक विषय में गृहकार्य मिलने पर कृति की यह स्थिति है तो उन बच्चों की मानसिक स्थिति कैसी होगी जिन्हें एक से अधिक विषयों का गृहकार्य प्रतिदिन करना पड़ता होगा! माता-पिता की महत्वाकांक्षाओं और विद्यालयों की उद्दाम अकड़ कि वह ही बाल शिक्षण का श्रेष्ठ केन्द्र है, ने बालपीढ़ी को अपने नागपाश में इस कदर जकड़ रखा है कि बच्चों का बचपन ही तार-तार हो गया है। बच्चों को भारी भरकम किताबों-उत्तरपुस्तिकाओं से लादना, अंग्रेजी भाषा को रटाना, अत्यधिक गृहकार्य-कक्षाकार्य करवाना, साप्ताहिक-मौखिक-लिखित जांच करना, मानसिक प्रताड़नाएं देना क्या बाल उत्पीड़न के नये रूप नहीं हैं जिससे समूची बालपीढ़ी कुंठा एवं प्रताड़ना झेल रही है। शिक्षा मंत्रालय और शिक्षा बोर्ड बालपीढ़ी की शिक्षा के लिए जो नीति निर्धारित करते हैं उस नीति की तर्ज पर अधिकांशतः स्वयंसेवी-निजी बाल शिक्षण संस्थान संचालित नहीं हो रहे हैं और बाजार में स्वयं को श्रेष्ठ स्थापित करने की हौड़ में स्वयं के नियमों को बलात् लादा जा रहा है। वे अपने निजी लाभ के लिए बचपन को रौंद रहे हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक कक्षाओं के लिए जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी हुई है उसी के अनुसार देश के सभी स्वयंसेवी शिक्षण संस्थान संचालित हों। पूर्व प्राथमिक कक्षाओं को पूरी तरह गृह-कक्षा कार्य से मुक्त रख, तथा इन कक्षाओं को मासिक जांच या परीक्षाओं के भार से छुटकारा दिलाकर इस बीमार होते बचपन को बचा पाएंगे। अच्छी शिक्षा के नाम पर विद्यालयों में प्रवेश साक्षात्कार, गृह-कार्य, परीक्षा, पुस्तकों का बोझ, विदेशी भाषा रूपी तनाव-भय के जो बादल मंडरा रहे हैं उन्हें दूर कर ममत्व व वात्सल्य की छांव बिखेरनी होगी तभी बालपीढ़ी की मुस्कान एवं बचपन सुरक्षित रह पायेगा।

◆ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

परिवार में जितना कलह और संघर्ष होता है, उसका एक प्रमुख कारण है पदार्थ। जो लोग पदार्थ का जीवन जीते हैं, रात-दिन पदार्थ के बारे में सोचते रहते हैं, वहां इनका होना अनिवार्य और अपरिहार्य है। इन्हें टालने का उपाय है, वह है आत्मा का ध्यान। जिसने चेतना का ध्यान किया, उसका पारिवारिक जीवन सुधर गया।

पारिवारिक शान्ति का महामंत्र

• आचार्य महाप्रज्ञ •

एक डॉक्टर ने कहा 'महाराज! मुझमें चंचलता बहुत है और क्रोध भी बहुत आता है।'

मैंने कहा 'चंचलता अधिक है तो क्रोध तो आएगा ही।'

'यह क्यों होता है?'

'चंचलता का मुख्य कारण भीतर की वृत्तियों का दबाव है और क्रोध का मुख्य कारण है अहंकार।'

'महाराज! क्रोध और अहंकार का क्या संबंध है?'

मैंने कहा 'तुम्हारी पत्नी है। तुम उसे कुछ कहते हो और वह नहीं मानती है तब तुम्हारा चिंतन यह होता है मेरी पत्नी मेरी बात नहीं मानती। बस, इस बात से अहंकार इतना फुफकारने लगता है कि क्रोध उभर आता है।'

डॉक्टर बोला 'महाराज! यही होता है, ऐसा ही होता है।'

पारिवारिक झगड़ों में क्रोध की एक मुख्य भूमिका है और क्रोध की पृष्ठभूमि में रहता है अहंकार। जितना प्रबल अहंकार उतना प्रबल आवेश और जितना प्रबल आवेश उतना ही संघर्ष।

पारिवारिक कलह का लोभ भी एक कारण बनता है। दो भाई बंटवारा कर रहे हैं। बंटवारे में थोड़ा इधर-उधर हो गया। पिता ने किसी को अधिक दे दिया, किसी को कम दे दिया। जिसको कम मिलता है, उसका मन आक्रोश से भर जाता है। स्थिति यह बन जाती है जो भाई राम-लक्ष्मण कहलाते थे, वे राम-रावण बन जाते हैं।

क्रोध और लोभ ये दोनों संघर्ष के बड़े कारण बनते हैं। रुचियां अलग-अलग, चिंतन-विचार अलग-अलग, सोचने के भिन्न-भिन्न प्रकार। अपने से भिन्न विचार के प्रति अरुचि पैदा हो गई, अप्रीति पैदा हो गई और समस्या की शुरुआत हो गई।

एक बहिन ने कहा मुझे कुछ उपाय बताओ, मार्गदर्शन दो। वह यह कहते हुए रोने लगी। उसकी दयनीय मुद्रा को मैंने देखा, सचमुच दया आ गई। उसने कहा क्या करूं? घर की इतनी दुःखद स्थिति है। श्वसुर का जैसा व्यवहार है, पति का भी वैसा ही व्यवहार है। बहुत बार इच्छा होती है आत्महत्या करने की।

ऐसा लगता है पारिवारिक जीवन में समस्याएं कम नहीं हैं। यह स्वाभाविक है कि जहां एक से दो हुए, वहां समस्याओं का अनचाहा ढेर लग जाता है। जब घरों में जाते हैं, देखते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कितना बढ़िया मकान है, कितनी साज-सज्जा है, सुख-सुविधा की पर्याप्त सामग्री है। किन्तु जब उनकी समस्या सुनते हैं तब ऐसा लगता है बाहर में जितना आकर्षण है, भीतर में उतना ही क्रंदन है। बाहर से हंस रहे हैं पर भीतर से रो रहे हैं। यह दुःख कहीं बाहर से नहीं आया है, स्वयं आदमी पैदा कर रहा है। कारण स्पष्ट है चित्त की पवित्रता नहीं है।

ध्यान के मुख्य दो परिणाम हैं एकाग्रता और चित्त की निर्मलता। ध्यान से चित्त की मलिनता धुलती है, निर्मलता आती है। जहां निर्मलता होती है वहां झगड़ा नहीं होता। सारे संघर्ष और झगड़े मलिनता में पैदा होते हैं। चंचलता में समस्याएं उलझती हैं। एकाग्रता आती है, समस्याएं सुलझना शुरू हो जाती हैं। जहां मलिनता है वहां समस्याएं हैं। **जहां निर्मलता है वहां समस्याएं मिटती चली जाती हैं। जहां मलिनता है वहां निषेधात्मक भाव ज्यादा होते हैं। जहां विधायक भाव है, वहां झगड़े नहीं होते, कलह नहीं होते, शांतिपूर्ण सहवास होता है। जहां निषेधात्मक विचार है, वहां कलह, संघर्ष और अशांति जन्म लेती है।**

पौराणिक कहानी है एक बार नारदजी जा रहे थे। मित्र ने पूछा 'ऋषिवर! कहां जा रहे हैं?'

'मैं अभी स्वर्ग में जा रहा हूं।'

'स्वर्ग तो मुझे भी दिखा दें। आज सहज मौका मिल गया है। आप मुझे भी ले चलें।'

'अच्छा मित्र! आओ, चलो।'

नारदजी ने मित्र को साथ ले लिया। स्वर्ग में पहुंचने के बाद नारदजी ने कहा 'देखो, यह सामने कल्पवृक्ष है। इसकी छांव में बैठ जाओ। मुझे काम है, मैं दूसरी जगह जाकर आता हूं। तुम यहीं बैठे रहना। तुम्हें कोई भी आवश्यकता हो मांग लेना, उसकी प्रार्थना करना। तुम जो चाहोगे, तुम्हें मिल जाएगा।'

नारदजी निर्देश देकर चले गए। वह व्यक्ति कल्पवृक्ष की छांव में बैठ गया। उसने सोचा भूख लग गई। कितना अच्छा हो, खाने को भोजन मिल जाए। सोचने के साथ ही भोजन तैयार था। उसने भोजन कर लिया, सोचा कितना अच्छा हो कि शय्या मिल जाए, सुखद फूलों की कोमल-कोमल शय्या। वैसे कोमल शय्या काम की नहीं होती, रीढ़ की हड्डी को बिगाड़ने वाली होती है फिर भी बहुत सारे लोग कोमल गद्दों पर सोना चाहते हैं, भले ही रीढ़ की हड्डी की बीमारी को भोगते रहें। जैसे ही उसने सोचा, कोमल-कोमल फूलों की शय्या प्रस्तुत थी। वह सो गया। एक के बाद एक आकांक्षा जागती चली गई। सोचा अब कोई पगचंपी करने वाली अप्सराएं आ जाएं तो बहुत अच्छा हो। सोचने की जरूरत थी, अप्सराएं आईं और पगचंपी करने लग गईं।

सम्पूर्णानंदजी ने लिखा 'खाकर सोता हूं तो पहले कुछ होता हूं और जब कोई पग दबाता है तब सम्पूर्णानंद बन जाता हूं।' वह व्यक्ति सम्पूर्णानंद बन गया।

वह सोचता है बहुत अच्छी पगचंपी हो रही है। इतने में मन में एक विकल्प जागा अरे! मैंने यह क्या कर लिया? अगर घरवाली आ गई तो जरूर मुझे झाड़ू लेकर पीटेगी। बस सोचने की देरी थी, घरवाली हाथ में झाड़ू लिए तैयार थी। उसने झाड़ू से पीटना शुरू किया। वह शय्या से उठा और भागने लगा। आगे वह भागता जा रहा है और पीछे घरवाली दौड़ती चली जा रही है। दौड़ते-दौड़ते बहुत दूर चले गए। रास्ते में नारदजी मिल गए।

नारदजी ने देखा अरे! स्वर्ग में यह क्या नाटक हो रहा है? यह तो वह मेरा मित्र लग रहा है। नारद ने कहा 'अरे! रुको। क्यों दौड़ रहे हो? क्या हुआ?'

'आप देखते नहीं, यह कर्कशा पीछे आ रही है। जहां मौका मिलता है झाड़ू जमा देती है।'

नारदजी ने कहा 'अरे! यहां कहां से आई तुम्हारी पत्नी।'

'ऋषिवर! आपने कहा था जो मुंह से मांगोगे, वह मिल जाएगा। मैंने भोजन की कल्पना की, भोजन मिल गया। शय्या चाही, तो शय्या तैयार। सो गया। मन में आया, कोई पगचंपी करे तो अच्छा रहे। अप्सराएं तैयार थीं। सोते-सोते मन में यह विचार आया अगर पत्नी ने यह देख लिया तो मुझे झाड़ू से पीटेगी। इतने में तो पत्नी भी तैयार और झाड़ू भी तैयार। जब से यह आई है तब से मैं डरकर भाग रहा हूं। मैं आगे और यह मेरे पीछे दौड़ रही है।'

नारद ने कहा 'मूर्ख! स्वर्ग में आ गया, कल्पवृक्ष के नीचे आ गया फिर ऐसा बुरा विचार तुमने किया ही क्यों?'

यह निषेधात्मक विचार नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ता। अनेक व्यक्ति आते हैं और कहते हैं बुरे विचार आते हैं। पता नहीं, कितनी व्यापक बीमारी है। कुछ लोग कहते हैं बार-बार आत्महत्या का विचार आता है। कोई कहता है किसी को मारने का विचार आता है। कोई कहता है यह दुर्घटना करने का विचार आता है। भय, घृणा आदि बुरे विचार बहुत सताते हैं। **यह नकारात्मक दृष्टिकोण, नकारात्मक विचार का भूत पीछे लगा हुआ है। शायद भूत कहीं पीछा भी छोड़ दे पर नकारात्मकता का भूत पीछा नहीं छोड़ रहा है। इस नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलने का, नकारात्मक विचारों से बचने का उपाय है सकारात्मक भावों को पैदा करना, विधायक भावों को उपजाना। विधायक भावों की उत्पत्ति का मुख्य कारण बनता है ध्यान। ध्यान केवल एकाग्रत के लिए नहीं है। ध्यान वह है, जो चित्त की निर्मलता पैदा करे, कषाय-क्रोध, मान, माया, लोभ का अल्पीकरण करे, जिसके द्वारा अपने पुराने संस्कार की निर्जरा हो।**

निर्जरा बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जैन तत्त्व विद्या में नौ तत्त्व बतलाए गए हैं। उसमें दो महत्त्वपूर्ण हैं संवर और निर्जरा। संवर का काम है बाहर से जो गंदगी आ रही है, उसे रोक देना, दरवाजा बंद कर देना। जब-जब आंधियां आती हैं, मकानों के दरवाजे बंद हो जाते हैं, खिड़कियां बंद हो जाती हैं। दरवाजों को बंद कर देना, इसका नाम है संवर। जो भीतर कचरा जमा हुआ है, विजातीय तत्त्व है उसे निकाल देना, उसका शोधन करना, इसका नाम है निर्जरा। सर्दी के मौसम में शीतलहर से बहुत लोग ग्रस्त होते हैं, टाइफाइड भी होता है। टाइफाइड का मुख्य कारण बनता है पेट में जमा हुआ कचरा। प्राकृतिक चिकित्सा की भाषा में कारण है विजातीय तत्त्व। जितना विजातीय तत्त्व जमा हुआ है उतना ही आदमी ज्यादा बीमार पड़ता है। उसकी रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है। टाइफाइड निकलने में पेट की खराबी बहुत ज्यादा कारण बनती है।

हर आदमी के भीतर कर्मों का, संस्कारों का, न जाने कितना विजातीय तत्त्व जमा हुआ है। उसका तब तक शोधन नहीं होगा, जब तक निषेधात्मक विचार आते रहेंगे। बहुत बुरे विचार आते हैं तो समझना चाहिए भीतर में बहुत कचरा जमा हुआ है, जुलाब लेने की जरूरत है, पेट की सफाई करने की जरूरत है, रेचन-विरेचन की जरूरत है। उसके बिना बुरे विचारों का आना बंद नहीं होगा। विरेचन करने के लिए ध्यान करना बहुत जरूरी है। ध्यान के द्वारा कर्मों की विरेचना होती हैं। बहुत तेज निर्जरा होती है ध्यान के द्वारा। ध्यान एक ऐसी अग्नि है, जो कर्म को जला डालती है। गीता में ज्ञान को अग्नि माना गया *ज्ञानाग्निदग्धकर्माणः तमाहुः पण्डितं बुधाः।* ज्ञानी मनुष्य ज्ञान की अग्नि से कर्मों को दग्ध कर देता है, जला

देता है। ध्यान ज्ञान से अधिक शक्तिशाली है। ज्ञान में फिर भी थोड़ी चंचलता रहती है किन्तु ध्यान में तो बिल्कुल एकाग्रता की स्थिति बन जाती है। चेतना का ध्यान, अपनी आत्मा का ध्यान मलिनता पैदा करने वाला ध्यान नहीं है। यह निर्मलता, ज्योति और प्रकाश का ध्यान है।

जो व्यक्ति आत्मा का ध्यान करता है, उसका चित्त निर्मल बन जाता है। व्यक्ति इस बात को लेकर ध्यान में बैठ जाए मैं चैतन्यमय हूं, रोग और द्वेष करना मेरा स्वभाव नहीं है, प्रियता और अप्रियता मेरा स्वभाव नहीं है, लड़ाई करना मेरा स्वभाव नहीं है। मैं केवल ज्ञाता-द्रष्टा हूं। जिस व्यक्ति ने इस प्रकार अपने स्वभाव पर ध्यान करना शुरू कर दिया, उसके मन में बुरे विचार नहीं आते। बुरा विचार आने का रास्ता बंद हो जाता है। जो आत्मा का ध्यान नहीं करता, अपनी चेतना का ध्यान नहीं करता, रात-दिन सोते-उठते प्रिय-अप्रिय विचारों में उलझा रहता है, उसे बुरे विचार नहीं आएंगे तो और क्या आएगा? यह निश्चित मानें जिस व्यक्ति में निरंतर पदार्थ की लालसा, सब कुछ पा लेने की भावना, ऐशो-आराम की भावना, नशे की वृत्ति है, वहां नकारात्मक विचारों का आना अवश्यंभावी है।

हमने ऐसे हजारों-हजार व्यक्तियों को देखा है जिनके पास सब कुछ है पर उनके जीवन में सुख नहीं है, शांति नहीं है। वे बिल्कुल बुरे विचारों से दबे हुए हैं। कोई आत्महत्या की बात सोचता है, कोई घर से भाग जाने की बात सोचता है और कोई परहत्या की बात सोचता है। कोई किसी को लेकर भाग रहा है और कोई किसी के पीछे पड़ रहा है। यह सब क्यों हो रहा है? पदार्थ-परक दृष्टिकोण बनेगा तो बुरा विचार अवश्य आएगा।

पदार्थ-परकता और बुराई में गहरा संबंध है। जो व्यक्ति इन बुरे विचारों से अपने आपको बचाना चाहता है, उसके लिए निर्जरा करना बहुत आवश्यक है। पारिवारिक जीवन में जो बहुत सारे झगड़े चलते हैं, उनका कारण यही पदार्थ-परकता बनती है। उसने वह चीज उसे दे दी और मुझे नहीं दी। अपने लड़के को नहीं दिया, दूसरों के लड़कों को मिल गया। ये सारी पदार्थ से जुड़ी बातें सुखद पारिवारिक जीवन को दुःखमय बना देती है।

पिता और पुत्र भोजन कर रहे थे। इतने में जोरदार आवाज हुई पिता ने कहा 'कोई बर्तन फूटा है।'

पुत्र बोला 'हां, कोई कांच का बर्तन फूटा है और मेरी मां के हाथ से फूटा है।'

यह सुनते ही पिता को आवेश आ गया 'तेरी क्या आदत पड़ गई है। हमेशा अपनी मां की बुराई देखता है।'

'पिताजी! मैं ठीक कह रहा हूं।'

'जाओ, पहले पता करके आओ।'

लड़का भीतर गया और सारी स्थिति जानकर बाहर आया, बोला 'पिताजी! मां कांच का बर्तन ला रही थी। वह मां के हाथ से गिरा और गिरते ही फूट गया। मां स्वयं यह बता रही थी।'

'बिना देखे तुम्हें पता कैसे चला?' पिता का आवेश विस्मय में बदल गया।

'अरे! इसमें आश्चर्य की क्या बात है? यह तो बिल्कुल साधारण बात है। मां के हाथ से फूटा और एक मिनट में आवाज बंद हो गई। अगर मेरी पत्नी के हाथ से फूटता तो घंटा भर तक वह आवाज बंद ही नहीं होती। उस टंकार के साथ झंकार भी होता रहता।'

बर्तन फूटने की टंकार तो एक मिनट में ही बंद हो जाती है किन्तु जो गालियां देने की झंकार है, वह घंटों तक चलती रहती है। यह सारा क्यों होता है? इसमें पदार्थ ही निमित्त बनता है। बड़े के हाथ से फूट जाए तो छोटा चुप रह जाए और छोटे के हाथ से फूट जाए तो बड़े की झंकार कभी बंद नहीं होती। पदार्थ जगत् में ये सारे झगड़े पैदा होते हैं।

हम इस सचाई को जान लें परिवार में जितना कलह और संघर्ष होता है, उसका एक प्रमुख कारण है पदार्थ। जो लोग पदार्थ का जीवन जीते हैं, रात-दिन पदार्थ के बारे में सोचते रहते हैं, वहां इनका होना अनिवार्य और अपरिहार्य है। इन्हें टालने का उपाय है, वह है आत्मा का ध्यान। जिसने चेतना का ध्यान किया, उसका पारिवारिक जीवन सुधर गया।

जैन साहित्य की एक प्रसिद्ध कथा है अतुंकारी भट्टा। जब तक वह पदार्थ के प्रति प्रतिबद्ध रही, घर से निकाल दी गई, लोग उठाकर ले गए। खून निकाला गया। उसने बहुत पीड़ा का अनुभव किया। क्रोध के कारण, अशांति के कारण असह्य दुःख भोगा, जब उसे भान हुआ, वह संभल गई। पदार्थ से हटकर आत्मा की स्थिति में आ गई। पारिवारिक जीवन सुखद बन गया। वह शांति और क्षमा की मूर्ति बन गई। कहा जाता है देवता उसे विचलित करने आया फिर भी वह विचलित नहीं हुई। उसके जीवन का एक चित्र यह था यदि उसे कोई तुंकारा दे दे तो वह उसका सिर फोड़ देती और एक चित्र यह बना-वह सचमुच अतुंकारी बन गई। उसे तुंकारा देने वाला मिला ही नहीं।

हम आत्मा का ध्यान करें, आत्मा के बारे में सोचें मैं जड़ नहीं हूं, मैं पैसा नहीं हूं, मैं मकान नहीं हूं, मैं कपड़ा नहीं हूं, मैं आत्मा हूं। जैसे ही यह दृष्टिकोण बनेगा, जीवन का क्रम बदल जाएगा, सुख और शांति का स्रोत फूट पड़ेगा। जब तक यह दृष्टिकोण नहीं आएगा तब तक अशांति और दुःख का जीवन बना रहेगा।

दोनों बातें हमारे सामने स्पष्ट हैं। एक ओर पारिवारिक जीवन की समस्याएं हैं और वे समस्याएं पदार्थपरक दृष्टिकोण के द्वारा उत्पन्न हुई हैं। उन्हें भोगना पड़ेगा, चाहे व्यक्ति कितना ही बड़ा बन जाए। जो व्यक्ति पदार्थ जगत् से हटकर आत्मा के जगत् में थोड़ा-सा भी प्रवेश पा गया, उसने अपने लिए सुख और शांति का मार्ग खोज लिया। ये दो रास्ते हैं, आप जिसे चाहें उसे स्वीकार करें। शांतिकामी कभी इस सचाई की उपेक्षा नहीं कर सकता। पदार्थाभिमुखता से आत्माभिमुखता की ओर प्रस्थान करना ही पारिवारिक शांति का महामंत्र है।

कौन बच्चा अपना खिलौना तोड़कर खुश हो सकता है? वास्तव में यदि यह तथ्य बच्चों को हृदयंगम कराया जाये, स्नेह पूर्वक उन्हें सीख दी जाये, उनकी भूलों तथा शंकाओं का ठीक प्रकार से समाधान किया जाये तो यह असंभव है कि वे आपकी बातों पर अमल न करें।

बदलते सामाजिक संदर्भ और समस्याग्रस्त बाल मनोविज्ञान

● जगवीर सिंह वर्मा ●

बाल मनोविज्ञान के निष्णात ज्ञाता तथा पश्चिमी विचारक डॉ. टिब्बन का कथन है कि जब तक हम जीवन के बदलते संदर्भों के प्रकाश में बच्चों के मानसिक जगत का विश्लेषण नहीं करते, तब तक उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक विकास प्रक्रिया का युक्ति-युक्त विवेचन करना संभव नहीं है।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि बच्चे न केवल राष्ट्र की प्रगति और उत्थान का, उसके निर्माण और विकास का मूल आधार हैं, बल्कि एक सुनहरे भविष्य की अमानत भी हैं। वे भविष्य के प्रणेता ही नहीं, वर्तमान का साहस और शक्ति भी है। यदि समाज उन्हें उचित सुविधाएं व अवसर देता है, वे युग सापेक्ष शिक्षा को ग्रहण करते हैं और ज्ञान विज्ञान का प्रकाश जीवन के प्रथम चरण में ही उन्हें सहज उपलब्ध हो जाता है, तो निश्चय ही वे आने वाले युग के बलशाली राष्ट्र निर्माता सिद्ध होंगे।

बाल्यावस्था में बच्चे चार मूलभूत भावों के अंतर्गत आते हैं

1. जिज्ञासा अर्थात वस्तु परिचय की उत्कृष्ट इच्छा।
2. क्रोध, पराजय भाव तथा उससे उत्पन्न ग्लानि।
3. स्नेह और प्यार की भावना।
4. घृणा तथा दृढ़ भावना।

पांच साल से बारह साल तक के बच्चे का मानस जगत अत्यन्त सीमित होता है। वह इस ब्रह्माण्ड को चकित भाव से देखता है। घर-बाहर, माता-पिता, बड़े भाई-बहन, धरती, आकाश, सूरज, चांद-सितारे, कीट-पतंगें, पक्षी आदि न जाने कितनी वस्तुएं तथा व्यक्ति उसकी आंखों के सामने होते हैं। उसका चेतन और अचेतन मस्तिष्क प्रतिपल इन वस्तुओं के बारे में सोचता रहता है। तारे क्यों टूटते हैं? रात को सूरज कहां चला जाता है? चांद क्या है? उसमें इतनी शीतलता क्यों है? बड़े बहन-भाई को मां क्यों नहीं पीटती? ऐसे अनेक सवाल उसके दिमाग में कुलबुलाते रहते हैं। यही वह उपयुक्त तथा उचित समय होता है जब उसकी जिज्ञासाओं को युक्ति संगत ढंग से शांत किया जाना चाहिए। लेकिन प्रायः होता यह है कि अभिभावक बच्चे की जिज्ञासा का शमन करने के स्थान पर उसे टालते या उपटते हैं। यदि शांत करने की कोशिश करते भी हैं तो उसके संतुष्ट होने की चिंता नहीं करते। उनके जवाब होते हैं सूरज शाम होते ही घोड़ों के रथ पर बैठकर चला जाता है, चांद घट से बाहर आसमान में निकलता है, वह मामा है, तारे भगवान की गंगा है, इत्यादि। आज हमें बच्चों को यह नहीं बताना है कि चांद में एक बुढ़िया बैठी चरखा कात रही है, बल्कि यह बताना है कि चांद तारे भी हमारी धरती की भांति 'उपग्रह' हैं और उन पर तीव्र गति वाले रॉकेट द्वारा पहुंचा जा सकता है। हमारी धरती घूम रही है और इसके दिशा परिवर्तन के फलस्वरूप दिन और रात होते हैं : सूरज केवल देवता ही नहीं है, बल्कि आग का जलता गोला है, जो धीरे-धीरे ठंडा हो रहा है, और उस स्थिति विशेष तक पहुंचने में करोड़ों-अरबों वर्ष लगेंगे और यह कि वह प्राणीमात्र के जीवन को संचालित रखता है।

यह एक कड़वी सच्चाई है कि पांच से बारह वर्ष की आयु का पश्चिमी मुल्कों का बालक विज्ञान सम्बन्धी वैसी जानकारी रखता है, जबकि हमारे यहां बड़ों को राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कौन है, अधिकांश को जानकरी नहीं होती। वह नहीं जानता कि अंतरिक्ष की सर्वप्रथम यात्रा करने वाला रूस का गागरिन था। इसी से हमारे बालक पश्चिमी देशों के बालकों से पिछड़ जाते हैं। हमारे देश में तो शिक्षित माँ-बाप भी ऐसी प्ररम्भिक जानकारी से अनभिज्ञ पाए जाते हैं। यह अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। परिणाम स्वरूप हमारे बच्चों का मानसिक विकास सम्पूर्ण रूप से नहीं हो पाता और इस प्रतियोगिता (प्रतिस्पर्धा) के युग में हम प्रगतिशील देशों से पिछड़ जाते हैं।

स्नेह का सीधा सम्बन्ध वात्सल्य से और प्यार का यौन भावना से है। ये दोनों धाराएं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से बच्चे के बौद्धिक जगत, आचरण क्रिया-कलापों तथा उसकी चिंतन-प्रक्रिया को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। जिन बच्चों के प्रति माता-पिता का व्यवहार स्नेहपूर्ण होता है तथा जो उनकी भूलों को स्नेह से सुधारने का प्रयास करते हैं, वे बच्चे न सिर्फ वस्तु परिचय में तीक्ष्ण बुद्धि का प्रमाण देते हैं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास की भावना भी पैदा होती है। **शीशे का गिलास अथवा चीनी का प्याला तोड़ देने पर कठोर व्यवहार, अपशब्दों का प्रयोग अथवा मारपीट से बच्चे को नहीं सुधारा जा सकता, उसे डांटे नहीं, बल्कि समझाएं कि निर्माण और विध्वंस में अंतर है। उसे बताएं कि तोड़फोड़ और हिंसा बड़े-बड़े युद्धों के रूप में बदल जाती है।** प्रसिद्ध मानस शास्त्री मायक पियर्स का

कहना है कौन बच्चा अपना खिलौना तोड़कर खुश हो सकता है? वास्तव में यदि यह तथ्य बच्चों को हृदयंगम कराया जाये, स्नेह पूर्वक उन्हें सीख दी जाये, उनकी भूलों तथा शंकाओं का ठीक प्रकार से समाधान किया जाये तो यह असंभव है कि वे आपकी बातों पर अमल न करें।

इसी से संबंधित है प्यार की भावना। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड का कहना है कि मनुष्य के प्रौढ़ जीवन की अनेक विकृतियों, असाधारणताओं तथा असंगतियों का मूल उसके प्रथम कुछेक वर्षों के संघर्ष में है। यह वह अवस्था है जिसमें मनुष्य जीवन की आधारशिला रखी जाती है। यदि इस समय उसकी गति को स्वाभाविक और उचित प्रवाह मिलता रहा तो भविष्य में एक सुसंगठित व्यक्तित्व, सम्पन्न मानव की आशा बंध सकती है। लेकिन विपरीत अवस्था में उसकी भावनाएं दमित होकर अचेतन अवस्था में चली जाती हैं तो वहां ग्रंथियां बनने लगती हैं। ये ग्रंथियां ही भविष्य के जीवन सूत्र संचालन को एक अलक्ष्य गति से नियंत्रित करती हैं। वास्तव में बाल्यावस्था से ही जानकारी देनी चाहिए। शिशु के यह पूछने पर कि बच्चे कहां से आते हैं, हम उसे टालने की गरज से ऊट-पटांग जवाब देते हैं, जैसे भगवान के घर से! भगवान का घर कहां है? पूछने पर कह देते हैं आसमान में! इस तरह हम उसे मानसिक कुंठाओं में ढकेलते हैं।

विख्यात फ्रायडवादी केलीन ने फ्रायड के काम-मूलक सिद्धांतों के आधार पर अपने लड़के प्रिंटिज का इस ढंग से पालन किया कि वह दूसरे वर्ष बोलने लगा, तीसरे वर्ष में उसका उच्चारण ठीक हो गया, चौथे वर्ष में रंगों के भेदों को समझने लगा और साढ़े चार साल में बीते कल, आज और आगामी काल का भेद भलीभांति समझ गया। पांच वर्ष की अवस्था तक उसमें ऐसा आत्मविश्वास जाग उठा कि वह महसूस करने लगा कि संसार में कोई ऐसी कला या कारीगिरी नहीं जिसे वह नहीं कर सकता। इन सब बातों का परिणाम था कि आरंभ से ही उसके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर युक्तियुक्त ढंग से दिया गया और उसे यौन शिक्षा प्रदान की गयी।

क्रोध, पराजय और ग्लानि : सुप्रसिद्ध समालोचक तथा विचारक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्रोध को आंधी-तूफान की संज्ञा दी है। जब आंधी चलती है तो कुछ सुनाई नहीं देता और थमने पर तिनके बिखर जाते हैं, बच्चा पढ़ता नहीं, पढ़ता है तो याद नहीं रख पाता, मां-बाप से उल्टे-सीधे प्रश्न करता है तो डांट पड़ती है। विरोध करता है तो शारीरिक दंड सहना पड़ता है। तब उसके मस्तिष्क के सैकड़ों 'सैल' एकाएक भड़क कर बुझ जाते हैं, जो उसे कुंठित बना देते हैं। आत्मविश्वास और आत्म गौरव की भावना पैदा ही नहीं हो पाती। भीतरी कुढ़न से आत्मग्लानि का प्रादुर्भाव होता है और बच्चे की विकास- शक्तियां मंद पड़ जाती हैं। देखा गया है कि जिन बच्चों को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा, वे उचित साधनों के रहते हुए भी मंदमति ही रहे। **अतएव बच्चों के स्वतंत्र विकास के लिए जरूरी है कि वे कम जानते हैं और उन्हें अधिक सीखना है और वे सीख सकते हैं।** प्रख्यात अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ ने बच्चों को मनुष्य का पिता बताया है और स्कूल में उन्हें मार-पीट कर शिक्षा देने का विरोध किया है।

क्या किसी निपुण वैज्ञानिक ने कभी किसी छात्र वैज्ञानिक को अपमानित करके कुछ सिखाया है। निश्चय ही इसका जवाब इंकार में मिलेगा। प्रबुद्ध व्यक्ति सदा तर्क की रोशनी में जगत के रहस्यों का विवेचन करता हुआ जीवन सत्यों की खोज करता है। अतएव यह आवश्यक है कि हम इस न्याय दर्शन की तर्क पद्धति को अपनाते हुए बच्चों के बिखरे मानसिक जगत का गठन करें। हमें अपने विकसित ज्ञान से बच्चों की सीमित जानकारी को नहीं परखना है। हमें अपना उच्च बौद्धिक स्तर उन पर नहीं लादना-थोपना है, बल्कि उन्हें सहज तथा स्वाभाविक ढंग से विकसित करना है। बच्चों के प्रति हमारा व्यवहार, आचरण तथा दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिए जैसे हम फूल की पत्ती से हीरे को काट रहे हों।

घृणा और हठ : विख्यात अमेरिकी चिंतक स्पेंसर के मतानुसार घृणा का मूलभूत कारण आर्थिक विषमता, अंधविश्वास, सामाजिक उत्पीड़न तथा मानसिक विपन्नता है। इसलिए गांधीजी ने रामराज्य की जो व्याख्या की थी, उसका मूल तत्त्व पारस्परिक सहयोग बताया था ताकि एक विशुद्ध वर्गहीन समाज का निर्माण किया जा सके। अतएव बच्चों के प्रति मां-बाप का घृणित व्यवहार इसी सामाजिक कुव्यवस्था का परिणाम है जो उनके व्यवहार को परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। अभिभावकों के आचरण से हरगिज इस बात की गंध नहीं आनी चाहिए कि वह घृणा से युक्त है। बच्चा सदा इस प्रवृत्ति का मुकाबला जिद्द से करता है और दिन-प्रतिदिन हठी स्वभाव का बनता जाता है।

प्रायः देखा गया है कि समाज तथा परम्पराओं द्वारा पीड़ित व्यक्ति अपनी आक्रोश भावना को मित्रों, संबंधियों तथा बच्चों के प्रति घृणा के रूप में व्यक्त करता है। उसका पीड़ित चेतन जगत अवचेतन रूप से दूसरों के प्रति क्रूर व्यवहार में सुख की तलाश करता है। चूंकि बच्चे हमारे समीप होते हैं इसलिए अधिकतर इस भावना का निशाना बनते हैं। नतीजा यह होता है कि वे स्वार्थी, झूठे, झगड़ालू, उच्छृंखल तथा जिद्दी बन जाते हैं। इसका एकमात्र उपचार मानसिक विपन्नता को खत्म करने और स्वस्थ दृष्टि अपनाने से ही संभव है।

आधुनिक मानव धरती से ऊंचा उठकर चांद तारों पर बस्ती बनाने की सोच रहा है और हम अभी तक धरती पर रहना भी पूरी तरह नहीं सीख पाए हैं। आज का युवक आपसी झगड़ों, सामाजिक कुरीतियों, भाषा तथा दलगत फसादों में उलझता जा रहा है। यही वजह है कि आज हमारे बच्चे पश्चिमी बालक की सी रीति-नीति, विज्ञान की जानकारी तथा तीखी सूझ-बूझ में पीछे हैं। यदि हमें आगे बढ़ना है, राजनीति कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान में उच्च स्तरीय लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो हमें बच्चों को युग सापेक्ष शिक्षा देनी होगी। इसी में राष्ट्र का कल्याण निहित है।

लाओत्से राम चैतन्य भवन, ग्राम व पोस्ट : बिसारा, अलीगढ़ (उ.प्र.)

न छीनें बच्चों का बचपन

● द्वारकेश भारद्वाज ●

क्या कभी हमने अपने बच्चे की दिनचर्या पर गौर किया है? यदि नहीं तो गौर करके देखिये तो सही, क्या हमारा बच्चा अति व्यस्त रहने लगा है? व्यस्तता का कारण है कि उसके खेलने कूदने में अपने हम उम्र बालकों से मिलने-जुलने का तो वक्त है ही नहीं। इससे बच्चे के विकास को क्षति वह भी अपूर्णीय हो रही है। यद्यपि सभी अभिभावक अपने बच्चों को अच्छी परवरिश, अच्छी शिक्षा, अच्छा माहौल यानि सबकुछ अच्छा देना चाहते हैं। इसी चाहत के चक्कर में प्रायः माता-पिता अनजाने में जरूरत से ज्यादा बच्चे को बोझिल बना देते हैं। यद्यपि उनका इरादा गलत तो नहीं होता जो भी होता है वह उनकी महत्वाकांक्षी इच्छाओं व भावी उम्मीदों पर आधारित होता है। अपनी चाहत पूरी करने के चक्कर में अनजाने में बच्चे पर जरूरत से ज्यादा बोझ डाल देते हैं। जो उनकी इच्छाओं की पूर्ति हेतु होता है।

बच्चों के ऊपर स्कूल की कई साहित्यिक, सांस्कृतिक, रचनात्मक, खेलकूद आदि कई गतिविधियों में भी भाग लेना होता ही नहीं दबाव बना रहता है और भाग लेने से ज्यादा गलाकाट प्रतिस्पर्धा के कारण उनमें सफल होने का। ऐसे में कई बार तो बच्चे इनमें भाग लेकर आनन्दित होते हैं लेकिन प्रायः वे मानसिक व शारीरिक रूप से अप्रगट थकान से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में अभिभावक भी चिंतित होते हैं। नींद पूरी न होने व थकानग्रस्त होने से बच्चों में तनाव की स्थिति हो जाती है। जिसके कारण अनेक शारीरिक व मानसिक व्याधियां होना स्वाभाविक है।

प्रायः अभिभावकों में सोच होती है कि बच्चों की सह-शैक्षिक यानि पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों में भाग लेने व उनमें रचे-पचे रहने से सामान्य स्थितियों के बजाय मानसिक विकास बेहतर होगा। बच्चों के साथ खेलने कूदने, गपशप करने, घूमने-फिरने व सामुदायिक जीवन बिताने की बजाय सह-शैक्षिक प्रवृत्तियों के माहौल में ज्यादा ज्ञानार्जन व व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त होने की ज्यादा संभावनाएं होती हैं। और बालक में ज्यादा रचनात्मकता आयेगी। लेकिन यह नैसर्गिक रूप से विकसित होने की स्थिति नहीं है। बच्चों को साथ घुमाने व सैर-सपाटे के लिए ले जायें, हम-उम्र वाले संगी-साथियों के साथ खेलने की छूट दें, हो सके तो कुछ काम फुरसत के क्षणों के उपयोग की दृष्टि से करने की बालक को उसकी इच्छा के अनुरूप करने दें, गाने सुनने की आदत डालें। इस तरह की **मुक्त गतिविधियों में भाग लेने व सामुदायिक सहवास से बालक का स्वतः ही शारीरिक व मानसिक विकास होगा यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। इस प्रकार वे अपनी पसन्द व नापसंद भी विकसित कर पायेंगे। स्वयं को व्यस्त रखकर व अपना मेल-जोल का सामाजिक दायरा बढ़ाकर वे शुकून प्राप्त करेंगे। बालकों द्वारा अपनी सोच से विकसित की गई गतिविधियों से अभिभावकों को भी उनकी समझ व विकास की दिशा को समझने का अवसर मिलेगा। बिना खेल के बचपन ही नहीं होता।** विज्ञान व मनोविज्ञान ने इस बारे में कई तथ्यात्मक शोध भी कर डाले हैं। जिससे यह तथ्य निकलकर आये हैं कि जिनका सामाजिक दायरा विस्तृत होता है ये खुशहाल व दीर्घ जीवन जीते हैं।

इन्सान की चाहे कितनी भी लम्बी आयु हो जाये उसमें बचपन की-सी जीजिविषा बनी रहनी चाहिए। लेकिन कम-से-कम बच्चों का बचपन तो अपनी इच्छा थोपकर न छीनें। बड़े होकर तो उसे कई प्रकार की सामाजिक व व्यावहारिक उत्तरदायित्वों को वहन करना पड़ेगा। आप कम से कम उस पर अपरोक्ष या परोक्ष रूप से अपनी इच्छाओं का बलात् बोझ डालकर अपरोक्ष व अदृश्य हिंसा का शिकार बना बालक के बचपन को पेचिदा न बनायें। ताकि वह अपनी जिंदगी को समझने का अवसर प्राप्त कर सके। यदि आज सबसे ज्यादा अपरोक्ष हिंसा से ग्रस्त हैं तो बालक ही हैं।

बी–68, हवेली ज्ञान द्वार, सेठी कालोनी,
जयपुर – 302004

बालमन का विस्मय लोक

● पद्मा राजेन्द्र ●

मैं अपने बेटे के साथ बगीचे में टहल रहा थी कि अचानक उसने सवाल किया 'मम्मी वृक्ष हरे क्यों हैं? बगीचे की ताजगी की ही तरह एकदम ताजा सवाल! लेकिन मैं हतप्रभ! क्योंकि मुझे इस सवाल का उत्तर नहीं पता? मैंने अपने को समझाया कि मैं विज्ञान की विद्यार्थी नहीं हूं इसलिए मुझे नहीं पता, पर मैंने कहीं पढ़ा था कि क्लोरोफिल के कारण परन्तु क्लोरोफिल क्या है? क्यों है? वृक्ष में उसकी क्या जरूरत है यह सब मैं नहीं जानती। मैंने उसे बैंच पर बैठने के लिए कहा व हरी ताजी मटर उसके सामने रख दी। अचानक किसी मटर में 'इल्ली' देख उसका कौतूहल फिर जागा, ''मम्मी मटर तो पूरी पैक है फिर इसके अंदर 'इल्ली' कैसे घुसी होगी? कृपया बताओ ना?

लेकिन मैं वैज्ञानिक तो हूं नहीं, बस पढ़ना-लिखना और कुछ गढ़ना। मेरे पास संचेतना थी सौंदर्य की और उन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कलम। पर मैं निराश थी क्योंकि मैं नहीं जानती थी।

बच्चों में कौतूहल की भरमार होती है हर चीज उन्हें चौंकाती है उनके विस्मय को बढ़ाती है। पक्षियों की चहचहाट, हवाओं का वृक्षों के साथ खेलना, झरनों का शोर गुल, जुगनू की चमक जिसे वो आग समझते हैं। तितलियों के आकर्षक रंग, बादल की बनती-बिगड़ती आकृतियां और चांद का अपने साथ-साथ चलना उन्हें हैरानी में डाल देता है तो उनके रुकते ही चांद भी रुक गया यह देख वे अवाक रह जाते हैं। तो इंद्रधनुष के बनते-बिगड़ते रंग देख वह आह्लादित हो जाते हैं। उनकी जिज्ञासा ही उन्हें जीवंत बनाती है व हमारे भीतर जहां-जहां जीवन के स्रोत सूख गए हैं, उन्हें हरियाली दिखाती है।

परन्तु उनके प्रश्न अभी तो नाखून काटे थे बार-बार क्यों काटने पड़ते हैं? ऐसे सवालों का जवाब क्या है? उसने पूछा और आपने कुछ भी जवाब दे दिया, अगर आपने जवाब नहीं दिया तो वह आपको कुछ नहीं आना समझेगा। यह सोच कर उसे कुछ भी जवाब मत दीजिये। 'क्योंकि बच्चा एक न एक दिन जान जाएगा कि आपको कुछ पता नहीं था।' **बच्चे के भरोसे को मत तोड़िये। उसके विस्मय का लोक विशाल है उसे कौतूहल करने दीजिये, उसकी जिज्ञासा को और जगाइये** उसे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं मिल रहा है तो 'शब्द कोश' में देखो कहकर पल्ला मत झाड़िये, बल्कि 'शब्द कोश' लाओ अपन ढूंढते हैं कहकर उसका मनोबल बढ़ाएंगे तो हमारे भीतर जहां-जहां जीवन के स्रोत सूख गए हैं फिर से हरे हो जाएंगे। यह जान लीजिए कि जिस दिन बच्चे का विस्मय, कौतूहल नष्ट हुआ उसी दिन उसका बाल हृदय मर गया।

'जलसा', 24, अनुराग नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स के पीछे, ए.वी. रोड इंदौर–452008 (म.प्र.)

एक (क्रमिक)

दिव्य–ज्योति : महाप्रज्ञ

सांस-सांस में सुमिरन कर,
जो मन अरिहंत हुआ है!
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह का,
क्षण में अंत हुआ है!
चरण धूलि, जिनकी पड़ने से
सुरभित पंथ हुआ है,
मानवता की माथे का चंदन
इक संत हुआ है।
ज्ञान ज्योति का जहां, हमेशा दिव्य यज्ञ होता है।
जो जीवन का अर्थ समझते, महाप्रज्ञ होता है।

● इकराम राजस्थानी ●
आई.आर. एन्कलेव-63, सुभाष नगर, शास्त्री नगर, जयपुर-16 (राज.)

नन्हें-नन्हें बच्चों को जबरदस्ती सुबह मीठी नींद से उठाया जाता है, कपड़े पहनाए जाते हैं और टाई आदि से कस-कसाकर स्कूल भेजा जाता है। ज्यों-ज्यों बच्चा बड़ा होता है, उसके बस्ते का बोझ उसके ढोने की क्षमता से कहीं ज्यादा बढ़ता जाता है।

बच्चों को कैसे बचाएं

● रूपनारायण काबरा ●

किसी भी फूल को अपने सुंदरतम रूप में विकसित होने के लिए अच्छा वातावरण, अच्छा पोषण, प्यार-दुलार, देखभाल एवं दिशा-निर्देश यानी कुशल माली का सहयोग आवश्यक होता है। बीज अच्छा होते हुए भी इनमें से किसी एक के अभाव में उस पौधे का और उस फूल का सही विकास नहीं हो पाता है। वह या तो खिलने से पूर्व ही, असमय मुरझा जाता है, या फिर उसका अपना सहज स्वाभाविक स्वरूप विकसित न होकर कुछ विकृत, बौना और कुछ विचित्र ही स्वरूप सामने आता है। यह हम प्रकृति में भी और अपने घरों में भी (बच्चों के प्रति) देखते हैं और महसूस करते हैं, फिर भी फूलों का असमय मुरझाना बदस्तूर जारी है।

लगभग 16 वर्ष पूर्व, संभवतः पहली बार राज्यसभा में प्रश्न उठाया था आर. के. नारायण ने, कि हमें बच्चों के बचपन पर ध्यान देना है। बच्चे पर हमारे तथाकथित अधिक ध्यान ने बच्चों का जितना नुकसान किया है, उतना तो उनकी उपेक्षा भी नहीं करती। हमारे इस अधिक ध्यान के बोझ के नीचे बच्चे पिसते जा रहे हैं। तभी तो उन्हें अबोध शैशवकाल से ही कसे-कसाए रहना पड़ता है। उन्हें हमारे ही नियमों के अनुसार चलना पड़ता है, उठना-बैठना भी हमारे ही इशारों पर। हमारे निर्देशानुसार ही पहनना पड़ता है तथा हमारी महत्वाकांक्षा के अनुसार ही बनना पड़ता है, गुलाब को हजारा और हजारे को गुलाब बनना पड़ता है। सारे स्कूल एक यातना-गृह से ही हैं। आजकल तो यातनाएं शिशुशाला या नर्सरी वगैरह से ही प्रारंभ हो जाती हैं, नन्हें-नन्हें बच्चों को सुबह जबरदस्ती मीठी नींद से उठाया जाता है, कपड़े पहनाए जाते हैं और टाई आदि से कस-कसाकर स्कूल भेजा जाता है। ज्यों-ज्यों बच्चा बड़ा होता है, उसके बस्ते का बोझ उसके ढोने की क्षमता से कहीं ज्यादा बढ़ता जाता है।

एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल के कक्षा चौथी के एक बालक को स्कूल से लौटते वक्त दोपहर के एक बजे सड़क पर अपने बस्ते के भार से लंगड़ाकर चलते देखा तो मैंने कहा, 'बेटे, बस्ता बहुत भारी है'? 'हां, अंकल'। मैंने कहा, 'थोड़ी दूर मैं ले लूं?' बच्चे ने कुछ आना-कानी की लेकिन, बस्ता मुझे दे दिया, साथ ही यह भी कहा, 'यह तो रोज की ही मुसीबत है, अंकल!' बालक के कथन में दर्द था।

आज प्रतियोगिता के युग में हर महत्वाकांक्षी पिता बच्चों को ऐसे स्कूल में प्रवेश दिलाता है जिसका बस्ता भारी हो। अभिभावक व विद्यालय दोनों ही बच्चे से बेखबर हैं। एक को अपनी महत्वाकांक्षा की पड़ी है और दूसरे को अपनी अर्थपूर्ति की। ऐसे में शिकार होता है बेचारा बालक। अभिभावकों की निगाह में वही स्कूल अच्छा है जिसका बस्ता भारी हो और जहां का छात्र काम के बोझ तले इतना दबा रहे कि न तो काम ही पूरा हो सके और न ही वह खेल सके।

यह एक विडंबना है कि समाज के दो महत्वपूर्ण व्यक्ति शिक्षक और डॉक्टर जिन्हें सबसे अधिक संवेदनशील, और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। वही, क्रूर, कठोर और लालची होते जा रहे हैं। कक्षा पांच तक तो बच्चों को बुरी तरह दबाया और सताया जाता है, पीटा जाता है अनुशासन के नाम पर पीरियड के दौरान पानी-पेशाब की छुट्टी भी नहीं देते, हंसने-बोलने पर भी पाबंदी। शिक्षकों को यह भ्रांति है कि प्यार-दुलार से रौब नहीं रहेगा, अनुशासन नहीं रहेगा। वस्तुतः वे यह सब अपने अहं की तुष्टि हेतु करते हैं।

स्कूलों में बालक लगातार डांट-फटकार और हतोत्साह के वातावरण में रहते-रहते स्वयं की सामर्थ्य, शक्ति के प्रति अविश्वासी बन जाता है। भय से घिर जाता है और इस प्रकार उसका जो 'विकास' होता है उसे हम 'संकोची' नाम दे देते हैं और यही रूप आगे चल कर प्रौढ़ों में निरुत्साह, हार एवं नैतिक शक्ति के पूर्ण अभाव में प्रकट होता है।

जीवन के प्रारंभ से बालक को तानाशाही आज्ञाओं का पालन करने के

लिए मजबूर करके हम कैसे जनसत्ता एवं स्वतंत्रता की बातें कर सकते हैं। गुलामों की पौध उत्पन्न कर हम कैसे जनसत्ता की कामना कर सकते हैं? वास्तविक स्वतंत्रता जीवन के प्रारंभ से ही पनपती है, प्रौढ़ता में नहीं। यही तो मान्यता थी मैडम मोंटेसरी की भी।

डॉ. जाकिर हुसैन का कथन उल्लेखनीय है कि 'वह दिन दुनिया के लिए शुभ दिन होगा, जब इसके मदरसों में अध्यापक यह समझ लेंगे कि वे किसी ऐसे कारखाने में काम करने वाले ही नहीं हैं जिसमें सब माल एक ही ठप्पे और एक ही मार्के का निकलना जरूरी है। बल्कि जो अनेक प्रकार की क्षमताएं इनके हाथों सौंप दी जाती हैं, उन्हें अधिक से अधिक उन्नत बनाने में योग देना इनका सबसे बड़ा कर्त्तव्य है'।

कहने को तो सब कहते हैं कि शिक्षा बाल-केन्द्रित हो पर बाल-केन्द्रित न अभिभावक की महत्वाकांक्षा है और न अध्यापक का शिक्षण। अभिभावक बालक पर अपनी महत्वाकांक्षा थोपते हैं, उसकी अभिरुचि या क्षमता की ओर बिना ध्यान दिए और अध्यापक इस गलत कदम को निरपेक्ष भाव से लेते हैं। वे न बच्चे का अध्ययन करते हैं और न बच्चे में दिलचस्पी लेते हैं।

हमारे देश में अभी भी निरक्षरता का प्रतिशत काफी अधिक है, अभिभावक जो शिक्षित हैं वे भी सही अर्थों में शिक्षित नहीं हैं। ऐसी स्थिति में अध्यादेश, कानून या आयोगों की सिफारिशों से समस्या हल नहीं हो सकती। यह तो निर्भर करता है, अध्यापकों एवं प्राध्यापकों के सही प्रशिक्षण पर। शिक्षक में यह जागृति लाना कोई हंसी-खेल नहीं है क्योंकि वह प्रबुद्ध है, वह जागता है। सोए को तो जगाया जा सकता है, जागते हुए को नहीं। अभिभावकों को और सब कामों के लिए तो फुर्सत है पर अपने बच्चों के लिए नहीं।

ए–438, किशोर कुटीर
वैशालीनगर, जयपुर – 302021

योग्य शिष्य

● महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही' ●

एक गुरु के आश्रम में तीन शिष्य राम, श्याम और मोहन रहते थे। गुरुजी राम पर सबसे ज्यादा विश्वास करते थे और अधिकांश कार्य राम से ही करवाते थे। यह देखकर श्याम और मोहन मन ही मन उनसे जलते थे।

एक दिन श्याम ने गुरुजी से पूछा 'गुरुजी, आप राम पर हम से ज्यादा विश्वास करते हो और अधिकांश कार्य भी राम से ही करवाते हो, ऐसा क्यों?

गुरुजी बोले बेटा, इसका उत्तर तुम्हें कल मिल जायेगा।

अगले दिन गुरुजी ने तीनों शिष्यों को अपने पास बुला कर कहा तुम तीनों जाओ और कुछ भी कमा कर लाओ।

यह सुनकर तीनों शिष्य गुरु के आश्रम से निकल पड़े।

शाम को जब तीनों लौटे तो श्याम सूखी लकड़ियों का गट्ठर लेकर आया, मोहन एक खेत से आम और बेर लेकर आया और राम खाली हाथ लौटा।

तब गुरुजी ने एक-एक से पूछा मोहन, तुम बताओ क्या कमा कर लाये हो?

मोहन बोला गुरुजी, मैं आपके लिए एक खेत से आम और बेर लेकर आया हूं। आप खा कर देखिए बहुत मीठे हैं।

मोहन, तुम खेत से आम और बेर चुराकर लाये हो। यह तुम्हारी कमाई नहीं है। चोरी करना तो पाप है, इसलिए मैं इन्हें कैसे ले सकता हूं। कहते हुए गुरुजी ने श्याम से पूछा श्याम, तुम क्या लाये हो?

श्याम बोला गुरुजी, मैं जंगल से खाना पकाने के लिए सूखी लकड़ियां लेकर आया हूं।

बेटा, सूखी लकड़ियां तो मेरे आश्रम में ही बहुत सारी पड़ी हैं, इनकी भी मुझे आवश्यकता नहीं है, फिर यह लकड़ियां तो तुम जंगल से चुन-चुन कर लाये हो, इसमें तुमने क्या कमाई की?

अंत में गुरुजी ने राम से पूछा बेटा, तुम क्या लाये हो?

राम बोला गुरुजी, मैं सिर्फ पुण्य कमा कर लाया हूं। मैंने एक प्यासे को पानी लाकर पिलाया, अंधे को उसके घर तक पहुंचाया और एक अपंग व्यक्ति की सहायता की। इसलिए मैं खाली हाथ आया हूं।

यह सुनकर गुरुजी ने मोहन और श्याम से पूछा अब तुम ही बताओ! सबसे ज्यादा और अच्छा कमा कर कौन लाया है?

राम! दोनों के मुंह से निकल गया।

तब गुरुजी ने श्याम और मोहन को समझाते हुए कहा बेटा, यही कारण है कि मैं तुम से ज्यादा विश्वास राम पर करता हूं, इसलिए अधिकांश काम भी राम से करवाता हूं, क्योंकि राम तुम से ज्यादा अच्छा काम करता है। तुम्हें भी राम की तरह ही बनना चाहिए न कि मन में द्वेष या ईर्ष्या करनी चाहिए।

उत्साही प्रकाशन, 22–बजरंग वाटिका, रावण गेट, कालवाड रोड़, जयपुर – 302012

अंतिम शिक्षा

• नरेन्द्र देवांगन •

राजा विजय बहादुर चाहते थे कि उनका पुत्र अमरसिंह भी उन्हीं की तरह प्रजा का दुलारा राजा बने। अपने पुत्र को वीर, समझदार, गुणी और ज्ञानी बनाने के लिए वीर बहादुर ने गुरुदेव दयानंद से प्रार्थना की।

गुरुदेव दयानंद नर्मदा नदी के किनारे एक आश्रम बनाकर रहते थे। आश्रम के गुरुकुल में बच्चों के रहने की व्यवस्था थी। आसपास के अमीर-गरीब, किसान-व्यापारी सभी चाहते थे कि उनके बच्चे गुरुकुल में रहकर पढ़ें-लिखें, समझदार बनें।

राजा विजय बहादुर के बेटे को भी दयानंद गुरु ने दूसरे बच्चों के साथ रख दिया। विजय बहादुर खुशी-खुशी अपने राज्य में लौट गए। धीरे-धीरे समय बीतने लगा। चार साल बीत गए। बेटे अमरसिंह की राजी-खुशी की खबर विजय बहादुर को समय-समय पर मिलती रहती थी।

राजा विजय बहादुर का धीरज खोने लगा। वे अपने पुत्र अमरसिंह से मिलने के लिए बेचैन हो गए। एक रात वेश बदलकर चुपचाप, किसी से कुछ बिना बताए ही वे महल से निकल पड़े। घोड़े पर सवार होकर गुरु दयानंद के आश्रम तक पहुंच गए।

घोड़ा उन्होंने एक पेड़ के नीचे बांध दिया। इसके बाद बदले हुए वेश में वे गुरु दयानंद के पास गए और कहने लगे, 'गुरुदेव, मैं एक व्यापारी हूं। अपने बेटे को आपके आश्रम में भेजना चाहता हूं। तीन-चार दिन यहां रहूंगा। इसके बाद घर जाकर अपने बेटे को ले आऊंगा।'

गुरुदेव ने उन्हें वहां ठहरने की अनुमति दे दी। राजा विजय बहादुर ने देखा कि उनका बेटा दूसरे बच्चों के साथ मिलकर झाड़ू लगाता, नदी से पानी भरकर लाता, खाना बनाता और बर्तन भी साफ करता है। यह सब देखकर उनको बहुत दुख हुआ। साथ ही यह देखकर खुशी हुई कि गुरुदेव दयानंद उसे अपने सामने बैठाकर खास ध्यान देकर पढ़ाया करते। अमरसिंह भी पढ़ने-लिखने, घुड़सवारी करने, धनुष-बाण चलाने तथा गदा-युद्ध में सबसे योग्य था।

अगले दिन सुबह तड़के ही गुरुदेव दयानंद ने अमरसिंह को बुलाकर कहा, ''अमर, तुमने इस व्यापारी के हीरे चुराए हैं। इसलिए तुम्हारी पिटाई होगी।''

यह कहकर गुरुदेव ने अपनी छड़ी से अमरसिंह को पीटना शुरू कर दिया।

अमरसिंह बेचारा कह रहा था, ''गुरुदेव, मैं चोर नहीं हूं। मैंने कुछ नहीं चुराया। आप तलाशी लीजिए। सबसे पूछिए।'' मगर गुरुदेव दयानंद अमरसिंह को पीटे ही जा रहे थे।

व्यापारी के वेश में आए राजा विजय बहादुर से चुप न रहा गया। उसने आगे बढ़कर गुरुजी का हाथ पकड़ लिया और बोला, ''गुरुजी, मेरे पास हीरे थे ही नहीं। यह बच्चा उन्हें कैसे चुराता?''

गुरुदेव दयानंद ने कहा, ''राजा विजय बहादुर मैं आपको पहचान चुका था। अमरसिंह कभी चोरी नहीं कर सकता। यह मुझे मालूम था। मगर उसे अंतिम पाठ पढ़ाना था। अब आप उसे ले जा सकते हैं। यह आपसे भी अच्छा और न्यायप्रिय राजा सिद्ध होगा।''

राजा विजय बहादुर को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। दूसरे बच्चों को भी समझ नहीं आया कि गुरुदेव अमरसिंह पर झूठा आरोप लगाकर पीट क्यों रहे थे।

गुरुदेव दयानंद ने सबकी ओर देखा और कहा, ''अमरसिंह को प्रजा के साथ न्याय करना आना चाहिए। उसे यह समझाना जरूरी था कि जिसके साथ अन्याय होता है, उसे कैसा लगता है? झूठे आरोप पर सजा मिलने का मतलब अन्याय होता है। अन्याय का स्वाद चखने के बाद अमरसिंह किसी फैसले को बिना सोचे-समझे नहीं करेगा। यही मेरी अंतिम शिक्षा थी।''

अमरसिंह ने गुरुदेव दयानंद की इस सीख को हमेशा याद रखा।

उमेश फोटो स्टूडियो
पोस्ट : खरोरा – 493225 (रायपुर–छत्तीसगढ़)

मेरी सुशील बिटिया

• प्रो. धर्मपाल मैनी •

मानव को सच्चे अर्थों में सुसंस्कृत मानव बनाने का श्रेय नारी को है। संभवतः इसीलिए मनीषियों ने कहा है कि यदि एक पुरुष सुसंस्कृत होता है, तो वह अकेला ही है, लेकिन यदि घर की नारी सुसंस्कृत होती है तो सारा परिवार ही सुसंस्कृत हो जाता है। वह अपने स्नेह, आत्मीयता, मधुरता, प्रियता, सेवा और त्याग से परिवार के सभी सदस्यों का संस्कृतिकरण कर देती है। भारतीय बिटिया षोडशी होते-होते यौवनावस्था के आधारभूत (मूल) तत्त्वों को संजो लेती है और इसी से हम उसे सुशील बिटिया के रूप में विकसित हुआ पाकर आनन्दित और आह्लादित होते हैं। इस पुरुष प्रधान समाज में वे कौन से तत्त्व हैं, जो उसे सुशील बिटिया और भारतीय नारी बनाते हैं, इसी पर थोड़ा-सा विचार अपेक्षित है।

स्वाभाविकता वह महत्त्वपूर्ण गुण है, जो उसके स्वच्छ और स्वतंत्र व्यक्तित्व को बहुतायत से औचित्यपूर्ण विकसित होने में सहायता करता है। वह अनायास ही सहज, सरल और स्पष्टता को लिए होता है और अपनी सादगी एवं साधुता के कारण कृत्रिमता से भी उसकी रक्षा करता है। षोडशी की सौम्यता तो मानो उसके समग्र व्यक्तित्व की ही छवि को प्रस्तुत कर देती है। शालीनता, संकोच और लज्जाशीलता के माध्यम से जहां उसके नारीत्व को रूपायित करती है, वहां कोमलता, मधुरता, नम्रता, प्रियता और प्रसन्नवदनता उसके नारीत्व को जैसे पूर्णता प्रदान करती है। वस्तुतः बिटिया की सहृदयता जहां एक ओर उसकी संवेदना, सहानुभूति, सौमनस्य आदि के माध्यम से उसकी करुणा, कृपा, दयालुता, उदारता आदि को परोपकारवृत्ति एवं दानशीलता में परिणत कर देती है, वहां उसकी गरिमा का एक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु सामने आ जाता है।

नारी प्रेम की प्रतिमूर्ति है वहीं प्रेम कभी स्नेह, ममता, अनुराग, आत्मीयता, संख्या आदि अन्यान्य रूप ग्रहण कर न केवल परिवार को, अपितु सम्पूर्ण समाज को आप्लावित किए रहता है। चारित्रिक दृढ़ता को शुचिता, स्वच्छता, पुनीत भाव-शुद्धि आदि के माध्यम से न केवल उसके आंगन को तेजस्विता से दीप्त कर उसके लावण्य और सौंदर्य को अनायास ही आकर्षक और मोहक बना देता है, अपितु उसके बिटिया रूप को सहज ही ग्राह्य भी बना देता है। ऐसे में यदि उसे धैर्य और संयम का आश्रय मिल जाये, तब तो सोने पे सुहागे की बात हो जाती है। संयम की आधारभूमि जो संतोष है, वह त्याग की गरिमा को लिए हुए है। यह त्याग एक ओर सहनशीलता, अक्रोध और क्षमा से विभूषित है, तो दूसरी ओर शांति इसे स्थिरचित्त बनाने में सहायिका सिद्ध होती है, जिससे वह अधिकाधिक असंग और निस्पृह होकर समता-परायण दृष्टि विकसित करता है।

वस्तुतः उसका विवेक ही उसे अपने कर्त्तव्य का पालन करने में सहायता करता है और उसी में वह आनंद अनुभव कर सकती है। उसका सदाचार उसके शिष्ट आचरण के प्रति उसे प्रेरित करता रहेगा और वह सभ्य व सुशील तत्त्व को अधिकाधिक विकसित करती रहेगी। जहां उसे अपनी प्रज्ञा (मेधा) को विकसित कर सरस्वती की आराधिका बनना है, वहां लक्ष्मी अर्जन की क्षमता एवं उचित उपयोगिता की चेतना भी विकसित करनी है। इस सबसे बढ़कर विषाक्त समाज की कुदृष्टि से आत्मरक्षा के प्रयत्न में दुर्गा के साहस व शक्ति को भी अपने में संचरित करते हुए स्वाभिमानपूर्वक जीना है। आत्मविश्वास जिस आस्था, श्रद्धा और निष्ठा से परिपक्व होता है वह अनायास ही भगवत्-विश्वास में परिणत हो जाता है। तब आत्म-निरीक्षण, आत्म-परीक्षण, आत्म-दोषदर्शन, आत्म-परिष्कार और आत्म-उन्नयन का क्रम चलता है, जो व्यक्तित्व के उदात्तीकरण का सहज मार्ग है और ऐसी बिटिया का अंतर्हित दिव्य अनायास ही भव्य में परिणत हो न केवल जन-समाज को बहुतायत से प्रभावित करता है, अपितु अपने जीवन को भी सार्थक और सफल बनाने की दिशा में अग्रसर होता है।

समग्र व्यक्तित्व के विकास की जिन दिशाओं का ऊपर उल्लेख किया गया है, क्रियात्मक जीवन में उन्हें व्यवहृत करने के लिए विवेक की कसौटी पर कसना होता है। देश, काल और परिस्थिति विशेष के संदर्भ में बिटिया को अपने विवेक के आधार पर चतुराई से कार्य करना पड़ता है, तभी वह सुशील और सुसंस्कृत होकर भी आधुनिक सामाजिक परिवेश में सफलतापूर्वक जीवन बिता सकेगी और अपने मूल व्यक्तित्व को भी सुरक्षित रख सकेगी। यदि आज के विषमताओं भरे समाज में भी इस पर विचार कर विवेकशील बिटिया अपना मार्ग निर्धारित कर सके अथवा वह इससे कुछ भी दिशा-निर्देश ले सके, तो हम अपना यह प्रयत्न सफल समझेंगें।

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी–विभाग),
पंजाब विश्वविद्यालय–चंडीगढ
आई–6, साउथ सिटी–1,
गुड़गांव–122001 (हरियाणा)

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सहायक हैं खिलौने

• अनिल कुमार •

छोटे बच्चों के खेल में खिलौनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। खेलने के दौरान बच्चे सहयोग, सहनशीलता और सहानुभूति जैसे सामाजिक गुणों को अपने में समाहित करते हैं।

खिलौने बच्चों के बौद्धिक और रचनात्मक विकास में तो सहायक होते ही हैं, इसके अलावा उनसे खेलने योग्य शारीरिक व्यायाम भी होता है जिससे बच्चे के शरीर में स्फूर्ति और तंदरुस्ती के साथ-साथ चंचलता भी आती है। आवश्यकता सिर्फ इस बात की होनी चाहिए कि खिलौने बच्चे की उम्र के अनुसार हों। एक महीने से सात महीने तक की उम्र के बच्चों को रबड़ और प्लास्टिक के खिलौने, जो विभिन्न प्रकार के लुभावने रंगों के हों तथा जिनसे तरह-तरह की आवाजें भी निकलती हों दिए जा सकते हैं। छोटे बच्चों को खिलौने देते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि उनके कोने नुकीले न हों।

सात से चौदह माह के बच्चों को तीन पहिएं वाले लकड़ी अथवा प्लास्टिक के वॉकर दिए जा सकते हैं जो बच्चों के चलने में वरदान के समान सहायक होते हैं। अगर इस उम्र में बच्चे को नुकसानरहित मजबूत खिलौने पर्याप्त मात्रा में दिए जाएं तो उन्हीं के साथ खेलने में वे व्यस्त हो जाते हैं और किसी को तंग भी नहीं करते।

बच्चा ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, उसमें सोचने-समझने की शक्ति भी बढ़ जाती है। दो-तीन वर्ष तक की आयु के बच्चों को तरह-तरह की आकृतियों वाले खिलौने जैसे गुडिया, बंदर, भालू या अन्य आकृतियों वाले खिलौने दिए जाएं तो बच्चा स्वयं उन आकृतियों को पहचानने की कोशिश करता है। इन खिलौनों को देखकर वह जीवित जानवरों की पहचान करना सीखता है। इसी प्रकार चार-पांच वर्ष के बच्चों को यदि चाबी वाली गाड़ियां जैसे ट्रेन, बस, हवाई जहाज इत्यादि दिए जाएं तो उनसे वे अच्छी तरह खेलते हैं। इससे उनके मस्तिष्क में रचनात्मक कार्य करने की इच्छा जाग्रत होती है। इस तरह उनका शारीरिक एवं बौद्धिक विकास भी होता है।

कई बच्चे खासकर बालिकाओं को रसोई के बर्तन वाले खिलौने बहुत अच्छे लगते हैं तो कइयों को बैट-बॉल आदि। इसलिए खिलौने खरीदते समय इनका चयन सावधानी से करना चाहिए। कुछ खिलौने ऐसे होते हैं जिनसे बच्चों की दिमागी कसरत भी होती है। खेल-खेल में ही बच्चे सब कुछ सीख लेते हैं। लूडो या अन्य खेलों से वे गिनती भी सीख लेते हैं। खेल-खेल में गणित के कई सवाल भी हल कर लेते हैं। बच्चों को ऐसे खिलौने कदापि नहीं देने चाहिएं जिनसे उनमें हिंसात्मक प्रवृत्ति की नींव पड़े। बच्चे का मन सुकोमल होता है, अतः उसे खिलौने देते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि कहीं खिलौना इन पर कुप्रभाव तो नहीं डाल रहा है।

इस तरह यदि बच्चे की उम्र के अनुरूप सही ढंग के खिलौने दिए जाएं तो निश्चित रूप से वे उसके व्यक्तित्व विकास में सहायक होते हैं।

मकान नं. एफ–80,
पोस्ट : सिंदरी –828122, जिला : धनबाद

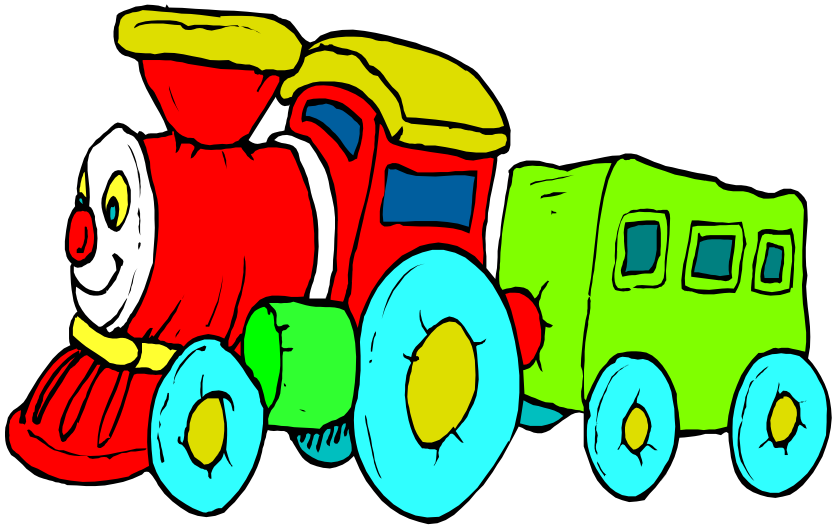

वर्तमान में बच्चे अनेक भय पैदा करने वाले अनुभवों से गुजरते हैं। जैसे दूरदर्शन पर दिखायी जाने वाली हिंसा, माता-पिता का तलाक, कामकाजी मां से अल्पवय में ही अलगाव आदि। अतएव माता-पिता का कर्त्तव्य बनता है कि वे बच्चों में आवश्यक आधारभूत शक्ति और उत्साह पैदा करें जिसकी उन्हें भय से दूर करने की जरूरत है।

बच्चों में भय

• डॉ. विभा सिंह •

एक सफल अध्यापक के नेत्रों के समक्ष उसकी बाल्यावस्था का वह क्षण आज भी जीवंत हो उठता है। जब वह रात्रि में अकेले जागने पर डर जाता था। मेरी आयु उस समय 9 वर्ष की रही होगी। मेरे पिताजी ने मुझसे बगल वाले कमरे में पढ़ने को कहा। रात्रि का समय, तेज लाइट में भी मैं डरने लगता। खिड़की से कोई भयावह छाया जैसे कमरे में प्रवेश कर रही हो।

एक स्त्री बताती है कि उसे अंधेरे में सोने से भय लगता था। उसकी माँ इसे पागलपन की संज्ञा देती और रात को कमरे की लाइट एवं खिड़कियां बंद कर देती। तब स्पष्टतः वह और भी भयभीत हो जाया करती।

वास्तव में ऐसे माता-पिता अपने बच्चों के प्रति जान-बूझकर संवेदनहीन या निर्दयी नहीं होते। वे अपने बच्चों के भय को लेकर चिंतित बने रहते हैं, परन्तु अनजाने ही अनुचित प्रतिक्रिया व्यक्त करके वे उनके भय को और अधिक बढ़ा देते हैं।

कुछ माता-पिता यह भी अनुभव करते हैं कि उनके बच्चे के भयभीत रहने का कारण किसी प्रकार की मानसिक गड़बड़ी है। अथवा वे अपने को असफल पाते हैं। चूंकि ये तथ्य उनके मातृत्व व पितृत्व की गरिमा को आघात पहुंचाते हैं, अनेक माता-पिता यह बात मानने से इंकार कर देते हैं कि उनके बच्चे में भय वास्तविक है।

यद्यपि बाल्यावस्था में अधिकतर भय न केवल वास्तविक होते हैं, अपितु बच्चों के विकास के स्वाभाविक अंग होते हैं, वस्तुतः बच्चों के भय वयस्कों के भय से उतने भिन्न नहीं होते। मेरे पारिवारिक चिकित्सक डॉक्टर शिवाधर जी का कहना है, 'जब हम नवीन रोगियों से बात करते हैं, जो जानकारी प्राप्त होती है उस आधार पर लोग प्रायः नये व्यक्तियों से मिलने पर भयभीत हो उठते हैं। वे सोचते हैं कि चरमर की आवाज क्या वास्तव में फर्शी तख्तों से ही आयी है। परन्तु वयस्क यह जान गये हैं कि इन आशंकाओं से कैसे पार पाना चाहिए। बस बच्चे यही बात नहीं जानते। उन्हें यह जानने की जरूरत है कि उनका भयभीत हो जाना अथवा डर जाना स्वाभाविक होता है और यह कि भय की इन भावनाओं से दूर होना संभव है।

हर बच्चा भावनात्मक विकास की सामान्य अवस्थाओं से होकर गुजरता है। जबकि कुछ निश्चित प्रकार के भय का पैदा होना 'वय सुलभ' है। मात्र दो नैसर्गिक भय हैं गिरने और अचानक तेज आवाज का भय। सात माह से एक वर्ष तक के बच्चे का किसी अजनबी को देखकर भयभीत होना स्वाभाविक है। शिशु शीघ्र ही अपने माता-पिता के चेहरों को पहचानना सीख लेता है। कोई भी अपरिचित मनुष्य उसे अपने अस्तित्व व सुरक्षा के लिए संभावित खतरा लगता है।

अकेलेपन का डर प्रायः माह से एक वर्ष में विकसित होता है और एक से ढ़ाई वर्ष की आयु के बीच यह अत्यधिक तीव्र रहता है। आयु के इस सोपान तक बालक यह नहीं सीख पाता कि जो मनुष्य उसकी निगाह से ओझल है वह अभी भी उपस्थित है और लौट आयेगा। इस आयु तक बच्चा इतना ही जानता है कि जब मां नजरों से ओझल हो जाती है तो उसे लगता है कि वह सदा के लिए चली गई। एक मनोचिकित्सक के अनुसार, 'जो लोग बच्चों की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं उनकी क्षणिक अनुपस्थिति भी उसके मन में गहन आकुलता पैदा कर देती है। जो माता-पिता अपने बच्चे से लम्बे समय के लिए दूर रहने से बचते हैं, वे वस्तुतः उसकी भावनात्मक सुरक्षा के निर्माण में सहायता करते हैं।

दो या चार वर्ष की अवस्था वाले बच्चों को मुखौटों से डर लगता है। इस अवस्था तक बच्चा अपने माता-पिता की प्रतिक्रियाओं को समझना सीख लेता है। जब उनके प्रत्यक्ष भाव बच्चे में तिरोहित होते हैं तो बच्चा असुरक्षित महसूस करने लगता है।

एक दम्पत्ति ने मनोचिकित्सक से अपने चार वर्षीय 'विक्षुब्ध' बच्चे का उपचार करने को कहा, क्योंकि वह गंगा नदी के तट पर सेन्डिल पहनने की जिद करता था। उसके पैरों में बालू के कण चिपक जाते थे। इससे उसे परेशानी

होती थी। परन्तु दो से पांच वर्ष तक के बच्चे के लिए यह स्वाभाविक है कि वह अपने शरीर के किसी भी अंग के वास्तविक रूप से क्षतिग्रस्त होने पर उद्विग्न हो उठे। बच्चा प्रायः जरा-सी खरोंच के लिए भी पट्टी बांधने की मांग कर बैठता है। शरीर के बारे में बच्चे की यह चिंता इस तथ्य से पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि वह टूटे हुए खिलौनों से दूर भागता है। यहाँ तक कि वह टूटी सैण्डविच लेने से भी इंकार कर देता है।

विद्यालय जाने की आयु तक विभिन्न प्रकार के भय उभर आते हैं। ऐसे बच्चे माता या पिता की मृत्यु से भयभीत हो उठते हैं, क्योंकि उन्हें विद्यालय में रोक लिये जाने का डर बना रहता है।

बच्चों को 'डरपोक' बताना हतोत्साहित करने के बराबर है। यदि बच्चा घर की दीवार पर पड़ने वाली पेड़ की परछाई से डर जाता है तो उससे यह कहना कि 'सो जाओ' यह उसमें भयबोध करने जैसा है। माता-पिता को यह स्वीकार करना चाहिए कि परछाई भयाक्रान्त कर सकती है। भय को वास्तविक न मानने को प्रेरित करें। ऐसे में बच्चा माता-पिता के आश्वासन पर विश्वास करना शुरू कर देगा।

ऐसे अनेक उपाय हैं जिससे माता-पिता अपने छोटे बच्चों को भय पर काबू पाना सिखा सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में केवल जानकारी देना भी प्रभावशाली सिद्ध होता है। मेरी मंझली बिटिया सुप्रिया तितली देखकर डर गयी तो मैंने उसे बतलाया कि रंग-बिरंगी तितली कैसे उड़ती है। इनको छेड़ना नहीं चाहिए। इसी तरह एक व्यक्ति ने अपने बच्चे को बादलों की गड़गड़ाहट के भय से मुक्ति दिलाने में सहायता की।

स्पष्टतः जब तक बच्चा इतना बड़ा नहीं हो जाता कि वह युक्ति अथवा तर्क को समझ सके, तब तक तथ्यों द्वारा उसके भय को दूर नहीं किया जा सकता। फिर भी प्रत्येक आयु के बच्चे तर्कसंगत बात सुनकर अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं, चाहे वह पूरे तथ्यों को समझ न पाये।

बच्चे भी अपने को माता-पिता के अनुरूप ही ढालने का प्रयास करते हैं। अतएव उनका सही प्रतिरूपण एक अन्य महत्वपूर्ण तकनीक है। जो माता-पिता अपने अनुभवों के आधार पर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने बच्चों से व्यवहार करते हैं, वे अपने बच्चों के समक्ष सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान समय के बच्चे अनेक भय पैदा करने वाले अनुभवों से गुजरते हैं। जैसे दूरदर्शन पर दिखायी जाने वाली हिंसा, माता-पिता के तलाक, कामकाजी मां से अल्पवय में ही अलगाव आदि। अतएव माता-पिता का कर्त्तव्य बनता है कि वे बच्चों में आवश्यक आधारभूत शक्ति और उत्साह पैदा करें जिससे वे भय से दूर रहें।

'विभावरी' जी–9, सूर्यपुरम्, नंदनपुरा,
झांसी–284003 (उ.प्र.)

राष्ट्र चिन्तन

पर्यावरण संरक्षण : विकसित देश पहल करें

मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि यदि अमीर देश एक सहनशील स्तर तक अपने ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करें तो इससे बचा हुआ वित्तीय संसाधन जलवायु को बचाने के लिए शोध पर खर्च किया जा सकेगा। इसका लाभ विकासशील देशों को ग्रीन हाउस गैस के उत्पादन पर काबू पाने में मिलेगा।

हम प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन को लेकर प्रतिबद्ध हैं और विकसित देशों के प्रति व्यक्ति औसत कार्बन उत्सर्जन से कभी आगे नहीं बढ़ेंगे। कार्बन उत्सर्जन के औसत को प्रति व्यक्ति के हिसाब से ही नापा जाना चाहिए। इसी न्यायोचित सिद्धांत के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय समझौता होना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन के अनुरूप खुद को ढालने में विकासशील देशों के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं। जलवायु परिवर्तन के नजरिए से भारत का विकास पथ काफी मामूली रहा है। विश्व औसत की तुलना में यहां प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत एक चौथाई ही है और प्रति व्यक्ति कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन दुनिया में सबसे कम है। लेकिन, जैसे-जैसे भारत का सकल घरेलू उत्पाद बढ़ेगा, भारत का संपूर्ण उत्सर्जन भी बढ़ेगा। इससे बचने के लिए हमें नई तकनीक चाहिए जो ऊर्जा का सक्षम इस्तेमाल कर सके।

धरती का तापमान बढ़ाने के लिए विकसित देश ही जिम्मेदार हैं, इसलिए उन्हें ही इस बारे में पहल करनी होगी। विकासशील देश अपने विकास से कोई समझौता नहीं कर सकते।

डॉ. मनमोहन सिंह
प्रधानमंत्री

बाल दिवस

नेहरूजी की यादें लेकर,
बाल दिवस फिर आया है,
मन सबका हर्षाया है।
टोपी वाले नेताजी,
बच्चों के वो प्यारे थे,
सबको जीना सिखलाया,
सबकी आँखों के तारे थे।
आज उसी तारे को लेकर,
चंदा भी शरमाया है।
बाल दिवस फिर आया है,
मन सबका हर्षाया है।
देश के खातिर जेल गए थे,
आजादी की लड़ी लड़ाई,
छोटे-मोटे काम किए पर,
नहीं करी कभी बड़ाई,
फूल गुलाब का लगा कोट में
बच्चों को खूब हँसाया है।
बाल दिवस फिर आया है,
मन सबका हर्षाया है।
आराम हराम है की बात बताई,
बच्चों से जिसने प्यार किया,
ऊंचे पद पर रह कर भी,
नन्हें-मुन्नों को दुलार दिया,
'चाचा' सबके कहलाए,
'सत्य' खूब सिखलाया है।
बाल दिवस फिर आया है,
मन सबका हर्षाया है।

■ सत्यनारायण 'सत्य'
समता भवन के पास, रायपुर
जिला–भीलवाड़ा (राजस्थान) 311803

प्रकृति

बहता पवन, खिलते सुमन
जग में छाई अनंत बहार
ओस की बूंदें घास से मिलकर
करती प्यार भरी मनुहार।
आनंदित करता हर मौसम
इसे बनाएं अति सुंदर हम।
पेड़ लगाएं, घास उगाएं
रंग-बिरंगे फूल खिलाएं
हवा में भर दें ताजा खुशबु
तितली भोरों को इधर बुलाएं।
प्रदूषण करें यारों अब कम
इसे बनाएं अति सुन्दर हम।
तारों भरा आकाश निराला
बरखा देती अमृत का प्याला
रोशन करती सूरज की किरणें
खुल जाता किस्मत का ताला
चारों ऋतुएं करती चम-चम
इसे बनाएं अति सुंदर हम।

■ मुदित गुजरानी
अनुभूति स्कूल, जैन डिवाइन पार्क
सीसरोली रोड, जलगांव (महाराष्ट्र)

झूल रही है बया

बया नीड़ में ऊंचाई पर
झूल रही है झूला,
खिले फूल की तरह बया का
मन खुशियों से फूला।
झूम रहे हैं नदी-सरोवर,
बरस रहा है पानी;
सुना रही है बया अनूठी
गीतों भरी कहानी।
फुदक रहे हैं बादल-बिजली,
बगिया महक रही है;
अन्य अनोखी चिड़ियों की भी
टोली चहक रही है।

दयालु केवट

धरा लग रही भूल-भुलैया,
छलक रहे हैं नदी-तलैया।
बाढ़ आ रही है जोरों से,
डोल रही है जिसमें नैया।
चला-चला कर पतवारों को,
मदद कर रहा है खेवैया।
निभा रहा वह जिम्मेदारी,
नहीं चाहिए उसे रुपैया।

■ डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा
पोस्ट : गिलूंड – 313207
(राजसमंद–राजस्थान)

मुक्तक

क्यों छूते हो फूंकार मारती नागिन को,
हे मतवाले! क्यों छलकाते हो यह प्याला
यह डस जायेगी लाल-लाल इन होठों को,
फिर गाली दे, बदनाम करोगे मधुशाला।
संकल्प करो नहीं छुएंगे इन प्यालों को,
नहीं पीने देंगे कभी युवाओं को हाला।
हम समझायेंगे सभी नशेड़ी बूढ़ों को,
बरबाद करोगे-सुखमय जीवन यह सारा।
हे भ्रूणहत्या करने वाले महापापियों,
क्यों जान-बूझकर अबोध को काट रहे हो।
यह होगी आपके जीवन का कीमती सहारा,
फिर क्यों अपने किये पर पछता रहे हो।
आज भाई को भाई गोली मारते शर्माता नहीं,
आज पिता संतान को मार कर पछताता नहीं।
पता नहीं क्या हुआ है समाज की व्यवस्थाओं की,
बुजुर्ग चुप हैं कोई अपराधियों को समझाता नहीं।
इस स्वार्थी दुनिया में कोई किसी का नहीं,
सब मतलब के रिश्ते हैं कोई साथी-संगी नहीं।
आज के परिवार तो भूल गये हैं प्यार-मौहब्बत को,
सेवा और सद्भाव कहीं देखने को आता नहीं।

■ **ओमप्रकाश सोनी**
अध्यक्ष : अणुव्रत समिति लाडनूं

राह दिखाए

सड़क पार करने को अंधी,
बूढ़ी सबसे विनती करती।
लोग पास से आते-जाते,
भीड़ न उसकी बातें सुनती।
सभी सोचते किसको फुर्सत।
जो अंधी को राह दिखाए।
बहुत काम करने को बाकी,
हम क्यों अपना वक्त गंवाएं?
पढ़कर विद्यालय से आती
नन्हीं पिंकी इसी राह से
सुनकर वह बूढ़ी की विनती
आई, बोली बड़े चाव से।
'मां तुम मेरा हाथ पकड़ लो।
तुम्हें सड़क मैं पार करा दूं।
अगर नहीं तुम जा पाओ तो,
मैं तुमको घर तक पहुंचा दूं।
जुग-जुग जिओ दुलारी बेटी।
बूढ़ी गदगद् होकर बोली।
यह तो है कर्त्तव्य हमारा,
विहंस उठी तब पिंकी भोली।

■ **शंकर सुल्तानपुरी**
साहित्य वाटिका
13/362 इंदिरानगर, लखनऊ (उ.प्र.)

भाग्य और भगवान

एक आदमी बहुत गरीब था। उसने भगवान की तपस्या की। भगवान प्रकट हुए और उन्होंने उससे पूछा कि क्या कष्ट है। व्यक्ति बोला मैं बहुत गरीब हूं कुछ धन दे दो। भगवान ने कहा कि धन तुम्हारे भाग्य में नहीं है तुम मेहनत करो। उसने कहा नहीं भगवान आप भी औरों की तरह भाषण दे रहे हैं। मुझे भाषण नहीं धन चाहिए। भगवान ने उसे एक डिबिया दी और कहा कि इसमें पारस पत्थर है कल तक तुम इसके स्पर्श से जी चाहे जितने लोहे को सोना बना सकते हो। यह कहकर भगवान अंतरध्यान हो गये। वह डिबिया लेकर घर गया। उसने डिबिया को खोला तो उसमें सचमुच ही एक पत्थर था। पत्थर और डिबिया को देखकर उसने सोचा कि यह पारस नहीं हो सकता अगर यह पारस होता तो इस लोहे की डिब्बी को सोना बना देता। दूसरे दिन उसने पारस भगवान को वापस कर दिया। भगवान ने एक लोहे की कील को सोना बना दिया। आदमी ने आश्चर्य से पूछा कि जब यह पारस है तो इस डिब्बी को सोना क्यों नहीं बनाया। भगवान ने पारस को हाथ में उठाया और आदमी को दिखाया कि इन दोनों के बीच एक कपड़ा बिछा है। जब तक भक्त और भगवान के बीच कपट रूपी परदा है तब तक वह सोना नहीं बन सकता।

निर्मल निश्छल भक्ति कर मत मांगे वरदान।
भगवान अपने भक्त का रखें सदा ही ध्यान।।

■ **कृष्ण कुमार वर्मा**
एल–97 सेक्टर–12, प्रताप विहार, गाजियाबाद (उ.प्र.)

स्याने

चुन्नू-चिन्नी दोनों बड़े स्याने
पांच बजे सुबह ही जग जाते।
दांत ब्रश कर पीते ठंडा पानी,
साढ़े पांच बजे रोज नहाते।
छः बजे जाकर पूजा घर में,
माता संग प्रभु नाम ध्याते।
साढ़े छः बजे हॉल में पहुंच,
व्यायाम कर सेहत बनाते।
सात बजे निकाल किताबें,
आठ बजे तक पाठ पढ़ते।
नाश्ता कर पहन लेते वर्दी,
नौ बजे स्कूल बस पकड़ते।
न करते शरारत दिन भर,
स्कूल में सीखते अनुशासन।
आवारा बन नहीं घूमते कहीं,
हर आज्ञा का करते पालन।
समझ गए होगे तुम बच्चों,
चुन्नू-चिन्नी क्यों हैं प्यारे?
गुणों की खान हैं दोनों ही,
तभी तो सब बच्चों से न्यारे।

पीली चिड़िया

फुर्र-फुर्र करती आई चिड़िया,
नन्हीं-मुन्नी पीली चिड़िया।
चीं-चीं करती आई देखो,
नाचती उड़ती आई देखो।
गाना तुम सुन लो इसका,
आसमान है पूरा इसका।
बड़ी नटखट यह चिड़िया।
तिनके चुन चढ़ी पेड़ पर,
बनाया प्यारा अपना घर।
बीज खेत के चुगे सारे,
तभी कहें इसे चोर सारे।
फिर भी है प्यारी चिड़िया
नन्हीं-मुन्नी पीली चिड़िया।

■ विनोद ध्रब्याल 'राही'
रा.व.मा.पा. तीसा
जिला चंबा हि.प्र. – 176316

सीखें अनुशासन

सीखें अनुशासन में रहना।
मानें श्रेष्ठ जनों का कहना।। ध्रुव।।

नियमों से गतिमान है प्रकृति।
नियमों से ही बंधी संस्कृति।
लोकाचार चलें नियमों से।
यम-नियम के बिन क्या जीना?
सीखें अनुशासन में रहना ।। 1।।

मर्यादित अनुशासित जीवन।
होता मानो सुरभित उपवन।।
चहके-महके चहुंओर दिशा में,
चमके जैसे पिघला सोना।
सीखें अनुशासन में रहना ।। 2।।

हिल-मिल-जुल कर प्रेम से रहना।
सरिता निर्झर बनकर बहना।
त्याग-तितिक्षा, व्रत-क्षमता से,
कहना नहीं, सीखें हम सहना।
सीखें अनुशासन में रहना ।। 3।।

अनुशासन जीवन की लय है।
अनुशासन से होती जय है।
शिष्टाचार विनय प्रगटाता,
अनुशासन जीवन का गहना।
सीखें अनुशासन में रहना ।। 4।।

शासन और प्रशासन धारा।
चलती अनुशासन के द्वारा।
व्यवस्थाओं का भव्य भवन यह,
सावधान! कहीं जाएं ढह ना।
सीखें अनुशासन में रहना ।। 5।।

■ डॉ. दिलीप धींग
उदयपुर – 313002

लाडनूं अणुव्रत लेखक सम्मेलन

• सत्यनारायण 'सत्य' •

अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली एवं अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान द्विदिवसीय राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं में 13-14 अक्टूबर 2009 को आयोजित किया गया।

उद्घाटन सत्र 13 अक्टूबर 2009 को प्रातः 9.30 बजे आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती लाडनूं की सुधर्मा सभा में हुआ। जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध पत्रकार व साहित्यकार वेदप्रकाश वैदिक - दिल्ली ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मपाल मैनी - गुड़गांव थे।

कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत द्वारा की गयी। जिसमें मुनि महावीर द्वारा अपने सुमधुर कंठ से सभी श्रोताओं को श्रद्धा व प्रेम में सराबोर किया। उद्घाटन की घोषणा के साथ ही पत्रकार-साहित्यकार पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन ने अपने वक्तव्य में कहा जिस सम्मेलन को आचार्य महाप्रज्ञ जैसे विश्व संत का सान्निध्य मिल रहा हो, वह लेखक सम्मेलन निस्संदेह सफल होगा। उन्होंने लाडनूं शब्द की व्याख्या करते हुए प्रत्येक शब्द/अक्षर एल लर्न, ए एक्टिव, डी डिवोशन, एन नेशनलिटी व यू यूनिवर्सिटी का सम्बोधन दिया। उन्होंने कहा अणुव्रत का मतलब छोटे-छोटे व्रतों से होता है। इन्हीं छोटे-छोटे व्रतों के कारण 1 मार्च 1949 को आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित यह आंदोलन आज भी पूरी जिम्मेदारी से अपनी भूमिका निभा रहा है।

अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने अपने उद्बोधन में कहा अणुव्रत लेखक मंच का यही उद्देश्य है कि हमारे परिवेश के इर्द-गिर्द जो अंधकार की व्यापकता है उसे दूर कर समाज को एक नई रोशनी प्रदान की जाए।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात साहित्यकार एवं आकाशवाणी केन्द्र जयपुर के पूर्व निदेशक इकराम राजस्थानी ने कहा कि लेखक समाज के प्रत्येक अंश को समझता है और उसे अपनी कलम के जरिये लोगों तक पहुंचाता है, एक नई क्रान्ति की शुरुआत करता है। समाज में जब चारों ओर घृणा का माहौल है, ऐसे में आचार्यश्री महाप्रज्ञ का प्रयास स्तुत्य, प्रेरक है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में सुपरिचित पत्रकार वेदप्रताप वैदिक ने कहा अणुव्रत मेरे लिए वृत्ति है। सारे व्रत मेरे लिए साध्य हैं, परन्तु जिन जैन लोगों के लिए अणुव्रत के नियम बनाए गए हैं, वे जैन लोग ही इन व्रतों को ज्यादा भंग करते हैं, इसलिए इस बात की सख्त जरूरत है कि बच्चों को बचपन से ही अणुव्रत के संस्कार दिए जाएं।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने इस सत्र को अपना पावन सान्निध्य प्रदान करते हुए कहा आज के समय में बढ़ रही हिंसा की जड़ को खोजना होगा। हिंसा व शस्त्रों की होड़ का मुख्य कारण भय है। भय पैदा करता है लोभ। आज की अर्थनीति, अर्थव्यवस्था शुद्ध नहीं है, इसीलिए चारों तरफ भय का वातावरण पैदा हो रहा है। जहां भी सत्ता है, वहां भय है। व्यक्तिगत संग्रहीकरण का सीमाकरण व व्यक्तिगत उपभोग का संयमीकरण होना चाहिए। अणुव्रत के

लेखकों द्वारा इतना श्रेष्ठ लिखा जा रहा है, परन्तु देश के धनी, मंत्री, सम्पदावान लोग नहीं पढ़ते हैं, इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र के ठीक बाद विश्वविद्यालय सेमिनार हॉल में परिचय सत्र का आयोजन हुआ। जिसमें पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल एवं मुनि जयकुमार का। इस सत्र की अध्यक्षता सुविख्यात विचारक व अलवर से समागत सुरेश पंडित द्वारा की गई। सत्र में सभी सहभागी साहित्यकारों ने एक-दूसरे का अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए आपसी आत्मीयता को मजबूत किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सुरेश पंडित (अलवर) ने कहा साहित्यकार व लेखक कभी क्रांति नहीं करता, बल्कि वह क्रांति के लिए माहौल तैयार करता है।

दोपहर के भोजन के ठीक बाद अपराह्न 2.30 बजे 'अणुव्रत लेखन और व्यक्तित्व निर्माण' पर तृतीय सत्र की शुरुआत हुई। जिसमें मुनिश्री मदन कुमार का सान्निध्य प्राप्त हुआ। विषय प्रवर्तन करते हुए अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' (जयपुर) ने कहा कि व्यक्तित्व को मौजूदा दौर में प्रबंधन पाठ्यक्रमों में भी जोड़ा गया है। व्यक्तित्व का अभिप्राय सिर्फ बाहरी तत्वों में ही नहीं होता है, बल्कि भीतरी तत्वों का भी समावेश होता है। रायपुर से समागत युवा बाल साहित्यकार सत्यनाराण 'सत्य' ने कहा कि अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति अपना स्वयं का व्यक्तित्व बहुत ही सुंदर तरीके से प्रभावी व सार्थक बना सकता है, जो स्वस्थ समाज व राष्ट्र के लिए अत्यन्त आवश्यक है। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा (गिलूंड) ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों में मौलिक चिंतन का समावेश होना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा अणुव्रत महासमिति का अध्यक्षीय दायित्व संभालते वक्त मुझे भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। मेरा शुरू से ही यही विचार रहा कि अणुव्रत लेखक पुरस्कार व अणुव्रत लेखक सम्मेलन में वे ही व्यक्ति शामिल किए जाएं जो चरित्र सम्पन्न एवं पूर्णतः व्यसनमुक्त हों। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. (डॉ.) नन्दलाल कल्ला (जोधपुर) ने अणुव्रत को आज के परिप्रेक्ष्य में सबसे व्यावहारिक सिद्धांत बताते हुए इसके माध्यम से व्यक्तित्व विकास के परिणामों की व्याख्या की। इस सत्र का संचालन आलोक खटेड़ ने किया।

सायं भोजन के बाद रात्रि आठ बजे से सुपरिचित कवि गजादान चारण के कुशल संयोजन में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सम्मेलन में सहभागी लेखकों-कवियों के अलावा स्थानीय रचनाकारों ने अपनी सुमधुर काव्य रचनाओं से देर रात तक श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किया।

द्वितीय दिवस :

14 अक्टूबर 2009, अणुव्रत लेखक सम्मेलन का दूसरा दिन और इस दिन प्रातः अल्पाहार के बाद 9.30 बजे से प्रथम चर्चा सत्र की शुरुआत हुई, जो 'महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता' विषय पर केन्द्रित थी। सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण नाहटा (बीकानेर) ने की। इस सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा महिलाओं ने सदैव पुरुषों को सशक्त करने का काम किया है। आज नारी हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। सत्र को संबोधित करते हुए जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने कहा भारत की जनसंख्या का 70 प्रतिशत भाग गावों में रहता है, ऐसे में ग्रामीण महिलाओं को ध्यान में रखते हुए कोई नया कार्य सामने आना चाहिए। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. किरण नाहटा (बीकानेर) ने कहा कि केवल आर्थिक सबलता को ही महिला सशक्तीकरण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने उद्बोधन में इस बात की चिंता व्यक्त की कि आज भी महिलाओं की स्थिति ज्यादा ठीक नहीं है। समाज में तीन वृत्तियां होती हैं, कछुआ वृत्ति, केंकड़ा वृत्ति व जटायु वृत्ति। अतः इस विपरीत माहौल में हमें जटायु की तरह अन्याय की खिलाफत करने में सक्षम होना चाहिए। इस सत्र का संयोजन डॉ. शांता जैन ने किया।

द्वितीय दिवस का द्वितीय सत्र हुआ 'वर्तमान युवा पीढ़ी का दिग्भ्रमः अणुव्रत का समाधान' जिसकी अध्यक्षता पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन ने की। विषय प्रस्तुति के रूप में अपना वक्तव्य डॉ. सरोज कुमार वर्मा ने दिया। डॉ. वर्मा ने कहा कि अपने स्वयं को मानने, जानने व पहचानने की क्षमता होनी चाहिए। सिर्फ भौतिक विकास को आधार नहीं मानना चाहिए। मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए अध्यक्षीय उद्बोधन में पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन ने बहुत ही विचारोत्तेजक, प्रभावी व मंत्रमुग्ध वक्तव्य दिया। मुजफ्फर हुसैन ने एक दोहा

''कुआ सबका एक है, पनिहारिन हैं अनेक।

बर्तन सबके अपने-अपने, पानी एक का एक।।''

बोलकर कहा कि विचार भले ही सबके भिन्न-भिन्न हों, पर भावनाएं सब एक हैं। अच्छे संपादकीय की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा संपादकीय में कभी भी निष्कर्ष नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि इससे पाठकों की विचारधारा धारदार नहीं बनती है।

सम्मेलन का अंतिम सत्र 2.30 बजे से डॉ. महेन्द्र कर्णावट के संयोजन में हुआ। इसका विषय था, 'अणुव्रत लेखक मंच की भावी दिशाएं' इस सत्र की अध्यक्षता पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन ने की। जबकि मुख्य अतिथि ई.टी.वी. राजस्थान के मुख्य संवाददाता अनिल लोढ़ा थे। इस सत्र में डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने द्विदिवसीय कार्यक्रमों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तो डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' ने अहिंसा विषयक प्रस्ताव पढ़े, जिन्हें सदन द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए ई.टी.वी. राजस्थान के प्रभारी अनिल लोढ़ा ने कहा आज के दौर में नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना की सख्त जरूरत है। बदलते हुए समाज में किसी भी गलती के लिए सिर्फ मीडिया को दोष देना युक्ति संगत नहीं होगा। भारतीय समाज की तो यह विशेषता है कि वह अपने जहर को भी पचाकर उसे अमृत में बदल देता है। ऐसे कठिन समय में भी अणुव्रत परिवार और अणुव्रत लेखक मंच अपनी जिम्मेदारी को बहुत सार्थकता से निभा रहा है। इस अवसर पर अनिल लोढ़ा ने अपनी प्रसिद्ध कविता

'रोको, इसे ढहने से रोको,
यह ईमारत नहीं,
आदमी है।' सुनाई।

द्विदिवसीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन में डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम (जयपुर), सुरेश पंडित (अलवर), धर्मपाल मैनी (गुड़गांव), डॉ. महेन्द्र कर्णावट (राजसमंद), डॉ. राष्ट्रबंधु (कानपुर), डॉ. प्रद्युम्न शाह (पटियाला), ओमप्रकाश सोनी (लाडनूं), सरोज कुमार वर्मा (मुजफ्फरपुर), इकराम राजस्थानी (जयपुर), डॉ. नंदलाल कल्ला (जोधपुर), डॉ. कृष्णा मोहनोत (जोधपुर), धर्मचंद जैन 'अनजाना', बंशीलाल 'पारस' (भीलवाड़ा), सतीश कुमार साथी (मुजफ्फरपुर), डॉ. किरण नाहटा (बीकानेर), डॉ. मदनलाल केवलिया (बीकानेर), मदन मोहन परिहार (जोधपुर), भंवरलाल 'भ्रमर' (बीकानेर), बनज कुमार 'बनज' (जयपुर), योगेश्वर शर्मा (सरदारशहर), डॉ. जगदीश 'यायावर' (लाडनूं), जीतमल जीत (लाडनूं), गजादान चारण (डीडवाना, शंभुदयाल पाण्डे (जोधपुर), रजनीरमण झा (बीकानेर), रजनीकांत शुक्ल (दिल्ली), नटवर पारीक (डीडवाना), दीनदयाल शर्मा (हनुमानगढ़), डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा (गिलूण्ड), सत्यनारायण 'सत्य' (रायपुर-भीलवाड़ा), बजरंग लाल जेठू, आलोक खटेड़, वीरेन्द्र भाटी मंगल (लाडनूं), फतहलाल गुर्जर अनोखा (कांकरोली), राजेन्द्र स्वर्णकार (बीकानेर) सहित कई लेखक, पत्रकार, साहित्यकार व संपादकों ने अपनी सहभागिता की। सम्मेलन की स्थानीय व्यवस्थाओं में डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' (लाडनूं) जैन विश्व भारती संस्थान का परिवार, अणुव्रत समिति लाडनूं व अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली का विशेष योगदान रहा।

रायपुर (भीलवाड़ा–राजस्थान)

बच्चों में संस्कार निर्माण

● अशोक सहजानन्द ●

हम सभी चाहते हैं कि हमारे बच्चे सर्वगुणसम्पन्न हों, आज्ञाकारी हों, प्रतिभाशाली हों। पर क्या केवल कल्पना करने से ही यह संभव हो सकेगा? कदापि नहीं। इसके लिए हमें करना होगा बच्चों को संस्कारित और संस्कार देने के लिए पहले स्वयं संस्कारित होना पड़ेगा और फिर समय निकालना होगा बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान रखने के लिए, उन्हें संस्कारित करने के लिए।

संस्कार दो प्रकार के होते हैं पूर्वजन्म [illegible] इहलौकिक [illegible] और [illegible] परिवार [illegible] बचपन [illegible] के [illegible] महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक बालक जिसे माता-पिता के सुसंस्कार नहीं मिलते, उसका जीवन कटी-पतंग की तरह हो जाता है जिसे बुराई का एक झोंका ही अपनी ओर खींचकर ले जाता है। वह बालक अश्लील साहित्य पढ़ने में, ब्लू फिल्में देखने में एवं बुरे दोस्तों की संगति में पड़कर अपने जीवन को नारकीय अभिशाप का पर्याय बना लेता है। श्रीकृष्ण चन्द्र खाणी ने अपने एक लेख में लिखा है

''बालक अपने परिवार में जैसा नित्य प्रति देखता है जैसे कार्य उसके अभिभावक करते हैं वैसे ही वह करता है। यदि बालक यह देखता है कि परिवार के सभी सदस्य रात्रि में देरी से सोते हैं और सुबह देरी से जगते हैं तो वह भी देरी से जगने का आदी हो जाता है। जिस परिवार के लोगों में सुबह उठते ही बिना नहाये ही चाय पीने की परम्परा है तो उस परिवार के बालकों में भी यह आदत बन जायेगी। किन्तु जिस परिवार के लोग उठने के पश्चात् पहले नित्य कर्म आदि करते हैं तो बालक भी उसी का अनुसरण करेगा।''

एक बार एक फोटोग्राफर के मन में विचार आया कि वह अपने स्टूडियो में अच्छे सुंदर बालक का चित्र लगावे। अनेक गांवों व नगरों में घूमने के पश्चात् उसे एक गांव में दस वर्षीय बालक सबसे सुंदर लगा। उसने उसके माता-पिता से पूछकर उसका चित्र ले लिया तथा उसे अपने स्टूडियो में लगा दिया। दो दशक पश्चात् उसके मन में विचार आया कि संसार के सबसे कुरूप व्यक्ति का चित्र भी संग्रह कर स्टूडियो में लगाया जावे।

इसके लिए उसे सर्वप्रथम जेलों में जाकर अपराधियों से मिलना पड़ा जो हत्या एवं अन्याय आदि कृत्यों के लिए कारावास भुगत रहे थे। इस शोधन के लिए वह एक जेल में पहुंचा एवं वहां उसने एक युवक को देखा जो समय पूर्व से ही प्रौढ़ और कुरूप लग रहा था तथा वह दुर्गंधयुक्त परिस्थितियों में बैठा था। फोटोग्राफर को लगा इससे कुरूप और वीभत्स व्यक्ति दूसरा नहीं हो सकता। उसने उसका चित्र ले लिया।

फोटो लेने का उद्देश्य जानकर वह व्यक्ति रो पड़ा। कारण पूछने पर उस व्यक्ति ने बताया कि जब वह दस वर्ष का बालक था तब भी एक फोटोग्राफर उसका चित्र उतार कर इसलिए ले गया था कि वह उसे बहुत सुंदर लगा था। मेरे माता-पिता के लाड़-प्यार, उच्छृंखल जीवन के कारण मुझमें सब प्रकार के दुर्गुण आ गये। कुछ वर्ष के बाद ही बच्चे मुझे देखकर डरने लगे, समाज में 'घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। परिणाम स्वरूप प्रतिदिन झगड़ने, चोरी करने का मेरा नियम हो गया और आप आज मुझे इस स्थिति में देख रहे हैं।

आज नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को संस्कारित करने का समाज में एक फैशन चल पड़ा है। यह एक विचारणीय मुद्दा है कि ''नैतिक शिक्षा'' के माध्यम से बच्चों को केवल क्रियाकांडी/धार्मिक ही बना रहे हैं। उनमें नैतिकता का प्रादुर्भाव होता नजर नहीं आता। वस्तुतः बच्चों में नैतिकता प्रादुर्भाव तभी संभव है जब परिवार-जन अपने आचरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत करें। आपके अपने आचरण में नैतिकता नजर आनी चाहिए तो कोई कारण नहीं कि बच्चे संस्कारित न हो। अतः बच्चों को सद्-संस्कार देने के लिए आपको अपने आचरण में सुधार लाकर स्वयं को भी सुधारना होगा।

बी–5/263 यमुना विहार,
दिल्ली–110053

शांति एवं विकास के लिए निशस्त्रीकरण आवश्यक

● डॉ. सोहनलाल गांधी ●

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) के अंतर्गत पिछले 25 वर्षों से विभिन्न देशों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अणुव्रत और अहिंसा को मूल में रखकर अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. सोहनलाल गांधी ने अनेक पत्र-वाचन किये हैं। अणुव्रत की एक अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनी है जिसके फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ ने अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) को एक लोकोपयोगी गैर-सरकारी संगठन के रूप में मान्यता प्रदान की है। कतिपय अवसरों पर अणुविभा प्रतिनिधियों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित गैर-सरकारी संगठनों के वार्षिक सम्मेलनों में अहिंसा-प्रशिक्षण आदि पर कार्यशालाएं आयोजित करने के अवसर भी प्राप्त हुए हैं।

इसी कड़ी में 6 से 8 सितंबर को क्रेकोव (पोलेंड) में तथा 9 से 11 सितंबर को मेक्सिको में आयोजित दो महत्वपूर्ण विश्व-सम्मेलनों में डॉ. गांधी तथा अणुविभा के कार्याध्यक्ष तेजकरण सुराणा ने सहभागिता की।

क्रेकोव (पोलेंड) में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

परम पावन पोप के आध्यात्मिक नेतृत्व में विश्व में विभिन्न धर्म-समुदायों में पारस्परिक मैत्री एवं सौहार्द का वातावरण निर्मित करने हेतु रोम (इटली) स्थित कम्युनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ गत 23 वर्षों से अथक प्रयास कर रहा है। यह संगठन हर वर्ष विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्म-सम्प्रदायों में संवाद स्थापित करने हेतु अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करता है। महान् संत फ्रांसिसी की नगरी असिसि से 1986 से 15वें पोप जॉन पाल (द्वितीय) के प्रेरणास्पद उद्बोधन के साथ ही प्रारंभ इस अंतःसंप्रदाय संवाद का 42वां त्रिदिवसीय सम्मेलन इस बार 6 से 8 सितंबर, 2009 को विश्व की प्रसिद्ध धार्मिक नगरी क्रेकोव (पोलेंड) में आयोजित किया गया। क्रेकोव के आर्कडायसिस एवं कम्युनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ के निमंत्रण पर अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी एवं कार्याध्यक्ष तेजकरण सुराणा ने क्रेकोव में आयोजित इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में सहभागिता की। क्रेकोव नगर परम पावन पोप जॉन पाल (द्वितीय) का जन्म स्थल है। द्वितीय विश्व युद्ध के 60 वर्ष बाद आयोजित इस सम्मेलन में 130 देशों से विभिन्न धर्मों के लगभग 600 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य धर्म-सम्प्रदायों एवं संस्कृतियों में पारस्परिक संवाद स्थापित कर मैत्री को प्रोत्साहित करना था।

डॉ. गांधी ने धर्म संप्रदाय एवं जीवन मूल्य नामक पैनल में आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन पर आधारित 'शांति, समरसता एवं सामाजिक सौष्ठव का जैन मार्ग' विषय पर पत्र वाचन किया तथा परिप्रेक्ष्य में ईश्वर की अवधारणा पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर भी दिया।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में यूनेस्को के संस्कृति विभाग के सहायक महानिदेशक मि. फ्रान्कोहस रिवरी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संवादहीनता को ही धार्मिक कलह का मुख्य कारण बताया। उनके अतिरिक्त क्रेकोव के आर्कबिशप, पोलेंड के विदेश मंत्री तथा बैंक ऑफ फ्रांस के मानद अध्यक्ष ने भी अपने विचार प्रकट किये। समूचा क्रेकोव शहर साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सहिष्णुता की भावना से ओतप्रोत था। इस सम्मेलन में संवाद को व्यापकता प्रदान करने की दृष्टि से विभिन्न तात्कालिक प्रसंगों पर 24 पैनल गठित किये गये, जिनमें विभिन्न धर्मों में निहित शाश्वत मूल्यों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों के इस विशाल अंतर्राष्ट्रीय समागम में सक्षम अनुवादकों ने एक साथ अनुवाद कर विभिन्न भाषा-भाषियों को जोड़े रखा। धार्मिक उन्माद, आतंकवाद एवं आणविक युद्ध के खतरे के साये में आयोजित क्रेकोव सम्मेलन विश्व शांति की दृष्टि से आशा की एक किरण था। इस सम्मेलन में लंदन जैन विश्व भारती के केन्द्र से समणीद्वय प्रसन्नप्रज्ञा एवं रोहितप्रज्ञा विशेष रूप से उपस्थित थीं। समणीद्वय ने जैन प्रार्थना (अर्हत् वंदना) का नेतृत्व किया।

क्रेकोव से डॉ. गांधी एवं सुराणा को मेक्सिकों शहर में संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त गैर-सरकारी संस्थाओं के 62वें अधिवेशन में लाग लेना था। अतः वे कम्युनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ द्वारा

क्रेकोव एवं मेक्सिको यात्रा

क्रेकोव में द्वितीय विश्व युद्ध में मारे गये लाखों व्यक्तियों तथा विशेषकर के.एल. ओस्चविच जो द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा कब्रिस्तान बना था, उसमें दफन नाजी पाशविकता के शिकार अनगिनत लोगों की आत्माओं की शांति के लिए आयोजित विशेष प्रार्थना में सम्मिलित नहीं हो सके। समणीद्वय ने इस समारोह में उपस्थित होकर आचार्य महाप्रज्ञ के विश्व शांति यज्ञ में उल्लेखनीय अवदान की विश्व समुदाय को याद दिलाई।

संयुक्त राष्ट्र गैर-सरकारी संगठनों एवं संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग का 62 वां सम्मेलन

क्रेकोव से प्रस्थान कर हम 8 सितंबर को मेक्सिको शहर पहुंचे। मेक्सिको लेटिन अमेरिकी देशों का महत्वपूर्ण देश है जो प्राचीन संस्कृति एवं पिरामिडों के लिए जाना जाता है। वह अमेरिका के दक्षिणी राज्य टेक्सास के समीप पड़ता है।

वैसे तो गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र के जन्म के साथ ही न्यूयार्क स्थित इसके मुख्यालय में आयोजित होता रहा है, किन्तु उक्त भवन में नवीनीकरण की योजना प्रारंभ हो जाने से 2016 तक इस सम्मेलन को अलग-अलग सदस्य देशों में आयोजित करने का निर्णय किया गया। इस शृंखला में गत वर्ष यह सम्मेलन पेरिस में आयोजित हुआ था तथा इस वर्ष मेक्सिकों में स्वाइन फ्लू के संभावित खतरे के बावजूद इस सम्मेलन में 192 देशों के दो हजार से भी अधिक प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस बार विभिन्न विषयों पर अयोजित होने वाली 24 कार्यशालाओं में 'अणुविभा' द्वारा प्रस्तावित **''अणुव्रत, अहिंसा एवं निशस्त्रीकरण''** पर कार्यशाला आयोजित करने का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। आयोजन समिति को 192 देशों से 500 से अधिक कार्यशालाओं के प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। उसमें आचार्य महाप्रज्ञ के अणुव्रत दर्शन के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत प्रस्ताव का स्वीकृत होना अणुविभा के लिए एक विशिष्ट उपलब्धि रहा। आयोजन समिति ने अणुविभा एवं न्यूयार्क स्थित **यूनाइटेड सिक्ख्स** नामक संस्था को संयुक्त रूप से यह उत्तरदायित्व सौंपा था। अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी को इस कार्यशाला का मोडरेटर (नियामक-अध्यक्ष) नियुक्त किया गया। अणुविभा की ओर से अणुविभा के कार्याध्यक्ष तेजकरण सुराणा तथा **अणुव्रत ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका** के अध्यक्ष किरीट दफ्तरी वक्ता चुने गये। **सिख समुदाय** का प्रतिनिधित्व अमेरिका के जसप्रीत सिंह ने किया।

डॉ. गांधी ने प्रारंभ में अणुव्रत आंदोलन की पृष्ठभूमि, आचार्य महाप्रज्ञ के मिशन तथा भारत-पाक संबंधों के परिप्रेक्ष्य में आणविक निशस्त्रीकरण की संभावना पर प्रकाश डाला। तेजकरण सुराणा ने अहिंसा की शक्ति द्वारा निशस्त्रीकरण एवं आतंकवाद की समाप्ति पर अपना महत्वपूर्ण पत्र वाचन किया। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा विश्लेषित हिंसा के कारणों एवं मानवीय अस्तित्व के लिए अहिंसा की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने अपनी प्रस्तुति का उपसंहार किया। किरीट दफ्तरी ने भगवान महावीर के अनेकांत, अपरिग्रह एवं अहिंसा के संदेश को लक्ष्य कर शांति एवं निशस्त्रीकरण पर अपने विचार रखे। सिख समुदाय के जसप्रीत सिंह ने अहिंसा का प्रबल समर्थन किया तथा इस संदर्भ में सिक्ख गुरुओं की शिक्षाओं का उल्लेख किया। इस कार्यशाला में अनेक देशों के युवक, चिंतक एवं शांतिकर्मी उपस्थित थे। गैर-सरकारी संगठनों के इस 62वें वार्षिक सम्मेलन का मुख्य विषय था **''शांति एवं विकास के लिए तुरंत निशस्त्रीकरण हो।''**

एक अनुमान के अनुसार द्वितीय विश्व युद्ध ने दस करोड़ से भी अधिक लोगों की बलि ली थी। 1989 में बर्लिन दीवार के ढहने के बाद दो महान् शक्तियों में यद्यपि तनाव कम हुआ किन्तु 1990 के बाद सेनाओं के खर्चों में 45 प्रतिशत वृद्धि हुई। 2008 में दुनिया की सरकारों ने शस्त्रों के निर्माण पर 1464 बिलियन डॉलर खर्च किया। इसका अर्थ हुआ कि विश्व के प्रत्येक नागरिक पर 216 डॉलर (दस हजार आठ सौ रुपये) का अतिरिक्त बोझ डाला गया। उक्त राशि से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित 'मिलेनियम गोल्स' की पूर्ति होकर विश्व से गरीबी,

बच्चों का निर्माण तब तक नहीं हो सकता, जब तक माता-पिता स्वयं का बलिदान करना नहीं सीख लेते।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

बेरोजगारी, भुखमरी आदि मिटाई भी जा सकती है। 2008 में हुए सर्वे के अनुसार 'न्यूक्लीयर वैपन स्टेट्स' के पास 23 हजार महाविनाशकारी आणविक अस्त्र मौजूद हैं जिनमें से कुछ चोरी छिपे जेहादी आतंकियों के पास पहुंचने की संभावना है। वस्तुतः, विश्व के सामने सबसे बड़ी समस्या महाविनाशकारी शस्त्रों की होड़ और इन शस्त्रों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी है। इस दृष्टि से गैर-सरकारी संगठनों के इस महा अधिवेशन में आणविक शस्त्रों की समस्या के मुद्दे पर विचार होना स्वाभाविक ही था। यद्यपि आचार्य महाप्रज्ञ का विचार है कि स्थायी शांति के लिए केवल शस्त्र नष्ट करने से काम नहीं चलेगा, हमें मनुष्य के आंतरिक रूपांतरण के लिए अहिंसा प्रशिक्षण का वैश्विक अभियान भी साथ-साथ चलाना होगा ताकि पुनः कोई हिटलर या चंगेज खां पैदा न हो जो ऐसे शस्त्रों का पुनः निर्माण कर महाविनाशकारी शस्त्रों का जखीरा पैदा कर सके।

विभिन्न संगठनों ने निःशस्त्रीकरण एवं शस्त्र नियंत्रण, आणविक शस्त्र चोरी, मानवीय सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका, शांति की संस्कृति, शस्त्र मुक्त विश्व परिदृश्य, विकास एवं शांति का नया आदर्श, विश्व के युवक और युद्ध आदि विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित कीं। इनके अतिरिक्त आणविक शस्त्रों को शून्य स्तर पर लाना, शस्त्रजनित हिंसा के स्रोतों को दूर करना, मानवीय विकास तथा वैश्विक सुरक्षा, वैश्विक विकास एवं सुरक्षा के लिए नई चुनौतियां एवं परिप्रेक्ष्य विषयों पर चार गोलमेज सम्मेलन भी आयोजित किये गये।

9 सितंबर 09 को प्रातः 10 बजे मेक्सिकों के विदेश मंत्रालय के मुख्य भवन में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बन की मून ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कुछ महीनों बाद शस्त्रों की कमी करने के लिए रूस एवं अमेरिका का शिखर सम्मेलन आयोजित हो रहा है जो शस्त्र मुक्त विश्व के निर्माण की दिशा में पहला चरण है। उन्होंने कहा कि गैर-सरकारी संगठनों की बुलंद आवाज को आणविक देश अधिक समय तक दबा नहीं सकेंगे। संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा के अध्यक्ष एसकोटो बुकमेन, मेक्सिकन चिंतक मरीन बोस्क तथा 1957 की नोबल पुरस्कार विजेता जूडी विलियम्स ने, जो लैंड माइन्स को प्रतिबंधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान की संस्थापक भी है, आणविक शस्त्रों पर अविलंब प्रतिबंध की मार्मिक अपील की। सुश्री जूडी विलियम्स का भाषण सचमुच आत्मा की आवाज था, जिसे महासचिव बन की मून सहित हजारों श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर सुना।

डॉ. सोहनलाल गांधी एवं तेजकरण सुराणा ने इस अवसर पर अमेरिकी स्कूलों में अहिंसा प्रशिक्षण एवं अणुव्रत आचार संहिता अभियान को अमेरिका में व्यापक बनाने के उपायों पर किरीट दफ्तरी से विस्तृत चर्चा की। दफ्तरी 'जेना' के अध्यक्ष रह चुके हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त गैर-सरकरी संगठनों का नेटवर्क आचार्य महाप्रज्ञ के मिशन की वैश्विक प्रभावना की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण मंच है। तेजकरण सुराणा ने इस अवसर पर अनेक संगठनों के प्रतिनिधियों से व्यापक जनसंपर्क कर उन्हें अणुव्रत के लक्ष्यों से परिचित कराया। मेक्सिको सम्मेलन में अणुविभा की सशक्त उपस्थिति रही। 9/11 की आतंकी घटना विश्व के इतिहास का एक काला पृष्ठ है तथा हर वर्ष सम्पूर्ण विश्व में इसे एक त्रासदी के रूप में याद किया जाता है। सम्मेलन के तीसरे दिन उस त्रासदी को याद कर अनेक प्रतिनिधियों की आंखें गीली हो गईं। सम्मेलन की समाप्ति के साथ ही 2010 के वार्षिक अधिवेशन के स्थान चयन पर भी चर्चा शुरू हो गई। सुराणा तथा किरीट दफ्तरी चाहते हैं कि अगला अधिवेशन भारत में आयोजित हो। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ स्थित भारतीय मिशन और अन्य गैर-सरकारी संगठनों का समर्थन प्राप्त करना आवश्यक होगा। हां! यदि यह संभव नहीं भी हुआ तो भी यूएनडीपीआई एनजीओ का अगला वार्षिक अधिवेशन (2010) के भारत में होने की संभावना बन सकती है।

मेक्सिको की संस्कृति से रूबरू हुए बिना वहां की यात्रा पूरी नहीं मानी जाती; अतः उस दिन प्रतिनिधियों ने मेक्सिको के विश्व प्रसिद्ध पिरामिडों का अवलोकन किया। एक पिरामिड मून पिरामिड तथा दूसरा सन पिरामिड के रूप में प्रसिद्ध है। इन पिरामिडों का निर्माण काल ईसा पूर्व 250 तथा ईसा बाद 500 वर्ष का है।

टेक्सास में दो दिन

मेक्सिको के तीन दिन के अविस्मरणीय प्रवास के बाद यात्रा का अगला पड़ाव था टेक्सास की राजधानी डलास तथा वहां से 300 मील दूर स्थित किरीट भाई का छोटा किन्तु सुंदर शहर **वेको,** जहां वे 1982 से अमेरिकी नागरिक के रूप में रह रहे हैं।

11 सितंबर शाम को डॉ. गांधी एवं सुराणा किरीट भाई के साथ डलास पहुंचे। मेक्सिको आने के पहले किरीट भाई ने अपनी कार हवाई अड्डे पर ही पार्क कर रखी थी। 300 किमी का सड़क सफर 2 घंटे में तय कर अणुविभा प्रतिनिधि मध्य रात्रि वेको शहर पहुंचे। शहर के कोलाहल

से दूर चारों ओर हरियाली से घिरे झील के किनारे स्थित किरीट भाई का निवास-स्थल सब दृष्टियों से रमणीय है। 12 सितंबर को प्रातः किरीट भाई के घर एक सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें मुम्बई की बहिन तरला दोशी ने जैन दर्शन के गूढ़ तत्वों को सरल एवं रुचिपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया। निःस्संदेह, तरला दोशी का वक्तव्य अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा देता है। उपस्थित लोग अत्यधिक प्रभावित थे। पिछले तीन दशकों में उत्तरी अमेरिका में जैन सांस्कृतिक मूल्यों का जो पुनरुत्थान हुआ है, उसमें आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्याएं-समणीवृंद तथा तरला बहिन जैसी अनेक जैन प्रबुद्ध कार्यकर्ताओं का योगदान रहा है।

वेको में दो रात्रि के प्रवास के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ के मिशन को पश्चिम में कैसे प्रस्तुत किया जाए, इस पर अणुविभा प्रतिनिधियों ने किरीट भाई से विस्तृत विचार-विमर्श किया। यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि किरीट भाई का सारा परिवार जैन दर्शन में न केवल गहन रुचि रखता है, अपितु जैन जीवन शैली का भी हृदय से पालन करता है। उनकी पत्नी डॉ. प्रमिला दफ्तरी वेको शहर की प्रसिद्ध डॉक्टर हैं। अणुविभा प्रतिनिधियों को 13 सितंबर को डलास से भारत के लिए रवाना होना था। उन्हें छोड़ने के लिए किरीट भाई सड़क मार्ग से डलास आये। डलास टेक्सास की राजधानी है तथा यही शहर है जहां छठे दशक में अमेरिका के लोकप्रिय पैतीसवें राष्ट्रपति जेकेएफ केनेडी की हत्या हुई थी। वह स्थान जहां उन्हें गोली लगी, अब केनेडी-स्मृति-स्थल में परिवर्तित कर दिया गया है। किरीट भाई ने डॉ. गांधी एवं सुराणा को महान् नेता केनेडी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर दिया। यद्यपि इस घटना को अमेरिका में घटित हुए कई दशक व्यतीत हो गये, लेकिन जब कोई इस स्मारक-स्थल पर पहुंचता है तो उसकी आंखें सहज ही गीली हो जती हैं। 22 नवंबर सन् 1963 में घटित इस अप्रत्याशित त्रासदी से सम्पूर्ण विश्व सन्न रह गया था। तीनों देशों की यात्रा सम्पन्न कर फ्रेंकफर्ट होते हुए हम पुनः भारत पहुंचे।

अणुविभा केन्द्र
मालवीय नगर जयपुर (राजस्थान)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- विश्व में जितने कुपोषित बच्चे हैं उनकी एक तिहाई संख्या भारत में है। भारत की उल्लेखनीय आर्थिक विकास के बावजूद देश में तीन साल तक की उम्र के लगभग 4.6 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं।

- भारत में कुपोषित बच्चों की संख्या लगभग छः करोड़ है। पांच वर्ष से कम उम्र के आधे बच्चे कम वजन के हैं। अत्यधिक खराब हालत मध्यप्रदेश, झारखंड, बिहार एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में है। राजस्थान में 44 प्रतिशत बच्चे कम वजन के हैं।

- शहरी इलाकों के बच्चों में कम वजन के बच्चों का प्रतिशत 36.3 तथा ग्रामीण इलाकों में 45.9 प्रतिशत है। मिजोरम, सिक्किम व मणिपुर में कुपोषित बच्चों की संख्या सबसे कम है, यहां औसतन 22 फीसदी बच्चे कम वजनी हैं। देश में प्रतिवर्ष ढाई करोड़ बच्चों का जन्म होता है।

- भारत में 24 प्रतिशत बच्चों को जन्म के पहले घंटे के अंदर मां का दूध मिलता है। इसकी वजह देश में फैली भ्रांत धारणाएं भी हैं। कई बार माताएं इतनी कुपोषण ग्रस्त होती है कि उन्हें दूध ही नहीं उतरता।

- राजस्थान में 94 प्रतिशत बालिकाएं खून की कमी से पीड़ित हैं। खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाने के लिए प्रदेश की पांच लाख बालिकाओं को सालभर फोलिक एसिड की गोलियां दी जा रही है।

- देश के लगभग 53 फीसदी बच्चे यौन शोषण के शिकार हैं। यौन शोषण 5 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होता है, 10 वर्ष की उम्र में ज्यादा और 12-15 वर्ष की उम्र में सबसे ज्यादा होता है।

- देश में 15 वर्ष या अधिक उम्र के ऐसे लोग जिनके पास कोई तकनीकी शिक्षा, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट हो, आबादी के दो प्रतिशत हैं।

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

आदिवासी क्षेत्र में जीवन विज्ञान के प्रयोग

• भरत भाई शाह •

समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा, समणी अमितप्रज्ञा, समणी रतनप्रज्ञा एवं समणी मयंकप्रज्ञा ने गुजरात के बलसाड़ जिले के कपराड़ा तालुका के वनवासी बच्चों एवं शिक्षकों के बीच जीवन विज्ञान प्रशिक्षण हेतु 19 से 24 फरवरी 2009 तक छः दिवसीय सघन यात्रा की। यात्रा के दौरान 11 विद्यालयों के लगभग 4000 बच्चों तथा 143 शिक्षकों को जीवन विज्ञान जानने-सीखने का अवसर मिला। जिसमें उत्तर बुनियादी स्कूल कपराड़ा, आश्रम शाला कपराड़ा, शबरी छात्रालय, शाह जी.एम.डी. सार्वजनिक कॉलेज मोटापोंढ़ा, स्वामी नारायण स्कूल मोटापोढ़ा, श्री सुभाषचन्द्र बोस सार्वजनिक हाई स्कूल कोठार, आश्रमशाला, नारवड उत्तर बुनियादी आश्रमशाला सुथार पाडा, आश्रमशाला लवकर एवं एन.आर. रावत सार्वजनिक माध्यमिक शाला नानापोढ़ा आदि शामिल है। इस दौरान 200 किमी. की यात्रा आसपास के क्षेत्रों में हुई।

प्रशिक्षण के दौरान समणी निर्मलप्रज्ञा ने बताया कि जीवन विज्ञान के बिना शिक्षा अधूरी है। विद्यालयों में शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण तो दिया जा रहा है परन्तु मानसिक एवं भावनात्मक प्रशिक्षण से विद्यार्थीजगत वंचित मस्तिष्क का गायां पटल तो विकसित हो रहा है परन्तु दायां पटल अविकसित रह जा रहा है। समणी अमितप्रज्ञा ने विद्यार्थी को गुस्सा शांत रखने और स्मृति विकास के प्रयोग, ज्ञानमुद्रा, महाप्राण ध्वनि, संकल्प, श्वास प्रेक्षा, ज्योतिकेन्द्र प्रेक्षा एवं ज्ञान केन्द्र प्रेक्षा के प्रयोग कराये। समणीवृंद द्वारा जीवन हम आदर्श बनाएं, अच्छे बच्चे हो तैयार गीतिकाओं की प्रस्तुति दी गयी।

शबरी छात्रालय कपराडा की 100 कन्याओं को प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान का साप्ताहिक प्रशिक्षण दिया गया। समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा ने बालिकाओं को ध्यान-योग अनुप्रेक्षा के विविध प्रयोग करवाये। साथ ही अणुव्रत गीत, मंगल भावना, दीर्घश्वास प्रेक्षा आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

आदिवासी बाहुल अंचल की 200 किलोमीटर की यात्रा में अणुव्रत समिति के अंकेशभाई शाह, महेन्द्र भाई एवं प्रशिक्षक राकेश पाण्डेय सहयोगी रहे। अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष बालूभाई पटेल, भरत भाई शाह, भानूभाई जोशी, प्रवीण भाई, सुधा बेन आदि का विशेष सहयोग रहा। महासभा के उपाध्यक्ष चंपक भाई मेहता, सूरत के मैनेजिंग ट्रस्टी बाबूलाल भोगर, ट्रस्टी शैलेश भाई झवेरी, राजूभाई कोठारी, सभा के उपाध्यक्ष अर्जुनलाल मेड़तवाल, सभा के पूर्व अध्यक्ष विनोद बांठिया, जीवन विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष किशनलाल मादरेचा, अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष सुवालाल बोलिया आदि भी इस यात्रा में समय-समय पर उपस्थित रहे।

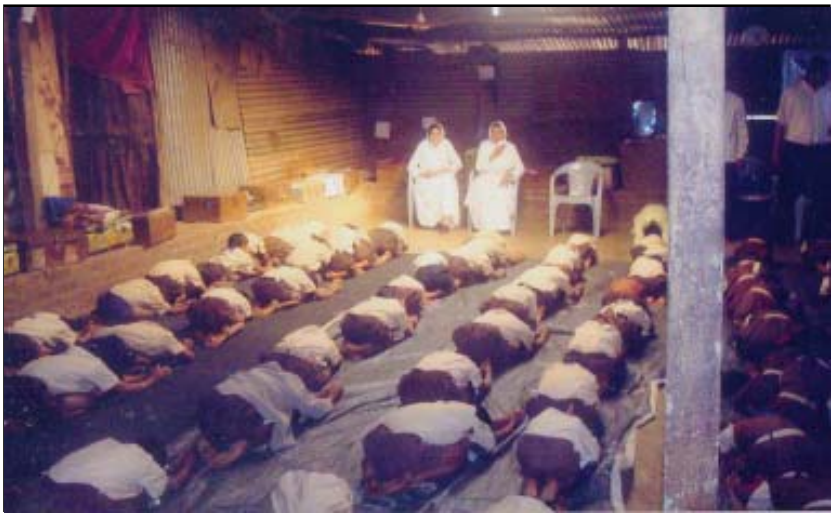

इन बच्चों को इतिहास ने नहीं रखा याद

• रीतेश पुरोहित •

आपने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की बहादुरी के किस्से तो बहुत सुने होंगे, लेकिन क्या आप लक्ष्मीबाई की भतीजी वीरांगना तपस्विनी के बारे में जानते हैं। उन्होंने महज 18 साल की उम्र में ही 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया था। इतना ही नहीं, नेपाल में जाकर बंदूकों का कारखाना बनाया और बंगभंग आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

तपस्विनी जैसे ही सैकड़ों युवा और बच्चे हैं, जो देश की आजादी के लिए शहीद हुए, लेकिन इतिहास उन्हें याद नहीं रख पाया। ऐसे ही शहीदों को गुमनामी के अंधेरे से दूर निकालकर लोगों के दिलोदिमाग तक पहुंचाने के लिए लाल किले में एक प्रदर्शनी लगी हुई है। लोगों में भी इसके प्रति काफी उत्साह देखा जा रहा है। खास बात यह है कि इनमें से अधिकतर पेंटिंग्स को खून से बनाया गया है।

इस प्रदर्शनी को लगाने का श्रेय जाता है 73 साल के रवि चंद्र गुप्ता को, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और शहीदों के बारे में कई किताबें लिखी हैं। गुप्ता बताते हैं कि आज की पीढ़ी शहीदों के नाम पर महात्मा गांधी, नेहरू, भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे गिने-चुने नामों के बारे में ही जानती है, क्योंकि उन्हें स्कूली किताबों में केवल इन महापुरुषों के बारे में ही पढ़ाया जाता है। इतिहास में ऐसे सैकड़ों बच्चों के बारे में कोई जिक्र नहीं मिलता, जो छोटी-सी उम्र में ही देश के लिए मर मिटे। युवा पीढ़ी को ऐसे ही शहीदों के बारे में जानकारी देने के लिए मैं पिछले कई सालों से अध्ययन कर रहा था। इसके लिए मैं देश के अलग-अलग राज्यों में गया और इन बच्चों के बारे में जानकारी जुटाई। इन बच्चों और शहीदों के बारे में मैंने कई किताबें भी लिखी हैं और अब यह प्रदर्शनी लगाई है।

खून से पेंटिंग्स बनाने के बारे में गुप्ता रंगून में दिए गए नेताजी सुभाष चंद्र बोस के उस उद्‌बोधन की याद दिलाते हैं, जिसमें नेताजी ने लोगों से आह्वान किया था कि वे देश की आजादी का संकल्प लेने के लिए बनाए गए शपथ-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर करें। गुप्ता कहते हैं कि नेताजी को मेरी तरफ से यही श्रद्धांजलि है। उन्होंने अपने खून से ऐसी करीब 100 पेंटिंग्स बनाई थीं। वह बताते हैं कि अब 73 साल की उम्र में मेरे लिए खून से पेंटिंग्स बनाना मुमकिन नहीं है, लेकिन अब मेरे एक अन्य साथी गुरूदर्शन सिंह बिंकल ने यह बीड़ा उठाया है। गुरूदर्शन के रक्त से बनी कई पेंटिंग्स भी इस एग्जिबिशन में देखी जा सकती हैं। यह प्रदर्शनी 31 नवंबर तक रहेगी।

सौजन्य : नवभारत टाइम्स : 25 अक्टूबर 09

कैसे रुके

भ्रष्टाचार

?

शिष्टाचार बन रहे नासूर भ्रष्टाचार

से जुड़े हर प्रश्न को समाहित करता अणुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक।

रचनाकारों, की तथ्यपरक रचनाएं एवं पाठकों के विचार

31 दिसंबर 2009 तक सादर आमंत्रित।

बच्चों का चिर-परिचित संसार

• शकुन्तला कालरा •

पुस्तक : दिन आए फिर छुट्टी वाले
लेखक : सत्यनारायण 'सत्य'
पृष्ठ : 80 मूल्य : 100 रुपये
प्रकाशक : ग्रंथ विकास, सी-13, राजा पार्क, आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान)

बच्चों के प्रिय विषयों से सजी 55 कविताओं का संग्रह ''दिन आए फिर छुट्टी वाले'' बाल साहित्यकार सत्यनारायण 'सत्य' की सद्यः प्रकाशित पुस्तक है। नवोदित युवा कवि की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित चुनिन्दा रचनाओं का यह संकलन राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सहयोग से प्रकाशित है। इसमें बच्चों का चिरपरिचित भाव-संसार है। उनके आसपास का परिवेश है। उनके प्रिय त्योहार हैं जो उन्हें आनंद प्रदान करते हैं। पशु-पक्षियों एवं तारे-सूर्य-चंदा आदि प्रकृति के उपकरण हैं। संकलन की सभी कविताएं परम्परागत विषयों पर केन्द्रित हैं। विषय पुराने हैं किन्तु अभिव्यक्ति का अंदाज और कल्पना नवीन है। 'नया साल' की अनूठी कल्पना देखिए जहां बिल्ली मौसी चूहे जी को नववर्ष की शुभकामनाओं का कार्ड भेजती है और उसे अपने घर दावत के लिए निमंत्रित करती है

'नए साल पर पार्टी है तुम,
मेरे घर पर आ जाना।
साथ तुम्हारे चुहिया रानी,
भाई भतीजे को भी लाना।।

इसी प्रकार शेर की शादी में चूहे का नाचना एक बड़े भाई की शादी पर छोटे भाई का नाचना है

शेर की शादी में चूहा,
नाच रहा था जोरों से।
मेरे भाई की शादी है,
बता रहा था औरों से।।

पर्व-त्योहार की अनेक कविताएं हैं राखी, दीवाली, होली, गणतंत्र, क्रिसमस-डे आदि की अनेक कविताएं हैं। दीपावली का त्योहार अंधकार से लड़ने की प्रेरणा देता है

'अंधियारे से अब नहीं डरना,
नन्हें दीप यही सिखलाते।'

इसी प्रकार होली प्यार-मोहब्बत का संदेश लेकर आई है इस दिन पुराना भेद-भाव, वैर-वैमनस्य भूलकर सब एक प्रेम के रंग में रंग जाते हैं

'नहीं कहीं है आज लड़ाई,
रंग-बिरंगी होली आई।

गणतंत्र-दिवस पर लहराता तिरंगा आजादी की कहानी कहता है और देश के किशोर और युवाओं को देश पर मिटने के जज्बात जगाता है

गणतंत्र दिवस फिर आया है,
तिरंगा फिर लहराया है।
अमर रहे गणतंत्र हमारा,
एक स्वर में नारा है।
देश की खातिर हम मिट जाएं,
यह संकल्प हमारा है।

क्रिसमस त्योहार पर सेन्टा-क्लॉज का बच्चों के लिए टॉफी, बिस्किट, मिठाई तथा अनेक खिलौनों का लाना बच्चों को इतना भाता है कि वे चाहते हैं वह रोज़-रोज़ आए

हम बच्चों के खूब दुलारे,
सांता क्लॉज हैं प्यारे-प्यारे।
दाढ़ी वाले सांताजी, तुम रोजाना क्यों नहीं आते हो।

'छुट्टियों के दिन' मौज-मस्ती के दिन हैं जो बिना अपवाद हर बच्चे को भाते हैं। नानी का गांव हो, पीपल वाली छांव हो तो भला छुट्टियां किसको नहीं भायेंगी

नानी के फिर गांव चलें,
पीपल वाली छांव चलें।
इमली केरी आम खाएं,
छुट्टी वाली धूम मचा दें।

बच्चे जहां छुट्टियों का आनंद पूरे मन से लेते हैं वहां छुट्टियों के बाद पढ़ाई को भी खूब मन लगाकर करने का उत्साह रखते हैं

नहीं मिलेगा अब आराम,
होमवर्क फिर सुबह शाम।
अब तो मिलकर खूब पढ़ेंगे,
समय नहीं अब लड़ाई का।
आया मास जुलाई का,
छुट्टियों की विदाई का।

संकलन की कविताएं जहां परिपाटी-बद्ध विषयों में सिमटी हैं, वहां एक दोष और भी है। अनेक कविताओं में पुनरुक्ति दोष है। शीर्षक भी वही है। भाव भी वही।

प्रस्तुत संकलन में दीपावली पर आठ कविताएं हैं तो होली पर सात। यानी कुल 55 कविताओं में से 15 कविताएं इन दो त्यौहारों पर हैं। बेशक ये बच्चों के प्रिय त्यौहार हैं किन्तु विषय में अनुपात भी अपेक्षित है, जिसकी ओर कवि को ध्यान आवश्यक है।

बच्चों के लिए जिस सरल और अभिद्याप्रधान भाषा-शैली की अपेक्षा है, वह सर्वत्र विद्यमान है। कविताओं की भाषा बालोपयोगी है। बच्चों की बोलचाल की भाषा है। जैसे 'मत ना अब तुम देर लगाना।'

लेखक बाल साहित्य में अपनी पहचान बनाने में निरंतर सक्रिय हैं। बाल साहित्य में शोधरत सत्यनारायण 'सत्य' काव्य सृजन में भी लोकप्रिय होंगे ऐसा विश्वास है। पुस्तक का आवरण सुंदर है। मूल्य भी उचित है। बच्चे इन कविताओं का आनंद लेंगे।

एन.डी.–57, पीतमपुरा, दिल्ली–88

अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति : 1 नवम्बर 2009 – 31 अक्टूबर 2011

अणुव्रत महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने प्रदत्त अधिकारों के अंतर्गत अणुव्रत महासमिति की नवगठित कार्यसमिति की निम्नानुसार घोषणा की है–

1.	संरक्षक	डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमंद
2.	अध्यक्ष	श्री निर्मल एम. रांका	कोइम्बटूर
3.	उपाध्यक्ष	श्री जी.एल. नाहर	जयपुर
4.	उपाध्यक्ष	श्री लोकमान्य गोल्छा	काठमांडू
5.	उपाध्यक्ष	श्री जुगराज नाहर	चैन्ने
6.	उपाध्यक्ष	श्री अर्जुन बाफना	मुम्बई
7.	महामंत्री	श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
8.	संयुक्तमंत्री	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली
9.	संयुक्तमंत्री	श्री सिद्धार्थ शर्मा	बैंगलोर
10.	उपमंत्री	डॉ. बी.एन. पांडेय	दिल्ली
11.	अर्थमंत्री	श्री रतनलाल सुराणा	दिल्ली
12.	शिक्षामंत्री	श्रीमती राज गुनेचा	दिल्ली
13.	संगठन मंत्री	श्री डालचंद कोठारी	मुम्बई
14.	संगठन मंत्री	श्री एम. गौतम बोहरा	चैन्ने
15.	संगठन मंत्री	श्री जवेरीलाल संकलेचा	अहमदाबाद
16.	संगठन मंत्री	श्री भूपेन्द्र मूथा	बैंगलोर
17.	प्रचार मंत्री	श्री ललित गर्ग	दिल्ली
18.	सदस्य	श्री मगन जैन	तुषरा
19.	सदस्य	डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'	जयपुर
20.	सदस्य	प्रो. देवेन्द्र जैन	हिसार
21.	सदस्य	श्री सरदार अली पड़िहार	बीकानेर
22.	सदस्य	श्री जे. गौतम सेठिया	चैन्ने
23.	सदस्य	श्री प्रसन्न भंडारी	हैदराबाद
24.	सदस्य	डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी	लाडनूं
25.	सदस्य	श्री सुखबीर सिंह सैनी	दिल्ली
26.	सदस्य	प्रो. जयप्रकाशम	मदुराई
27.	सदस्य	श्री आर.एफ. निरलकट्टी	धारवाड़
28.	सदस्य	श्री मीठालाल भोगर	सूरत
29.	सदस्य	श्री तनसुखलाल बैद	पटना
30.	सदस्य	श्री धनराज तातेड़	हिरियूर
31.	सदस्य	श्री गोकुलचंद भंडारी	चैन्ने
32.	सदस्य	श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर
33.	सदस्य	श्री हंसमुख भाई मेहता	मुम्बई
34.	सदस्य	श्री ओम बांठिया	बालोतरा
35.	सदस्य	श्री अर्जुन मेड़तवाल	सूरत
36.	सदस्य	श्री अनिल रांका	सूरतगढ़
37.	सदस्य	श्रीमती माला कातरेला	चैन्ने
38.	सदस्य	श्रीमती लक्ष्मी मित्तल	गोविंदगढ़
39.	सदस्य	श्रीमती डॉ. कृष्णा मोहनोत	जोधपुर
40.	सदस्य	श्रीमती कुसुम लूणिया	दिल्ली
41.	सदस्य	श्रीमती आशा नीलू टांक	जयपुर

स्थायी आमंत्रित

- **परामर्शद्**

1.	श्री मधुकर लेले	दिल्ली
2.	डॉ. छगनलाल शास्त्री	सरदारशहर
3.	श्री के. एल. जैन	दिल्ली
4.	श्री सिद्धराज भंडारी	जयपुर
5.	श्री राजेन्द्र सेठिया	बाड़मेर
6.	श्री सुरेन्द्र जैन	भिवानी
7.	श्री कैलाश मानव	उदयपुर
8.	श्री ए.के. मेहता	मुम्बई

- **पदेन**

1.	श्री संयोजक	तेरापंथ विकास परिषद, दिल्ली
2.	श्री प्रबंध न्यासी	अ.भा. अणुव्रत न्यास, दिल्ली
3.	श्री अध्यक्ष	अणुविभा, राजसमंद
4.	श्री प्रबंध न्यासी	जय तुलसी फाउंडेशन, दिल्ली
5.	श्री अध्यक्ष	दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति, दिल्ली
6.	श्री अध्यक्ष	नेपाल अणुव्रत समिति, काठमांडू
7.	श्री अध्यक्ष	राज. प्रादेशिक अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा
8.	श्री अध्यक्ष	पश्चिम बंगाल अणुव्रत समिति, कोलकाता

- **विशेष आमंत्रित**

1.	श्री बालूभाई पटेल	सूरत
2.	श्री महेन्द्र धारीवाल	रायपुर
3.	श्री ठाकरमल सेठिया	जलगांव
4.	श्री मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
5.	श्री ज्ञानचंद जैन	गुवाहाटी
6.	श्री गणेश डागलिया	उदयपुर
7.	श्री ज्ञानचंद कांठेड़	भीलवाड़ा
8.	श्रीमती निर्मला बैद	हैदराबाद
9.	श्रीमती पुष्पा कर्णावट	राजसमंद

नई दिल्ली, 26.10.2009 ***– निर्मल एम. रांका***

आचार्य तुलसी का 96वां जन्मोत्सव : त्रिदिवसीय कार्यक्रम

नैतिकता विहिन धर्म मुझे स्वीकार नहीं : आचार्य महाप्रज्ञ

मुख्य अतिथि लोकेन्द्र सिंह शेखावत जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति अपने विचार व्यक्त करते हुए

लाडनूं 20 अक्टूबर। जैन विश्व भारती लाडनूं (आचार्य तुलसी की कल्पना के फूल) में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आचार्य तुलसी के 96वें जन्मोत्सव के अवसर पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम 20-22 अक्टूबर 2009 तक आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विशाल जनमेदनी ने भाग लिया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा धर्म का मूल नैतिकता, प्रामाणिकता है। जिसकी पृष्ठभूमि में इनका अभाव है तो मैं उस धर्म को मानने के लिए तैयार नहीं हूं। आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा नैतिकता एवं मानवीय एकता के सन्दर्भ में विलक्षण कार्य किया। आज देख सकते हैं कि 20वीं सदी में मानवीय एकता का कार्य करने वालों में आचार्य तुलसी का प्रथम पंक्ति में नाम आता है। आचार्य तुलसी मानव धर्म के प्रवक्ता थे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत के निर्देशक तत्त्वों की व्याख्या करते हुए कहा व्यक्तिगत संग्रह और व्यक्तिगत उपभोग की सीमा होती तो अमेरिका में आर्थिक मंदी नहीं आती। इस वैश्विक आर्थिक मंदी का समाधान व्यक्तिगत संग्रह को सीमा एवं व्यक्तिगत उपभोग की सीमा करने से संभव होता है। वर्तमान में धर्म ग्रन्थों और पंथों में सीमित हो गया है। जो धर्म बाजार में, जीवन व्यवहार में न आये वह धार्मिक काम का हो सकता है। आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक तुलसी विचार दर्शन एवं भिक्षु विचार दर्शन का भी उल्लेख किया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने गुरुदेव तुलसी को युग प्रवर्तक आचार्य बताते हुए कहा आचार्य तलुसी ने अणुव्रत रूपी जिस धर्म का प्रवर्तन किया है वह जाति विशेष के लिए नहीं सम्पूर्ण मानवता के लिए है। जब तक मानव जाति रहेगी तब तक अणुव्रत का मूल्य रहेगा। वर्तमान दुनिया में जितना भय का वातावरण है उतना कभी नहीं था। पुराने जमाने में भी युद्ध होता था, पर कुछ नियमों के साथ। निहत्थों को नहीं मारा जाता था। पर आज लगता है यह दुनिया निहत्थों को मारने वाली दुनिया हो गई है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा दुनिया में अनैतिकता, हिंसा आदि अपराध बढते हैं तो प्रकृति अपने आप किसी न किसी महापुरुष को अवतरित कर देती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा मानवीय एकता का कार्य किया। क्योंकि इंसान से प्यार करना सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अगर मुझे कोई कहे कि भगवान की पूजा करोगे या इंसान से प्यार, तो मैं भगवान की पूजा को छोड़ इंसान से प्यार करने को महत्त्व दूंगा। क्योंकि प्राणिमात्र से प्यार करने में सबसे बड़ी अहिंसा है। आचार्य तुलसी 20वीं सदी के संत आभूषण हैं।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। उनमें जितनी कठोरता थी उतनी ही कोमलता भी थी। उन्होंने जिस तरह का जीवन जीया, जीवन में जो कुछ किया वह एक महान साधक ही कर सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री ने आचार्य तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानने के लिए उनकी आत्मकथा आईना बनकर प्रस्तुत है। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित आचार्य तुलसी की आत्मकथा का 18, 19 एवं 20वां भाग विमोचित हुआ। इन खण्डों को एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन के अध्यक्ष गोविंदलाल सरावगी ने आचार्य प्रवर को विमोचन हेतु समर्पित किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा मेरू की ऊंचाई एवं सागर की गहराई नापना दुरूह है। वैसे ही आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को नापना भी दुरूह है। गुरुदेव तुलसी ने साधारण परिवेश में जन्म लेते हुए भी असाधारण कार्य किये।

मुख्य अतिथि एवं जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति लोकेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा इंसान को अच्छा इंसान बनाने का कार्य किया। आचार्य महाप्रज्ञ बहुत बड़े दार्शनिक हैं।

अजमेर दरगाह एवं दरबान अजुंमन कमेटी के अध्यक्ष गुलाबनबी कीबरिया ने आचार्य तुलसी के संदेश को अमल करने की जरूरत बताई। साथ ही इस प्रकार के भाईचारे का संदेश देने वाले कार्यक्रमों में बार-बार हाजिर होने की इच्छा जाहिर की।

डॉ. बनवारीलाल गौड़ ने आचार्य तुलसी को आयुर्वेदाचार्य बताते हुए कहा उनके साहित्य में जगह-जगह आयुर्वेद के सिद्धांत मिलते हैं। आचार्य तुलसी ज्ञान के उर्जस्वी स्रोत थे।

प्रभात फेरी का आयोजन

आचार्य तुलसी के 96वें जन्म दिवस के अवसर पर प्रातःकाल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी ऋषभ द्वार से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए जैन विश्व भारती पहुंची। इसमें सभा, महिला मण्डल, कन्या मण्डल और युवक परिषद के कार्यकर्ताओं ने उद्घोष व जयकारों के साथ आचार्य तुलसी को याद किया।

अणुव्रत के बिना लोकतंत्र स्वस्थ नहीं रह सकता

द्वितीय दिवस

लाडनूं 21 अक्टूबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती में आचार्य तुलसी के 96वें जन्म दिवस पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन उपस्थित श्रद्धालुओं एवं राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक विरेन्द्र बेनीवाल, चुरू सांसद रामसिंह कस्वा, रतनगढ़ विधायक राजकुमार रिणवा, पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री सुभाष महरिया एवं अनेक राजनेताओं को संबोध प्रदान करते हुए कहा अणुव्रत के बिना लोकतंत्र स्वस्थ नहीं रह सकता। संसद एवं विधायिका लोकतंत्र के बड़े स्तंभ हैं। इन दोनों पर गहरा चिंतन करें तो देश का कायाकल्प हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने गुरुदेव तुलसी को देश के चरित्र को व्यापक बनाने वाले महापुरुष बताते हुए कहा आचार्य तुलसी के सामने मानव और मानवता ही रहते थे। उन्होंने राजनीति सामाजिक, शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य किया। आचार्य तुलसी ने आजादी के बाद चिंतन किया कि सत्ता हाथ में आ रही है। सत्ता के लिए दौड़ रहेगी, ऐसी स्थिति में नैतिकता कमजोर पड़ जायेगी। इस चिंतन के साथ नैतिकता को बल देने के लिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रारंभ किया। जब तक सरकार और समाज जनता की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा चिकित्सा एवं सुरक्षा पर ध्यान नहीं देगा, तब तक समस्या का समाधान नहीं हो सकता। आज पूरी दुनिया को आचार्य तुलसी की जरूरत है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से मानवधर्म को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उन्होंने राष्ट्रपति से लेकर गरीबी-रेखा से नीचे का जीवन यापन करने वालों को मानव धर्म का संदेश दिया एवं नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने चिंतन एवं परामर्श के द्वारा राष्ट्र की अनेक समस्याओं का समाधान किया। आचार्य तुलसी द्वारा राजनीति में निखार लाने के प्रयास सराहनीय हैं।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा हम सब यात्री हैं। जीवन में अनेक यात्राएं करते हैं। बाहर देखना आसान है परन्तु अपने भीतर देखना कठिन है। जो अपने भीतर देखना जानता है वह अपनी सोई हुई शक्तियों को पहचान लेता है। आचार्य तुलसी ने भीतर देखने का ही संदेश दिया। अणुव्रत संजीवनी बूटी की तरह है। अनेक व्यक्तियों के अनुभव बताते हैं कि अणुव्रत के द्वारा जीवन बदल गया है।

वीरेन्द्र बेनीवाल ने कहा आचार्य तुलसी की प्रेरणा से ही मेरे स्वर्गीय पिताजी ने विधानसभा में पशु-पक्षियों की बली के विरूद्ध बिल पेश किया था, इसी कारण इस प्रकार की मंदिरों में चढने वाली बलियों पर रोक लग गई है।

पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री सुभाष महरिया ने आचार्य तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की एवं आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को, पुस्तकों को जन–जन के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि आचार्यश्री के संदेश को देश की आम जनता तक पहुंचाने में अपना पूर्ण योगदान दूंगा।

चुरू सांसद रामसिंह कस्वा ने आचार्य तुलसी के साथ अपने कस्बे एवं स्वयं के साथ जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत किया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ को चुरू पधारने की भी अर्ज की।

रतनगढ़ विधायक राजकुमार रिणवा ने आचार्य तुलसी के अवदानों को समाजोपयोगी बताया।

पूर्व विधायक ठाकुर मनोहरसिंह ने अपने क्षेत्र में आगंतुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल, मुनि मदनकुमार, साध्वी कमलश्री ने भावाभिव्यक्ति दी। मुनि तन्मयकुमार, मुनि जंबूकुमार, साध्वी समुदाय एवं कन्यामण्डल ने गीतों के द्वारा श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आचार्य तुलसी के संसारपक्षीय परिवार की तरफ से कुमारी प्रांजल खटेड़ ने विचार रखे। जैन विश्व भारती के उपमंत्री विजयसिंह चौरड़िया, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, जय तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष कमल दुगड़ ने आगंतुक अतिथियों का साहित्य के द्वारा सम्मान किया। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचनों की प्रत्येक महीने प्रकाशित होने वाली 'महाप्रज्ञ ने कहा' सीरीज का 36वां भाग पुस्तक की सम्पादिका मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने प्रथम प्रति विमोचन हेतु आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की। साथ ही मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने 'सुख का स्रोत कहां है?' की प्रथम प्रति भी आचार्यश्री को समर्पित की।

तृतीय दिवस

लाडनूं 22 अक्टूबर। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा आचार्य तुलसी धर्म पुरुष थे। उन्होंने जिस व्यापक दृष्टिकोण के साथ धर्म को समझा, वैसे समझने वाले बहुत कम धर्मगुरु हैं। उन्होंने व्यापक धर्म की अवधारणा प्रस्तुत की और जीवन को पवित्र बनाने हेतु धर्म में विश्वास जताया। उनके इसी व्यापक दृष्टिकोण ने विश्वमानस को प्रभावित किया। आचार्यश्री त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन जैन विश्व भारती सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए बोल रहे थे।

आचार्यवर ने आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के आयोजन के संदर्भ में कहा शताब्दी वर्ष मनाते समय सबका दृष्टिकोण व्यापक रहना चाहिए। आचार्य तुलसी समस्याओं का समाधान करने वाले महापुरुष थे। इसलिए उनकी शताब्दी भी वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान के सन्दर्भ में मनाई जानी चाहिए। उल्लेखनीय है कि 2013 में आचार्य तुलसी की जन्मशताब्दी वर्ष का आगाज होगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ की अनुमति से शताब्दी वर्ष के आयोजन का मुख्य केन्द्र लाडनूं रखने की घोषणा की एवं इसके आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी तेरापंथी महासभा के पास रहने की जानकारी दी। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाये जाने के लिए विस्तृत तैयारियों को जरूरी बताया।

मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा सदस्य शांतिलाल चपलोत ने कहा आचार्य तुलसी ने मानव जाति को ऐसे अवदान दिये जिनका उपयोग, जाति सम्प्रदाय एवं देश सीमा से परे रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति उपयोग कर सकता है और कर रहा है। इस अवसर पर मुनि कुमार श्रमण, मुनि हिमांशुकुमार, साध्वी शुभ्रयशा, साध्वी शशिप्रभा ने अपने विचार रखे। मंगलाचरण स्थानीय महिला मण्डल ने एवं संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

तेजकरण सुराणा अणुविभा के नए अध्यक्ष

राजसमंद, 16 अक्टूबर। अणुव्रत के रचनात्मक आयामों को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित करने वाली केन्द्रीय संस्था अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)' के आगामी दो वर्ष के कार्यकाल हेतु समाजसेवी तेजकरण सुराणा को अध्यक्ष चुना गया है। राजसमंद स्थित संस्था के मुख्यालय में आयोजित वार्षिक साधारण सभा में तेजकरण सुराणा का सर्वसम्मति से चयन किया गया। तेजकरण सुराणा गत अनेक वर्षों से अणुविभा से जुड़े हैं। मूलतः चुरू निवासी एवं दिल्ली प्रवासी सुराणा अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। वे राजस्थान सांस्कृतिक परिषद तथा राजस्थान विकास अध्ययन केन्द्र दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में काफी सक्रिय रहे हैं। अब तक उन्होंने करीब 75 सम्मेलनों, गोष्ठियों एवं सामाजिक समारोहों का सफल आयोजन किया है। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका, भीकमचन्द नखत, संचय जैन, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, सुरेश कावड़िया, डी.सी.जैन, बालमुकुन्द सनाढ्य सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने सुराणा को बधाई दी।

गांधीजी के रास्ते पर चलने वाले व्यक्तित्व हमारे आदर्श बनें

जयपुर, 24 सितंबर। गांधीजी ने भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि सिद्धांतों को जीवन में उतार कर विश्व के इतिहास में एक उदाहरण पेश किया था। उनके जन्मदिवस को 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। हमारे लिए यह बहुत गर्व की बात है। आज नई पीढ़ी उन आदर्शों को समझे तो वह अपने जीवन और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

ये विचार राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विद्याश्रम सभागार में कर्मयोगी मोहनभाई के जीवन के दशवें दशक में प्रवेश के अवसर पर आयोजित समारोह में व्यक्त किये। मुख्यमंत्री ने कहा कि मोहनभाई ने जीवन में अनेक कष्ट सहे, बाधाओं का सामना किया किन्तु उन्होंने सत्य का पथ नहीं छोड़ा, हमेशा अहिंसा और सत्याग्रह से विरोध और अन्याय का सामना किया। इनका सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने आज भागीरथी सेवा प्रन्यास द्वारा प्रवर्तित 'कस्तूरबा गांधी सेवा पुरस्कार' विमला बहुगुणा को प्रदान किया। श्री गहलोत ने विमला बहुगुणा को प्रशस्ति-पत्र व प्रतीक-चिह्न भेंट किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व राज्यपाल नवरंगलाल टिबरेवाल ने बहुगुणा को पुरस्कार स्वरूप 51000 रुपये राशि का चैक भेंट किया।

इस अवसर पर विमला बहुगुणा ने कहा कि उन्होंने विनोबा के साथ चौदह वर्षों तक पूरे देश में भूदान की अलख जगाई और जीवन भर अपने पति सुंदरलाल बहुगुणा के साथ चिपको आंदोलन में पर्वत क्षेत्रीय महिलाओं को साथ लेकर कार्य किया।

गांधीवादी कार्यकर्ता मोहनभाई ने कहा मुझे जीवन भर मेरे मित्रों और साथियों का स्नेह व सहयोग मिला और यही मेरी सफलता का राज है। उन्होंने मुख्यमंत्री गहलोत को एक कुशल प्रशासक व जन नेता बताते हुए जनता से उन्हें सहयोग करने की अपील की, जिससे राजस्थान को भ्रष्टाचार से मुक्त किया जा सके।

इस अवसर पर गांधीवादी, सर्वोदयी, अणुव्रत एवं तेरापंथ समाज की 25 संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मोहनभाई को शुभकामनाएं स्वरूप सम्मान फलक भेंट किया। अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. एस.एल. गांधी, डी. आर. मेहता, आयोजन संयोजक एवं समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष सवाई सिंह, संचय जैन व कल्पना जैन ने भी अपने विचार रखे। संयोजन प्रमोद घोड़ावत ने एवं आभार व्यक्त पंचशील जैन ने किया।

अभिनंदन निष्काम कर्मयोगी का

राजसमंद, 12 अक्टूबर। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद के संस्थापक अणुव्रत सेवी मोहनभाई का दशम दशक प्रवेश वेला में अणुविभा सभागार में राजसमंद की सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा भावभरा अभिनंदन किया गया। अभिनंदन समारोह की अध्यक्षता अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी ने की। समारोह के मुख्य अतिथि लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार नंद चतुर्वेदी थे। डॉ. महेन्द्र भानावत एवं टी.के. जैन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

गांधी सेवा सदन, अणुव्रत विश्व भारती, भिक्षु बोधि स्थल, तुलसी साधना शिखर, अणुव्रत समिति, आचार्यकुल राजसमंद तथा जैन एवं तेरापंथी सभा, राजस्थान साहित्यकार परिषद्, द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् कांकरोली द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए मुनि सुरेशकुमार हरनावां ने कहा जो प्राण-प्रण से जुड़ता है वह श्रेष्ठ कार्य करता है। मोहन भाई प्राणप्रण से जुड़ने वाले व्यक्ति का नाम है। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के सिपाही के रूप में कार्य किया है।

साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा मोहन भाई ने स्वयं आपदाओं को आमंत्रित किया और जीवनभर संघर्षरत रहे। अणुविभा का यह विशाल प्रांगण मोहन भाई का जीवित स्मारक है। अभिनंदन समारोह में मोहन भाई ने भाव विह्वल होते हुए कहा दुनिया कहती है कि यह कलयुग है पर मेरे लिए तो सतयुग है। गुरुजनों ने खूब दिया आशीर्वाद और लोगों ने खूब दिया सहयोग। देवेन्द्रजी मुझे पकड़कर यहां लाये और तुलसीजी आशीर्वाद देने यहां आये। मेरी कामना है कि राजसमंद ऐसी जगह बन जाये कि समूचा संसार यहां से प्रेरणा ले।

अभिनंदन समारोह को डॉ. महेन्द्र भानावत, टी.के. जैन, निर्मल एम. रांका, भीकमचंद नखत, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, गणपत धर्मावत, भंवरलाल वागरेचा, जीतमल कच्छारा, धर्मेश डांगी, कमर मेवाड़ी, फतहलाल गुर्जर अनोखा, सुरेश चन्द्र कावडिया, बालमुकुंद सनाढ्य ने संबोधित करते हुए मोहन भाई के दीर्घायु होने की कामना की।

अभिनंदन समारोह का प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ, जिसे बाल निकेतन की बालिकाओं ने स्वर दिया। गांधी सेवा सदन के नन्हें-मुन्नों ने मोहनभाई की अगवानी में रंगोली सजाई। गांधी सेवा सदन के मंत्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने मोहन भाई के जीवन वृत्त को प्रस्तुत करते हुए अभिनंदन समारोह का प्रभावी संयोजन किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह संपन्न

सुजानगढ़। अणुव्रत समिति सुजानगढ़ के तत्वावधान में मुनि विमलकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम उल्लासपूर्वक मनाया गया। ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनि विमलकुमार ने कहा हर सम्प्रदाय में करुणा व प्रेम का स्थान होता है। व्यक्ति को अहम् का त्याग कर साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देना चाहिए। अणुव्रत असाम्प्रदायिक आंदोलन है जो मनुष्यों को जोड़ने का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर मुनि अशोककुमार, मुनि मधुरकुमार, मुनि धन्यकुमार, हेमराज बैद, विमलादेवी लोढ़ा, शम्शुद्दीन स्नेही, कन्हैयालाल तूनवाल, लीलाधर शर्मा, बी.जी. शर्मा, सुरेन्द्र भार्गव ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार व्यक्त समिति के मंत्री विजयसिंह बोरड ने एवं संचालन संजय बोथरा ने किया।

● अणुव्रत प्रेरणा दिवस मुनि अशोककुमार के सान्निध्य में धापूदेवी सेठिया शिक्षा सदन में मनाया गया। स्कूल के बच्चों व अध्यापिकाओं को अणुव्रत आचार संहिता की विस्तार से जानकारी दी गयी। मुनिश्री ने इस अवसर पर बच्चों को कई तरह के प्रयोग कराए। इस अवसर पर विजयसिंह बोरड़, प्रचार मंत्री शम्शुद्दीन स्नेही, आसकरण दरोगा, सभा के मंत्री हेमराज बैद, भूपेन्द्र छाजेड़ उपस्थित थे। मुनिश्री द्वारा मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

● पर्यावरण शुद्धि दिवस का आयोजन सेठिया गर्ल्स कॉलेज में मुनि अशोकुमार के सान्निध्य में हुआ। अध्यक्षता प्राचार्या संतोष व्यास ने की। मुनि अशोककुमार ने कहा शुद्ध पर्यावरण स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुंचाया जाए यही इस दिवस का उद्देश्य है। संतों ने महाविद्यालय की छात्राओं को जीवन विज्ञान व योग के प्रयोग भी करवाए। अणुव्रत साहित्य का वितरण विजयसिंह बोरड़ ने किया। कार्यक्रम में प्राचार्या संतोष व्यास, संदीप डोसी, कन्हैयालाल तूनवाल, गणेश मण्डावरिया ने अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन हाजी शम्शुद्दीन स्नेही ने किया। कार्यक्रम में बी.जी. शर्मा, आसकरण दरोगा, हेमराज बैद, राजेन्द्र फूलफगर उपस्थित थे।

● नशामुक्ति दिवस का कार्यक्रम मुनि अशोककुमार के सान्निध्य में झंवर विद्यालय में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता मदनलाल दाधीच ने की। मुनि अशोककुमार ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा नशा नाश का मार्ग है अतः नशे की लत के आदि न बनें। इस अवसर पर मुनिश्री ने बच्चों को नशा नहीं करने का संकल्प भी करवाया। विद्यार्थियों को अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों का संकल्प भी करवाया गया। कार्यक्रम में विजयसिंह बोरड़, हाजी शम्शुद्दीन स्नेही, आसकरण दरोगा, जतनलाल बैद इत्यादि उपस्थित थे।

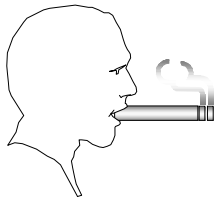

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

अणुव्रत दिवस की भव्य आयोजना

आसीन्द, 20 अक्टूबर। साध्वी राकेशकुमारी 'बायतू' के सान्निध्य में गुरुदेव तुलसी की 96वीं जन्म जयंती का आयोजन अणुव्रत दिवस के रूप में सभा भवन में आयोजित हुआ। समारोह के संचालक मदनलाल गोखरू ने मंचासीन अतिथियों का परिचय देते हुए आज के दिवस की रूपरेखा प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति आसीन्द के अध्यक्ष कल्याणमल गोखरू ने उपस्थित परिषद् का स्वागत करते हुए अणुव्रत दिवस की महत्ता एवं आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

साध्वी राकेशकुमारी ने अपने वक्तव्य में कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से करुणा और अहिंसा का दरिया बहाया। उन्होंने 'संयम ही जीवन है' का उपदेश देते हुए सम्प्रदाय की दीवारों को तोड़ने का काम किया। विश्व में एक नया आलोक फैलाया। सभाध्यक्ष सोहनलाल कांठेड़ ने समग्र समाज की ओर से आगंतुक महानुभावों का स्वागत कर अणुव्रत दिवस की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। साध्वी मलयविभा एवं साध्वी सुरभिप्रभा ने अणुव्रत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक रामलाल गुर्जर ने आचार्य तुलसी को एक प्रकाश दीप बताते हुए कहा यह दीप युगों-युगों तक रोशनी प्रदान करता रहेगा।

पूर्व विधायक हगामीलाल मेवाड़ा ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा अणुव्रत एक संजीवनी है, जिससे व्यक्ति अपने को महान बना सकता है। विशिष्ट अतिथि भीलवाड़ा डेयरी के अध्यक्ष छोगालाल गुर्जर, प्रदीप व्यास अध्यक्ष सहकारी समिति तथा सुभाष जैन अध्यक्ष भारत विकास परिषद ने अणुव्रत आंदोलन को नैतिकता का आंदोलन बताया। महिला मंडल द्वारा आचार्य तुलसी की अभ्यर्थना में समूह गीत प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर अनिल गोखरू, राजेन्द्र बड़ोला, पारस देवी बड़ोला, सुनीता देवी रांका, विशिष्ट अतिथि रतनदेवी चौरड़िया अध्यक्ष नगर पालिका ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर बच्चों को पारितोषिक भी दिया गया। सुरेश रांका तथा महावीर जैन का सराहनीय श्रम रहा। समारोह में दौलतगढ़, तिलोली, लाछुड़ा, कटार, शंभुगढ़, मोतीपुर, कीड़ीमाल, बराणा, रघुनाथपुरा आदि ग्रामों से आये व्यक्तियों ने साध्वी राकेशकुमारी के सान्निध्य में अणुव्रत नियमों का पालन करने के संकल्प लिए। आभार व्यक्त तेजमल रांका ने एवं संचालन मदनलाल गोखरू ने किया।

अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता

सूरत। अ.भा. अणुव्रत न्यास दिल्ली द्वारा प्रायोजित, सभा एवं अणुव्रत समिति सूरत द्वारा आयोजित अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता में कनिष्ठ विभाग में विकलांग शाला एवं वरिष्ठ विभाग में लोक भारती हाई स्कूल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में सभा भवन मैत्री हॉल में आयोजित प्रतियोगिता में गजरावा हाईस्कूल, विद्याभारती, जरीवाला, विकलांग शाला और लोक भारती हाई स्कूल सम्मिलित थे। इसमें एक स्पर्धा में विद्याभारती से अंकिता जैन और विकलांग स्कूल से हेतवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में कांतिभाई मेहता, विनोद बांठिया, मीठालाल भोगर, अंकेशभाई और रामविलास जैन की विशेष उपस्थिति रही। निर्णायक के रूप में पूजा मरोठी और संदीप नाहटा ने अपनी सेवाएं दी। आभार ज्ञापन पूनम गुजरानी ने किया। पुरस्कार वितरण अर्जुन मेड़तवाल ने एवं संयोजन अलका सांखला ने किया।

स्वस्थ समाज के निर्माण का सशक्त उपक्रम है अणुव्रत

कोलकाता, 21 अक्टूबर। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति एवं सभा के तत्वावधान में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 96 वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। शुभारंभ महिला मंडल कोलकाता की सदस्याओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी कनकश्री ने आचार्य तुलसी को शताब्दी पुरुष बताते हुए कहा 20 अक्टूबर 1914 में जन्मे आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के अंतिम दशक 23 जून 1997 तक मानवता का पथ-दर्शन करते रहे। उन्होंने अपने क्रांत चिंतन, मौलिक साहित्य, ओजस्वी प्रवचन एवं देशव्यापी पदयात्राओं द्वारा बीसवीं सदी को बेहद प्रभावित किया। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत मिशन का प्रवर्तन कर धार्मिक क्षेत्र में क्रांति का शंखनाद किया। अणुव्रत का उद्देश्य है जन-जन में संयम व आत्मानुशासन की चेतना जागे।

साध्वी मधुलता ने कहा गुरुदेव तुलसी की जन्म जयंती के दिन हम उन मूल्यों को आत्मसात करें, जिन मूल्यों को उन्होंने जीवन भर जीया था। संयम, सादगी, सद्विचार, सदाचार और श्रम निष्ठापूर्ण उनका जीवन हर अनुयायी और देशवासी को सदा प्रेरित करता रहेगा। कार्यक्रम में सूरत से समागत अणुव्रत प्रवक्ता अलका सांखला ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर करन सिंह नाहटा, बिनोद कुमार चोरड़िया, अणुव्रत समिति के सहमंत्री प्रदीप सिंघी, रतनलाल बैद, उमराव बैद सहित अनेक वक्ताओं ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों की चर्चा करते हुए अणुव्रत को स्वस्थ समाज के निर्माण का सशक्त उपक्रम बताया। संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

अणुव्रत परीक्षाओं का आयोजन

जालना, 16 सितंबर। जालना में महिला मंडल द्वारा पिछले 31 वर्षों से अणुव्रत परीक्षा का संचालन 'अणुव्रत सेवी' रतनीदेवी सेठिया करा रही हैं। अणुव्रत परीक्षा का आयोजन जालना के सात विद्यालयों में निरंतर सुचारु रूप से चल रहा है। सैकड़ों-सैकड़ों विद्यार्थी इस परीक्षा में भाग लेते हैं। परीक्षा के संचालन में विद्यालयों के मुख्याध्यापक के अलावा नियुक्त किये हुए शिक्षकों का भी सराहनीय सहयोग मिलता है। श्री. म. स्ना. जैन विद्यालय के मुख्याध्यापक अणुव्रत परीक्षा के विशेष सहयोगी कांतिलाल एस. कुंकुलोल साहब को राज्यस्तरीय आदर्श शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की अध्यक्ष रतनी देवी सेठिया ने कहा सम्मान व्यक्ति का नहीं उनके गुणों का होता है, उनके कार्यों का किया जाता है। हर किसी व्यक्ति को समाज में देश में राष्ट्र में सम्मान नहीं मिलता। कुछ एक व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से इस मुकाम तक पहुंच पाते हैं और अपनी अलग पहचान बना लेते हैं। अपनी मेहनत और लगन से निष्ठा के साथ कार्य करने वालों में कांतिलाल एस. कुंकुलोल पिछले 30 वर्षों से सहभागिता निभा रहे हैं।

कुंकुलोल ने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा अणुव्रत परीक्षा जैसी परीक्षाओं की देश में बहुत जरूरत है। बच्चों को चरित्रवान बनाने तथा संस्कारित करने के लिए बच्चों में बढ़ती अनुशासनहीनता और असहिष्णुता आज की विकट समस्या है। इसका समाधान अणुव्रत परीक्षाओं से ही मिल सकता है। अणुव्रत विज्ञ और विशारद में छोटे-छोटे उदाहरण द्वारा जो अमूल्य शिक्षा दी गई है वह बच्चों के जीवन में नैतिकता सदाचार एवं संयम जैसे गुणों का बीजारोपण होता है। इस अवसर पर महिला मंडल की अध्यक्षा कमलाबाई सेठिया, उर्मिला पिपाड़ा, रतनीदेवी सेठिया इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

मानवता के लिए संजीवनी है अणुव्रत

सरदारशहर, 20 अक्टूबर। आचार्य तुलसी के 96वें जन्म दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए शासन गौरव साध्वी राजीमति ने कहा आचार्य तुलसी का अनुशासन सर्वोत्तम था। उन्होंने स्वयं अनुशासन का जीवन जीया और अनुशासित जीवन जीना सिखाया। इसका प्रतीक है उनका यह नारा ''निज पर शासन - फिर अनुशासन।'' उनका जीवन प्रयोगशाला था। उनका दृष्टिकोण था संयम से जीवन बदलता है, विचार बदलते हैं।

साध्वीश्री ने आगे कहा आचार्य तुलसी ने कलात्मक जीवन जीया। उठना, बैठना, चलना और यहां तक कि रजोहरण भी कलात्मक ढंग से पकड़ते थे। निद्रा पर कंट्रोल था। उनका जीवन मानवता के लिए समर्पित था। उन्होंने जीवन को स्वस्थ बनाने के लिए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के प्रयोग प्रस्तुत किए।

साध्वी ललितप्रभा ने आचार्य तुलसी की जीवन विशेषताओं को उकेरते हुए कहा गुरुदेव तुलसी का जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अणुव्रत असाम्प्रदायिक धर्म का प्रतीक है। अपराध चेतना को बदलने का नुस्खा है। नैतिक चरित्र निर्माण का आंदोलन है। मूर्च्छित मानवता के लिए अणुव्रत संजीवनी है। इस अवसर पर प्रातः 8 बजे व्यसनमुक्ति रैली का विशाल आयोजन किया गया। इसमें अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। संयोजन सम्पतराम सुराणा ने किया।

चरित्र निर्माण का आंदोलन है अणुव्रत

छोटी खाटू। साध्वी मोहनकुमारी, साध्वी संकल्पश्री तथा साध्वी कल्पमाला के सान्निध्य में स्थानीय छोटी खाटू राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी संकल्पश्री ने बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा संस्कार निर्माण में अध्ययनरत बालिकाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बिखरते सामाजिक मूल्यों को एक पढ़ी-लिखी कन्या ही समेटकर यथास्थिति प्रदान कर सकती है। वर्तमान की बढ़ती भौतिकता की चकाचौंध ने मनुष्य के आचार, विचार एवं आहार को प्रदूषित किया है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रयोगों द्वारा इनसे बचा जा सकता है।

साध्वी कल्पमाला ने बालिकाओं को ''शिक्षा का सार हो अब सुन्दर हो आचरण'' मधुर गीतिका से प्रारंभ करते हुए कहा हमारे छात्र, अध्यापक, अभिभावक के सद्संस्कारों पर सुसंस्कारी बनते हैं। अगर अभिभावकगण का व्यवहार सुंदर है तो बच्चों का आचरण अपने आप सुंदर होगा। साध्वीश्री ने नैतिकता, अनुशासन पर भी चर्चा की।

विद्यालय की प्राचार्या संतोष शर्मा ने साध्वियों के प्रति आभार प्रकट किया। प्राचार्या महोदया ने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान तथा प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों को प्रारंभ करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर प्रेमसिंह चौधरी ने समणी परिवार का परिचय देते हुए कार्यक्रम की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

अहिंसा का प्रशिक्षण आवश्यक

लाडनूं। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शान्ति विभाग की ओर से त्रिदिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 22-24 सितंबर 09 हुआ।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने युवा शक्ति को संबोधित करते हुए कहा भ्रष्टाचार बढ़ने की चिंता सब कर रहे हैं। मगर भ्रष्टाचार की जड़ का पता करने की आवश्यकता की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। भ्रष्टाचार की जड़ शिक्षा जगत है। जब तक बच्चों की शिक्षा के साथ अहिंसा और नैतिकता के संस्कार नहीं दिये जायेंगे, तब तक भ्रष्टाचार को समाप्त करने के सभी प्रयास बेमानी होंगे। देश का वर्तमान इकोनॉमिक सिस्टम भी भ्रष्टाचार की घोषणा करता है। इसमें केवल भौतिकता को प्रमुखता दी जा रही है। नैतिक मूल्यों के अभाव में यह सिस्टम भ्रष्टाचार को रोकने में सक्षम नहीं है। अहिंसा के संस्कार पुष्ट करके आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक व वैश्विक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। आज शिक्षण संस्थाओं में भी विद्यार्थियों द्वारा हिंसक कृत्य किये जा रहे हैं, जबकि प्राचीनकाल में ऐसा नहीं होता था। आज मानसिक तनाव ज्यादा है। तनाव के कारण बीमारियां बढ़ रहीं है। इसका समाधान अहिंसा से ही संभव है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा मनुष्य का जीवन पशु-पक्षियों से भिन्न है। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है, उसमें विवेक है। अतः उसमें सोचने एवं कार्य करने की क्षमता अधिक है। यह क्षमता यदि युवा वर्ग सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्य में लगाएं तो निश्चित रूप से समाज एवं राष्ट्र का विकास होगा।

कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने समारोह का शुभारंभ करते हुए कहा युवा शक्ति सदैव सृजनात्मक होनी चाहिये, ताकि एक नये और शिक्षित व मजबूत समाज का निर्माण हो सके। यदि व्यक्ति के देखने और सोचने का नजरिया सकारात्मक हो तो निश्चित रूप से नये दृष्टिकोण का निर्माण होगा। प्रेम से ही भय से मुक्ति मिल सकती है।

प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा आज ऐसे व्यक्तित्व के निर्माण की आवश्यकता है जो समस्याओं का समाधान अहिंसक तरीकों से कर सके। शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमताओं के साथ भावनात्मक विकास होने से ही समेकित व्यक्तित्व का विकास संभव होगा।

डॉ. प्रतिभा जैन ने कहा भारतीय युवाओं के पास अनेक वरदान हैं। उनमें उत्साह, कर्त्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी है तो दूसरी तरफ युवा वर्ग के पास अनेक अभिशाप भी हैं जिससे युवा वर्ग दिशाहीन हो जाता है।

प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने कहा व्यक्ति को सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। जो व्यक्ति संस्कारवान होता है वह आसानी से आगे बढ़ जाता है। व्यक्तित्व में बदलाव हेतु महापुरुषों का मार्गदर्शन आवश्यक है।

डॉ. अनिलधर ने कहा हमारा परिवार, समाज व देश के प्रति जो दायित्व है, उसे पूरा करना प्रत्येक युवावर्ग की जिम्मेदारी है। अगर युवा अपनी भीतरी शक्ति को पहचान लें तो निश्चित रूप से मानवीय शक्ति का सृजनात्मक उपयोग होगा।

इस त्रिदिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में प्रो. बच्छराज दूगड़, डॉ. अनिलधर, डॉ. भंवरसिंह, डॉ. जुगल दाधीच, डॉ. संजीव गुप्ता एवं डॉ. प्रद्युम्नसिंह ने अपनी सेवाएं दी।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

श्रीगंगानगर। मुनि प्रशांतकुमार के सान्निध्य में युवक परिषद् श्रीगंगानगर द्वारा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन सभा भवन में हुआ। शिविर में सभी धर्मों के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

मुनि प्रशांतकुमार ने शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा प्रेक्षाध्यान एक सर्वांगीण योग पद्धति है। जिसमें आसन, प्राणायाम के अंतर्गत ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि के अनेक प्रयोग करवाये जाते हैं। विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बीमारियों के लिए अलग-अलग प्रयोग निर्धारित हैं। आज योग केवल आसन प्राणायाम तक सीमित कर दिया गया है। जबकि प्रेक्षाध्यान पद्धति में ध्यान, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, संकल्प के प्रयोग कराये जाते हैं। मानसिक तनाव से छुटकारा पाना ही प्रेक्षाध्यान का लक्ष्य नहीं है, इसमें चित्त की शुद्धि को विशेष बल दिया गया है।

मुनि कुमुदकुमार ने कहा प्रेक्षाध्यान एक वैज्ञानिक ध्यान पद्धति है। इसमें अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों के बाद प्रयोग निर्धारित किए गए हैं। अनेक रोगियों पर प्रेक्षाध्यान के प्रयोग किए गए एवं प्रयोग के बाद वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा उनके स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। सही लक्ष्य के साथ एकाग्रता पूर्वक प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का अभ्यास करने से जीवन में सर्वांगीण परिवर्तन दिखाई देता है। मुनि प्रशांतकुमार ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक राजेन्द्र आंचलिया ने प्रेक्षाध्यान की प्रारंभिक जानकारी दी। आभार व्यक्त योग प्रशिक्षक रवि परुथी ने किया।

अणुव्रत लेखिका सुषमा जैन को मिला शहीद उधम सिंह क्रान्तिकारी सम्मान–2009

सहारनपुर। शहीद उधम सिंह कम्बोज स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा लेखिका एवं वरिष्ठ साहित्यकार सुषमा जैन को शहीद उधम सिंह क्रान्तिकारी सम्मान-2009 से विभूषित किया गया है। यह सम्मान उन्हें ट्रस्ट द्वारा शहीद उधम सिंह के 69 वें बलिदान दिवस पर शालीमार बाग नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रसिद्ध आर्य-सन्यासी स्वामी अग्निवेश, साहित्यकार डॉ. महीप सिंह तथा दिल्ली सरकार के जनप्रतिनिधियों द्वारा सामूहिक रूप से माल्यार्पण कर, शाल, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर दिया गया। इस अवसर पर अनेक बुद्धिजीवी, पत्रकार एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उन्होंने सुषमा जैन के साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक योगदान तथा ओजस्वी आलेखों की प्रशंसा की। इससे पूर्व सुषमा जैन को कलम का सिपाही, राजश्री, डॉ. भीमराव अम्बेडकर फैलोशिप-1999, क्रान्तिश्री, विद्याश्री, पर्यावरण-विद्, महिला रत्न, हिन्दी साहित्य रत्न आदि अनेक उपाधियां एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि सुषमा जैन अणुव्रत पाक्षिक में लेख लिखती रहती हैं। अणुव्रत परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

'दि फैमिली एंड नेशन'

कोयम्बटूर। अणुव्रत आंदोलन ने सम्पूर्ण देश में नैतिक मूल्यों एवं मानवीय एकता को बनाए रखने और धर्म को सम्प्रदायवाद के कटघरे से निकालकर मानव धर्म की प्रतिष्ठापना की है। इस संदर्भ में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम ने मिलकर संयुक्त पुस्तक ''दि फैमिली एंड नेशन' की रचना की। जिसे आज के परिप्रेक्ष्य में लोगों द्वारा बहुत पसंद किया जा रहा है। दक्षिण भारत, कोयम्बटूर में आयोजित एक कार्यक्रम में भारत के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं भारत के विधि आयोग के चेयरमैन न्यायमूर्ति डॉ. ए.आर. लक्ष्मणन् को कोयम्बटूर के नरेन्द्र एम. रांका ने यह चर्चित पुस्तक भेंट की।

नरेन्द्र एम. रांका ने इसके अलावा देशभर के लगभग 50 व्यक्तियों को भी यह पुस्तक भेंट की। जिनमें मुख्यतः राजनेता, मंत्री, विश्वविद्यालयों के वाइस-चांसलर, प्रोफेसर, डॉक्टर, लेखक, सरकारी अधिकारी एवं समाजसेवक हैं। भारत सरकार में विदेश राज्यमंत्री शशि शरूर को यह पुस्तक दी गयी। उन्होंने मुक्त कंठ से पुस्तक की प्रशंसा की।

सर्वांगीण विकास का साधन है जीवन विज्ञान

अहमदाबाद। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री ने कहा वर्तमान युग में शिक्षा का विस्तार हुआ है, लेकिन विद्यार्थी का एकांगी विकास होता है। उसके शारीरिक और बौद्धिक विकास के लिए पाठ्यक्रम है किंतु उसके मानसिक और विशेष रूप से भावनात्मक विकास पर ध्यान बहुत कम दिया जाता है। लेकिन जीवन विज्ञान के द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

साध्वी डॉ. सुधाप्रभा ने जीवन विज्ञान पर महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने स्वागत भाषण करते हुए जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। इस अवसर पर लगभग 700 विद्यार्थियों ने अणुव्रत विद्यार्थी नियम स्वीकार किए।

गुजराज राज्य अणुव्रत समिति के कार्यकर्ता जवेरीलाल संकलेचा, अशोक दूगड़ द्वारा विद्यार्थी अणुव्रत नियम की तस्वीर विद्यालय में भेंट की गयी। संयोजन समिति के कोषाध्यक्ष ने किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

बढ़ती हिंसा को रोकने का माध्यम है अणुव्रत

देवगढ़। साध्वी शांताकुमारी ने अहिंसा दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए कहा वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र कारगर सिद्ध हो सकते हैं। अपेक्षा है व्यक्ति के भीतर संवेदनशीलता व सहिष्णुता का भाव आये, जिससे जीवन में नई चेतना का विकास होगा।

साध्वी चन्द्रावती ने अहिंसा दिवस की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। राजेन्द्र सेठिया ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। कार्यक्रम में भंवरलाल पगारिया एवं विशेष अतिथि रतनलाल छाजेड़, राकेश पगारिया की प्रमुख उपस्थिति रही। शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। रात्रि में प्रतियोगिता रखी गयी। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

शिक्षकों द्वारा समाज का कायाकल्प संभव

श्रीडूंगरगढ़। मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ के तत्वावधान में शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यायक मंगलाराम गोदारा ने भाग लिया। मुनि राकेशकुमार ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा आज का समाज अनैतिकता, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता की बीमारी से पीड़ित हैं। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से स्वभाव में बदलाव लाया जा सकता है। विद्यालय सरस्वती का मंदिर होता है। उसका वातावरण नशामुक्त व पवित्र होना चाहिये। शिक्षकों के चरित्र से विद्यार्थी बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। उनमें आत्म संयम और संकल्प बल की आवश्यकता है।

विधायक मंगलाराम गोदारा ने कहा ''विद्यार्थियों में असीम शक्ति विद्यमान है। नई पीढ़ी की शक्ति को रचनात्मक दिशा में नियोजित करने के लिए धर्म गुरुओं का मार्गदर्शन जरूरी है। इस अवसर पर मुनि दीपकुमार, महाराणा प्रताप विद्यालय के प्राचार्य विजयराज भोजक, व्याख्याता लीलाधर शर्मा, सत्यनारायण स्वामी ने जीवन विज्ञान पर प्रकाश डाला।

नैतिक क्रान्ति के पुरोधा आचार्य तुलसी

भीलवाड़ा, 23 अक्टूबर। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 96वां जन्म दिवस 'अणुव्रत दिवस' के रुप में साध्वी भीखांजी एवं साध्वी प्रमिलाकुमारी के सान्निध्य में सभा भवन में मनाया गया। साध्वी भीखांजी ने आचार्य तुलसी के जीवन को बहु-आयामी जीवन बताते हुए कहा आचार्य तुलसी द्वारा समाज एवं राष्ट्र को अणुव्रत के रूप में महान अवदान दिया। समाज में बढ़ रही अनैतिकता को रोकने के लिए अणुव्रत आन्दोलन वैचारिक क्रान्ति का काम कर रहा है।

मुख्य अतिथि रामपाल शर्मा अध्यक्ष 'दि सैन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. भीलवाडा ने आचार्य तुलसी के सिद्धान्तों को जीवन में उतारने पर जोर दिया।

नगर परिषद् के सभापति ओम नरालीवाल ने अणुव्रत की आचार सहिता को व्यापक रुप से प्रचार प्रसार करने की बात कही।

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल गांधी ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए अणुव्रत की पृष्ठ भूमि एवं भविष्य की योजना पर विचार रखे। विशिष्ट अतिथि मदनलाल श्रोत्रिय, मदनलाल कावंडिया, नवीन बागरेचा एवं सम्पत चौरडिया ने विचार रखे।

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने केन्द्र के निर्देशानुसार अणुव्रती बनों अभियान की घोषण भीलवाडा से करने की घोषण की। प्रारभिंक तौर पर 83 व्यक्तियों नें अणुव्रत की आचार संहिता स्वीकार की। साध्वी पुण्यप्रभा ने अणुव्रत को लौकिक धर्म बताया। साध्वी प्रमिलाकुमारी ने अणुव्रत दिवस की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए अणुव्रतों के संकल्प जीवन में उतारने की बात कही। विशिष्ट कार्यकर्ता सम्मान प्रेम सिंह तलेसरा एवं जसराज चौरडिया को दिया गया। नाट्य मचंन के लिए अणुव्रत समिति भीलवाड़ा द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। विशिष्ठ अतिथि मोना शर्मा अध्यक्षा भीलवाडा सहकारी उपभोक्ता सेल भंडार थी। पुष्पा पामेचा, मंजु नोलखा, एवं मुकेश रांका ने गतिकाओं की प्रस्तुती दी समारोह का सफल संचालन युवक परिषद के उपाध्यक्ष रजनीश नौलखा ने किया। आभार ज्ञापन प्रादेशिक अणव्रत समिति के महामंत्री मनोहर लाल बापना ने किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अणुव्रत आंदोलन का 60वां वार्षिक अधिवेशन विगत 2,3,4 अक्टूबर को लाडनूं में सम्पन्न हुआ। अणुव्रत महासमिति की साधारण सभा में एक स्वर में मुझे आगामी दो वर्षों के लिए अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा गया है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के मंगल आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में हम सब मिलकर अणुव्रत मिशन को जन-जन में प्रभावित करेंगे।

देश की आजादी के साथ कई आंदोलनों का उद्‌भव हुआ था लेकिन वे काल के प्रभाव में बह गये। अणुव्रत आंदोलन की नींव गहरी है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का श्रम इसके मूल में है। अणुव्रत आंदोलन अपनी गति से विगत 60 वर्षों से देश में मानवीयता, नैतिकता, प्रामाणिकता और चरित्र उत्थान के लिए प्रयत्नशील है। हजारों-हजार लोगों ने अणुव्रत को समझा है, जीवन में उतारा है और आज भी इसकी आवश्यकता है।

आप विगत कई वर्षों से अणुव्रत आंदोलन से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के मन में काफी तड़प है। वे चाहते हैं कि देश में हजारों लोग नैतिक, चारित्रिक व प्रामाणिक बनकर देश को सुदृढ़ बनायें।

देश में नशा एक भयंकर अभिशाप बन गया है। चाहे विद्यार्थी हो, युवा हो, महिला हो। घर-घर में नशा छा गया है। नशामुक्ति के लिए हम निरंतर प्रयत्नशील रहें।

अणुव्रत प्रचार-प्रसार के लिए हमें काफी श्रम करना है। इस दृष्टि से

- हम हर माह 30 लोगों से सम्पर्क करें और उन्हें अणुव्रत आंदोलन की पाठमाला से अवगत करायें।
- हर बड़े क्षेत्र में अणुव्रत समिति की स्थापना करें।
- हम अणुव्रत पत्रिका के दस त्रैमासिक सदस्य बनाने का प्रयत्न करें।
- निकटस्थ विद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं में अणुव्रत पत्रिका निःशुल्क भिजवाने का प्रयत्न करें।
- बड़े क्षेत्रों में अणुव्रत पार्क, अणुव्रत मार्ग, अणुव्रत द्वार का निर्माण कर एक स्थायी पहचान बनायें।
- विद्यालयों में जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम प्रस्तुत करावें।
- आचार्य महाप्रज्ञ की लेखनी से निःसृत तुलसी विचार दर्शन पुस्तक का स्वाध्याय करें, ताकि अणुव्रत दर्शन एवं पूरी विचारधारा का संपूर्ण ज्ञान हो सके।

आपके कार्यों में उत्साह है, आपके मन में अणुव्रत के प्रति लगन है। हमें इस कार्य को तीव्रगति से आगे बढ़ाना है।

■ निर्मल एम. रांका